''लौंजाइनस के उदात्त तत्व सिद्धान्त के आधार पर निराला काव्य का अध्ययन''

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी0 फिल्0 उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध
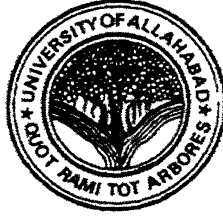
निर्देशक–

डॉ० किशोरी लाल
(पूर्व प्राध्यापक)
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

शोध कर्ता–

प्रवेश कुमार सिंह

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2002

घोषणा–पत्र

मै घोषणा करता हूँ कि मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध 'लौजाइनस के उदात्त–तत्व सिद्धान्त के आधार पर निराला काव्य का अध्ययन' विषय पर किया गया है। यह शोध मेरे स्वय के प्रयासो का प्रतिफल है।

इस शोध–कार्य को मैने डॉ० किशोरीलाल जी के निर्देशन मे पूर्ण किया है।

प्रवेश कुमार सिंह

(प्रवेश कुमार सिह)

डॉ0 किशोरी लाल

(पूर्व–प्राध्यापक)

हिन्दी–विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद
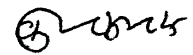
प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रवेश कुमार सिह ने 'लौजाइनस के उदात्त–तत्व सिद्धान्त के आधार पर निराला काव्य का अध्ययन' विषय पर यह शोध–प्रबन्ध मेरे निर्देशन मे डी0 फिल्0 उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

इस शोध–प्रबन्ध की विषय वस्तु पूर्णत मौलिक एव शोध–परक है। अत मै सस्तुति करता हूँ कि इस शोध–प्रबन्ध को परीक्षाणार्थ प्रेषित किया जाय।

दि0

निर्देशक

(डॉ0 किशोरी लाल)

भूमिका

आधुनिक हिन्दी कविता मे सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जीवन–सस्कृति और रचना–कर्म की व्यापक और गहन समझ के साथ तुलसी के रूप मे एक बार पुन 'मै ही बसन्त का अग्रदूत' कहते हुए जब सामने आते है तब वर्जन के सभी वज्र–द्वार तोडते दिखाई देते है। काव्य–क्षेत्र मे जो पहल छायावाद मे प्रसाद और पन्त ने की थी उसकी सर्वाधिक समर्थ सर्जनात्मक निष्पत्ति निराला के रचनाकर्म मे हुई। कविता के पूरे रीतिवाद को इस कवि ने चुनौती देकर ध्वस्त किया और काव्य–वस्तु से लेकर काव्यालयो तक हिन्दी कविता को एक नवीन सृजन–भूमि प्रदान की ।

निराला के काव्य–सृजन को लेकर जो सबसे बडा सवाल शोधकर्ता को बार–बार मथता रहा है, वह 'मातृभूमि', 'जूही की कली' से लेकर 'सान्ध्यकाकली' तक की उनकी सृजन–यात्रा मे उतार न आना रहा है। किस शक्ति से वे निन्तर उत्कर्ष, विवेक व्यस्कता, काव्य के हर तरह के रीतिवाद से विद्रोह, और विचार धाराओ की पराधीनता से मुक्ति को सम्हालकर योगी की तरह उर्ध्व–साधना करते रहे। ''राम की शक्ति पूजा' के राम वे स्वय कैसे बन गये, 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' का अर्थ उनके राम से ज्यादा उन पर कैसे लागू को गया। यही वे कुछ मूल प्रश्न है। जिन्होने शोधकर्ता को निराला की ओर आकर्षित किया। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध मे निराला की काव्य–सर्जना को पाश्चात्य काव्यशास्त्री लौजाइनस के उदात्त–सिद्धान्त के आधार पर साधने का प्रयास किया गया है, जो सर्वथा मौलिक है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को उपसहार सहित कुल चार अध्यायो मे बॉटा गया है। प्रथम अध्याय मे उदात्त–प्रकृति और पाश्चात्य विद्वानो के मतो विशेषकर लौजाइनस का आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है। लौजाइनस के पूर्व कवि

का मुख्य कर्म पाठक या श्रोता को आनन्द तथा शिक्षा प्रदान करना, तथा गद्यलेखक या वक्ता का मुख्य–कर्म अनुनयन समझा जाता था। लौजाइनस ने इस सूत्र मे कुछ कमी महसूस करते हुए निर्णायक रूप से यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि काव्य और साहित्य का परम् उद्देश्य चर्मोल्लास प्रदान करना है, पाठक या श्रोता को वेद्यान्तर शून्य बनाना है। दूसरे अध्याय मे कवि निराला की काव्य–सर्जना का सर्जनात्मक विकास उनके प्रकाशन वर्ष के क्रम के अनुसार दिखाया गया है। अगले अध्याय मे निराला काव्य को लौजाइनस के उदात्त सिद्धान्त के पॉचो आयामो पर साधने का प्रयास किया गया है। यह आवश्यक नही है कि शोध–कर्त्ता ने पूरे–के–पूरे निराला काव्य को लौजाइनस के उदात्त सिद्धान्त के पॉचो आयामो पर साथ ही लिया हो, यद्यपि कोशिश यही रही है। इस शोध–प्रबन्ध के चौथे अध्याय को उपसहार शीर्षक दिया गया है जिसमे पूरे शोध प्रबन्ध का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के विषय चयन से लेकर इसके पूरा होने तक, इस शोध–प्रबन्ध के निर्देशक और मेरे गुरू डॉ0 किशोरी लाल जी का अनवरत सहयोग मुझे मिलता रहा है। इसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करना औपचारिक सा लग रहा है, क्योकि बिना उनके सहयोग पूर्ण व्यवहार के इस शोध–प्रबन्ध का पूरा होना सम्भव ही नही था। साथ ही मै अपने विभाग के उन प्राध्यापको का भी आभारी हूँ जिनका जाने–अनजाने सहयोग मुझे समय–समय पर मिलता रहा है विशेष रूप से प्रो0 सत्यप्रकाश मिश्र एव प्रो0 राजेन्द्र कुमार का। अपने मित्रो तीर्थराज एव उनकी पत्नी श्रीमती शालिनी, मनोज, राजेश, राजीव, आनन्द, अशोक, घनश्याम, सुबोध, उपेन्द्र एवं सुश्री हेमलता के प्रति भी मै आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन लोगो का प्रोत्साहन इस शोधप्रबन्ध के पूरा होने तक बराबर मिलता रहा है। साथ ही साथ अपने

पडोसन डॉ0 निशा श्रीवास्तव का भी आभारी हूँ जिनके रोज–रोज के तकाजे ने इस शोध–प्रबन्ध के जल्दी पूरा होने मे कही न कही सहयोगी जरूर रहा है।

अपनी ममतामयी मॉ श्री मती मोहरमनि सिह का वात्सल्य युक्त स्नेहिल प्यार हमारे शोध–कार्य मे प्रेरणा–स्रोत का कार्य किया है। अपने अग्रज सर्व श्री शिवपूजन सिह, शत्रुघ्न सिह एव प्रमोद सिह एव तीनो भाभियो के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना महज औपाचारिकता होगी, जिसके लिए मेरा अर्तमन् गवाही नही दे रहा है। मेरे पिता स्व0 श्री रामधारी सिह के असामयिक निधन के बाद मेरे अग्रज भाइयो ने न सिर्फ मुझे पिता–तुल्यसरक्षण दिया अपितु उनके द्वारा दिया गया प्रोत्साहन और प्रयाग के इस लम्बे प्रवास के दौरान अनवरत दी गयी आर्थिक सुरक्षा ने मुझे मानसिक रूप से तनाव मुक्त रखा, जिसके कारण ही यह शोध–प्रबन्ध पूरा हो सका। परिवार के अन्य सदस्यो के साथ–साथ आभारी हूँ अपने अग्रज श्री शत्रुघ्न सिह के समस्त सहकर्मियो का भी जिनका प्रोत्साहन मुझे बराबर मिलता रहा। मै अपनी जीवन–सगिनी श्री मती अरूणिमा सिह एव उनके पितृ–गृह के सभी जनो के प्रति विशेष आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिन्होने न केवल इस शोध–प्रबन्ध को पूरा करने के लिए निरन्तर प्रोत्साहित किया अपितु मुझे कई पारिवारिक जिम्मेदारियो से भी मुक्त रखा।

मै राजेन्द्रा कम्प्युटर सेन्टर के 'समीर' का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग–पूर्ण व्यवहार ने इस शोध–प्रबन्ध को तैयार करने मे काफी मदद की है।

इस शोध–प्रबन्ध के लिए अध्ययन सामग्री मैने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय और हिन्दी साहित्य सम्मेलन एव इलाहाबाद सग्रहालय से भी प्राप्त की है। इसलिए मै इन सस्थाओ के कर्मचारियों को धन्यवाद देना चाहूँगा। बस इतना ही।

दिनाक 15 8.2002 प्रवेश कुमार सिह

विषय–वस्तु

अध्याय - 1

''उदात्त प्रकृति और पाश्चात्य विद्वानों के मतों-विशेषकर लोंजाइनस का आलोचनात्मक परीक्षण''

'उदात्त का स्वरूप'

उदात्त शब्द 'दा' धातु से 'उत्' एव 'आ' उपसर्ग तथा 'त्त' प्रत्यय के योग से बना है। 'दा' दाने अर्थात 'दा' धातु दान अथवा देने के अर्थ मे प्रयुक्त होती है। 'उत्' उपसर्ग का अर्थ ऊपर की ओर जाना या ऊपर की ओर उठना है 'आ' उपसर्ग 'चारो ओर से' या समुच्चय रूप से के अर्थ मे प्रयुक्त होती है। 'त्त' प्रत्यय 'भाव' या 'होने' अर्थ मे है। अर्थात् उदात्त का व्युत्पत्ति जनित अर्थ हुआ–ऐसा दान (देने वाला) जो समुच्चय रूप से ऊपर की ओर उठाता है। या सभी ओर से उत्कर्षण करता है।[1]

कोष ग्रन्थो के अनुसार 'उदात्त' का सामान्य अर्थ दयालु, त्यागी, दाता हृदय को स्पर्श करने वाला, उदार उत्तम, श्रेष्ठ, सशक्त एव समर्थ आदि है। करुना, निधान एव अनुग्रही आदि भी इसके पर्याय है।[2] उदात्त का अग्रेजी पर्याय 'सब्लाइम' है जिसका अर्थ है–

(क)[क] मानवीय किया–कलाप एव चिन्तन आदि के श्रेण्ठतम् क्षेत्रो से सम्बद्ध विचार सत्य एव विषय ।

(ख)[ख] व्यक्ति ऐसा हो जो अपने स्वभाव, चरित्र, उच्च कुल, प्रजा एव आध्यात्मिक वैशिष्ट्य के दूसरो से बहुत ऊँचे स्थित हो।

(ग)[ग] प्रकृति एव कला के क्षेत्र की ऐसी वस्तुए जो अपनी महत्ता अबाध शक्ति एव व्यापक आदि के कारण मन को अविभूत करती हो एव संभ्रम करती

---

1 डॉ0 प्रेम सागर के मतानुसार, 'उदात्त भावना' एक विश्लेषण पृष्ठ–(1)

2 वृहत् पर्यायवाची कोष, पृष्ठ ज– (22)।

क मानक हिन्दी कोश, पहला खण्ड – पृष्ठ – 345
ख वाचस्प्त्यम् द्वितीय भाग – पृष्ठ – 1151–62
ग शब्द–कत्यद्रुम, प्रथम भाग पृष्ट 237।

हो[1]

वास्तव मे उदात्त का सबध अखिल मानवीय क्रिया–कलाप आचरण चिन्तन भाव तथा प्रकृति के ऐसे रूपो से है जो अपनी लोकोत्तरता मे मन को अभिभूत करती हो और उत्कर्षित करती हो।

उदात्त के सबध मे जिस पाश्चात्य विद्वान का नाम सहज ही विद्वानो को अपनी तरफ आकर्षित करता है वह नाम है ''लौजाइनस''। और उसके नाम से जो ग्रन्थ सम्बद्ध और प्रसिद्ध है वह है 'पेरिहुप्सुस'। शताब्दियो की उपेक्षा और विस्मृति के बाद 'पेरिहुप्सुस' 1954 ई0 मे प्रकाशित हुआ जिसका श्रेय 'रोबेरतेल्लो' नामक एक इतावली विद्वान को है। 'पेरिहुप्सुस' मूल रूप से यूनानी मे लिखी गयी है जिसका अग्रेजी अनुवाद 'सब्लाइम' के नाम से जाना जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'उदात्त' है।

'पेरिहुप्सुस' काव्य निरूपक ग्रन्थ नही है, यह पत्र के रूप मे' 'कोस्तुमिउस तेरेन्तियानुस' नामक एक रोमी युवक को सम्बोधित है जो लौजाइनस का मित्र या शिष्य रहा होगा। पत्र की भाषा यूनानी (ग्रीक) है।

लौजाइनस के पहले जिस व्यक्ति ने 'उदात्त' का निरूपण किया था उस व्यक्ति का नाम 'केकिलियुस' था, किन्तु इसमे लौजाइनस को अनेक त्रुटियॉ दिखायी पडी ।

(1) विषय की परिभाषा का अभाव।

(2) उन पद्धतियो के विवेचन का अभाव जिनकी सहायता से कोई अपनी शक्ति विकसित कर उदात्त सी ऊॅचाई तक पहॅुच सकता है।

(3) भाव जैसे प्रमुख तत्व के निरूपण का अभाव।

(4) उदाहरणो का अनापेक्षित बाहुल्य।

---

1 दि आक्सफोर्ड इग्लिश डिक्सनरी, वा दस पृष्ठ 31–32।

केकिलिउस की इस कृति पर लौजाइनस ने पहले भी कभी तेरेन्तियानुस के साथ विचार–विमर्श किया था, उसी को विशद् रूप देते हुए, लिपिबद्ध करते हुए और केकेलिउस की त्रुटियो का यथासभव निराकरण करते हुए लौजाइनस ने यह रचना की।

'पेरिहुप्सुस' लगभग 60 पृष्ठो की लघुकाय कृति है, जिसमे छोटे बडे (44) अध्याय है। अध्यायो का आकार बहुत ही असमान है। कुल अध्याय दो–तीन पृष्ठो के है तो कुछ केवल सात–आठ पक्तियो के । इसका कारण यह भी है कि कई अध्यायो के अश खण्डित है। पूरी पुस्तक का प्राय एक तिहाई भाग लुप्त है। मनुष्यो की तरह कृतियो के भी भाग्य सोते–जागते रहते है। इसके अगणित उदाहरणो मे 'पेरिहुप्सुस' भी है। काव्य–शास्त्रीय इतिहास का निश्चय ही यह बहुत बडा सौभाग्य है कि 'पेरिहुप्सुस' जैसी महत्वपूर्ण कृति खण्डित रूप मे ही सही प्रकाश मे आयी। विद्वानो ने एक स्वर मे इस कृति और कृतिकार की प्रशसा की है।

अध्यायानुसार 'पेरिहुप्सुस' की विषय–सूची इस–प्रकार है–

(1) अध्याय (1) से 7 भूमिका–ग्रन्थ का प्रयोजन, उदात्त की परिभाषा, कतिपय दोषो का विवेचन आदि।

(2) अध्याय 8 से 15 उदात्त के पॉच स्रोतो का निर्देश उनके विचार की गरिमा तथा भाव की प्रबलता का निरूपण।

(3) अध्याय 16 से 29 अलकारो का निरूपण।

(4) अध्याय 30 से 38 शब्द, रूपक, बिम्ब आदि का निरूपण।

(5) अध्याय 39 से 40 रचना की भव्यता का निरूपण ।

(6) अध्याय 41 से 43 दृष्टिभेद मे उदात्त विरोधी कुछ अन्य दोषो की चर्चा।

(7) अध्याय 44 उपसहार–यूनान के नैतिक– साहित्यिक ह्रास के कारणो का सधान ।

लौजाइनस से पूर्व कवि का मुख्य कर्म पाठक, स्रोता को आनन्द तथा शिक्षा प्रदान करना, गद्य लेखक या वक्ता का मुख्य–कर्म अनुनयन समझा जाता था। यदि होमर काव्य की सफलता श्रोताओ को मुग्ध करने मे मानता था, तो एरिस्टोफेनिस कवि का कर्तव्य पाठको को सुधारना मानता था। इसी प्रकार वक्ता या RHETOICIAN का गुण समझा जाता था– सतुलित भाषा, सुव्यवस्थित तर्क द्वारा श्रोता के मस्तिष्क पर इस तरह छा जाना कि वह वक्ता की बात मान ले। इस प्रकार लौजाइनस से पूर्व साहित्यकार का कर्तव्य –कर्म समझा जाता था–"To ınstruet to delıght to persuadı" अर्थात शिक्षा देना आह्लाद प्रदान करना और प्रयत्न उत्पन्न करना। लौजाइनस ने अनुभव किया कि इस सूत्र मे कुछ कमी है, क्योकि काव्य मे इन तीनो बातो से कुछ अधिक होता है। ऐसा अनुभव करते समय कदाचित् उनके मन मे 'I on ' की निम्न पक्तियो की प्रतिच्छाया रही हो। "The muse firest of all ınspıres men ---for all good poets -----compose there beautıful poems not by art but because they are ınspıred and possessed ----- when he has not attaıned to thıs state, he has power less and is unable to utter his oraels"

लौजाइनस काव्य के लिए भावोत्कर्ष को मूलतत्व, अति आवश्यक तत्व मानता था। उसने निर्णायक रूप से यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि काव्य या साहित्य का परम् उद्देश्य चरर्मोल्लास प्रदान करना है, पाठक या श्रोता को वेद्यान्तर शून्य बनाना है।

इसी बात को बाद मे चलकर जोबार्ट ने इन शब्दो मे कहा" Nothıng is poetry unless ıt transports" और डिक्विन्सी ने इसके आधार पर साहित्य के दो भेद–(1) ज्ञान का साहित्य (2) शक्ति का साहित्य किए, तथा कहा कि पहले का कार्य शिक्षा देना तथा दूसरे का कार्य आनन्द प्रदान करना है। यद्यपि लौजाइनस ने 'कल्पना' शब्द का प्रयोग नही किया तथा उसका स्पष्ट मत था

कि साहित्य का सबध तर्क से नही है, वह कल्पना द्वारा पाठक को अभिभूत करता है, यदि उसने 'इलियट' को 'ओडैसी' से डिमोस्थनीज को सिसरो से श्रेष्ठ माना तो इसका कारण यही था कि 'इलियट' मे जीवन–आवेग प्रगाढ अनुभूति, गति शक्ति और वेग तथा यथार्थ बिम्ब– विधान 'ओडैसी' से कही अधिक थे। इसी प्रकार सिसरो की शैली शिथिल और सामान्य से भाराकान्त थी, तो डिमोस्थनीज की शैली मे जीवन, आवेग, गति, तत्परता, प्रचुरता आदि गुण थे, जिनके कारण पाठक की चेतना पूर्णत अविभूत हो जाती थी।

लौजाइनस ने 'उदात्त' की कोई परिभाषा नही दी है, उसे एक स्वत स्पष्ट तथ्य मानकर छोड दिया है। उनका मत है कि उदात्ता साहित्य के हर गुणो मे महान है, यह वह गुण है जो अन्य क्षुद्र त्रुटियो के बावजूद साहित्य को सच्चे अर्थो मे प्रभावपूर्ण बना देता है। उनकी यह दृष्टि व्यावहारिक तथा मनौवैज्ञानिक दोनो प्रकार की थी, अत उसने एक ओर उदात्त के बहिरग तत्वो की चर्चा की, दूसरी ओर उसके अतरग तत्वो की ओर भी सकेत किया। उदात्त के इस विवेचन मे उन्होने पॉच बातो को आवश्यक ठहराया–

(1) महान धारणाओ या विचारो की क्षमता।

(2) भावावेग की तीब्रता।

(3) समुचित अलकार–योजना।

(4) उत्कृष्ट–भाषा।

(5) गरिमामय रचना–विधान।

इसमे से प्रथम दो जन्मजात है, अत· उदात्त के अन्तरग पक्ष के अन्तर्गत आते है। तो शेष तीन कलागत् है और बहिरग के अन्तर्गत आते है। उन्होने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उन तत्वो का भी उल्लेख किया है जो औदात्य के विरोधी है। इस प्रकार उनके उदात्त के स्वरूप विवेचन के तीन पक्ष हो जाते है।

(1) अतरग तत्व।

(2) बहिरग तत्व।

(3) विरोधी तत्व।

<u>(1) अन्तरग तत्व–</u> लौजाइनस ने अपनी पुस्तक 'आन दि सब्लाइम' मे औदात्य के पॉच उद्गम स्रोतो का निर्देश किया है, जिनमे दो जन्मजात या अतरग है और शेष तीन कलागत। इन पॉचो मे प्रथम और सर्वप्रमुख है, महान धारणाओ की क्षमता दूसरा है उद्दाम और प्रेरणा–प्रसूत आवेग। औदात्य के ये दो अतएव लगभग जन्मजात होते है अर्थात् इन दोनो तत्वो का सबध आत्मा की गरिमा से है "इसलिए इस विषय मे भी यथा सम्भव हमे अपनी आत्मा मे उदात्त विचारो का पोषण करना चाहिए और उसे भव्य प्रेरणाओ से परिपूरित रखना चाहिए। इसको इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि "औदात्य महान् आत्मा की प्रतिध्वनि है।"

इस प्रकार उदात्त के दो अतरग तत्व है उदात्त–विचार और प्रेरणा–प्रसूत आवेग इन दोनो मे भी मुख्य है– आवेग। "मै यह बात पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि जो आवेग उन्माद उत्साह के उद्दाम वेग से फूट पडता है और इस प्रकार से वक्ता के शब्दो को विक्षेप से परिपूर्ण कर देता है, उसके यथा–स्थान व्यक्त होने से स्वर मे जैसा औदात्य आता है, वह अत्यन्त दुर्लभ है।[1]

लौजाइनस ने केवल प्रेरणा–प्रसूत भव्य–आवेग को ही औदात्य का उद्गम माना है। आवेग के सभी रूप उदात्त नही होते और स्वभावत वे उदात्त– कला की सृष्टि नही कर सकते। अत औदात्य और आवेग को पर्याय मानना भूल होगी। भव्य आवेग से अभिप्राय ऐसे आवेग का है जिससे "हमारी आत्मा जैसे अपने आप ही ऊपर उठकर गर्व से उच्चाकाश मे विचरण करने

---

1 काव्य मे उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र) पृष्ठ–53–55

लगती है तथा हर्ष और उल्लास से परिपूर्ण हो उठती है।[1] इसी प्रकार का आवेग उदात्त की सृष्टि करता है। इसके विपरीत कुछ ''ऐसे भी आवेग होते है जो औदात्य से बहुत दूर है, और जो निम्नतर कोटि के है, जैसे दया, शोक भय आदि।[2] कहने की आवश्यकता नही कि इस प्रकार के भाव उदात्त की सृष्टि मे सर्वथा असमर्थ ही नही वरन् बाधक भी होते है।

लौजाइनस का दृढ विश्वास है कि'' सच्चे बाग्मी (कलाकार) को निश्चय ही क्षुद्र और हीनतर भावो से मुक्त होना चाहिए क्योकि यह सभव नही है कि जीवन–भर क्षुद्र उद्देश्यो और विचारो मे ग्रस्त व्यक्ति कोई स्तुत्य एव अमर रचना कर सके।'' ''महान शब्द उन्ही के मुख से नि सृत होते है, जिनके विचार गम्भीर और गहन हो।[3]

एक दूसरे प्रकार से भी डॉ0 नगेन्द्र ने उदात्त के आन्तरिक स्वरूप की व्याख्या की है और वह है प्रभाव वर्णन। प्रभाव वर्णन द्वारा उदात्त का प्रभाव अत्यन्त प्रबल और दुर्निवार होता है।[4]

वास्तव मे महान रचना वही है जिससे प्रभावित होना कठिन ही नही लगभग असम्भव हो जाय और जिसकी स्मृति इतनी गहरी हो कि मिटाए न मिटे।[5] साधारण औदात्य के उन उदाहरणो को ही श्रेष्ठ और सच्चा मानना चाहिए जो सब व्यक्तियो को सर्वदा आनन्द दे सके। ''बज्रपात का बिना पलक झपकाए सामना करना तो आसान है, किन्तु एक के बाद एक तीव्र गति से होने वाले उस भाव विस्फोट को अविचल दृष्टि से देखना सम्भव नहीं।''

---

1 काव्य मे उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र) पृष्ठ–52
2 काव्य मे उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र) पृष्ठ–54
3 काव्य मे उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र) पृष्ठ–99–100
4 काव्य में उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र) पृष्ठ–52
5 काव्य मे उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र) पृष्ठ–52

यही कारण है कि सम्पूर्ण विश्व भी मानव मस्तिष्क के विचार और चिन्तन के लिए पर्याप्त नही लगता और प्राय हमारी कल्पना दिगन्त को पार कर जाती है।[1]

''कारण यही है कि हम स्वभाव से ही छोटी–छोटी धाराओ की प्रशसा नही करते, चाहे वे कितनी ही उपयोगी और निर्मल क्यो न हो, बल्कि नील नदी, डेन्यूब, अथवा राइन और इन सबसे अधिक महासागर से प्रभावित होते है। इन सब विषयो मे हम कह सकते है कि जो कुछ उपयोगी तथा आवश्यक है उसे मनुष्य साधारण मानता है, अपने सम्भ्रम का भाव तो वह उन पदार्थों के लिए ही सुरक्षित रखता है जो विस्मय–विमूढ कर देने वाले है?

''और सभी गुण जहॉ यह सिद्ध करते है कि उसको धारण करने वाले मुनष्य है वहॉ औदात्य लेखक को ईश्वर के समीप ले जाता है, जहॉ दोष–मुक्त होने पर आलोचनाओ से छुटकारा मिलता है, वहॉ गरिमा आदर और विस्मय को जन्म देती है।''[2]

<u>विवेचन</u> – भारतीय काव्य–शास्त्र की शब्दावली मे उपर्युक्त उद्धरणो मे उदात्त के विभाव एव भाव दोनो पक्षो का वर्णन है।

विभाव से अभिप्राय भाव के कारण का है, और भाव का अर्थ है अनुभूति। इन वाक्यो मे उदात्त भावना को जन्म देने वाले कारणो अर्थात्, उसके आलम्बन पक्ष का और उदात्त भावना के अनुभूति पक्ष का विवेचन मिलता है।

<u>विभाव पक्ष.–</u> (क) विभाव आलम्बन रूप मे उदात्त के तत्व है–

<u>(i) अनन्त विस्तार–</u> (क) सम्पूर्ण विश्व भी पर्याप्त नही लगता और प्राय हमारी कल्पना दिगन्त को पार कर जाती है।''

---

1 काव्य मे उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र) पृष्ठ–99–100

2 काव्य मे उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र)पृ0 –100–101

(ख) बल्कि नील नदी, डेन्यूब और इन सबसे अधिक महासागर से प्रभावित होते है।

__(ii) असाधारण शक्ति और वेग__ – न हम उसे एबना के ज्वालामुखियो की अपेक्षा अधिक विस्मयकारी मानते है, जो अपने विस्फोट मे अतल–गर्भ से बडे–बडे पत्थर और बृहद्कार शिलाखण्ड बाहर फेकते रहते है और कभी–कभी जिनके गर्भ से विशुद्ध और आर्न्तभौम ज्वाला का नद प्रवाह उमडता चला जाता है।

__(iii) अलौकिक ऐश्वर्य__ – सभी गुण जहॉ यह सिद्ध करते है कि उनको धारण करने वाले मनुष्य है वहॉ औदात्य लेखक को ईश्वर के (ऐश्वर्य के) समीप ले आता है।

__(iv) उत्कट एव स्थायी प्रभाव–क्षमता –__

(क) बज्रपात का बिना पलक झपकाए सामना करना तो आसान है, किन्तु एक के बाद एक तीव्रगति से होने वाले उस भाव विस्फोट को अविकल न होना कठिन ही नही लगभग असम्भव हो जाए और जिसकी स्मृति इतनी प्रबल और गहरी हो कि मिटाए न मिटे।"

__बहिरग तत्व__ –लौजाइनस के निबन्ध का मुख्य प्रतिपाद्य उदात्त–शैली ही है–अर्थात् उनका ध्यान मूलत उन तत्वो पर ही केन्द्रित रहा है जिनके द्वारा काव्य की शैली उदात्त बनती है। स्पष्टत ये उदात्त के बहिरग–तत्व है, स्वय लेखक के शब्दो मे ये "कला की उपज" है।[1]

__(I) अलकारो की समुचित योजना.__– जिसके अन्तर्गत् भाव और अभिव्यक्ति दोनो ही से सबधित अलंकार आ जाते है।

__(ii) उत्कृष्ट–भाषा__ – जिसके अन्तर्गत् शब्द चयन, रूपकादि का प्रयोग और भाषा की सज्जा समृद्धि आदि गुण आ जाते है।

---

1 काव्य मे उदात्त तत्व – डॉ0 नरेन्द्र–पृष्ठ–53

(iii) गरिमामय रचना–विधान – लौजाइनस ने विस्तार से इन तीनो तत्वो को लेकर अपने विचार प्रगट किए है।

समुचित अलकार–योजना –

इस प्रसग मे लेखक ने दो तथ्यो को ग्रहण किया है।

(I) अलकार–विधान का औचित्य।

(ii) उदात्त के पोषक अलकारो का निर्देश।

अपनी मूल धारणा के अनुरूप ही लौजाइनस अलकार–विधान मे औचित्य को प्राथमिकता देते है, उदात्त–शैली के निर्माण मे अलकारो का प्रयोग तो आवश्यक होता ही है, किन्तु उससे भी अधिक आवश्यक प्रयोग का औचित्य जो स्थान ढग परिस्थिति और उद्देश्य के ऊपर निर्भर रहता, अर्थात भव्य से भव्य अलकार भी उसी स्थिति मे उदात्त का पोषक हो सकता है जब उसका प्रयोग स्थान परिस्थिति रीति और उद्देश्य के अनुकूल हो। वास्तव मे अलकार प्रयोग की सार्थकता तो तब है जब वह प्रसग का सहज अग बनकर आए और इस बात पर भी किसी का ध्यान न जाए कि यह अलकार है। सक्षेप मे लौजाइनस की "आन दी सब्लाइम" नामक पुस्तक मे उदात्त आलम्बन के गुण है, जीवन्त आवेग, प्रचुरता, तत्परता जहॉ उपयुक्त हो वहॉ गति तथा ऐसी शक्ति और वेग जिसकी समता करना सभव नही।"

भाव–पक्ष – उदात्त की अनुभूति के अतर्तत्व इस प्रकार है –

(I) मन की ऊर्जा – अर्थात् आत्मा का उत्कर्ष करने वाली प्रबल अनुभूति, लौंजाइनस ने दो प्रकार के आवेगो की ओर सकेत किया है एक उत्साह आदि जिनसे आत्मा का उत्कर्ष होता है और दो भय–शोक आदि हीनतर आवेग जो आत्मा काअपकर्ष करते है। उदात्त की अनुभूति पहली कोटि मे आती है।" जिससे हमारी आत्मा जैसे अपने आप ही ऊपर उठकर गर्व से उच्चाकाश मे

विचरण करने लगती है। भारतीय काव्यशास्त्र मे जिसे चित्त की 'दीप्ति' या 'स्फीति' कहा है।

(ii) उल्लास – (क) जिससे हमारी आत्मा हर्ष व उल्लास से परिपूर्ण हो जाती है।

(ख) साधारणत औदात्य के उन उदाहरणो को श्रेष्ठ सच्चा मानना चाहिए जो सब व्यक्तियो को सर्वदा आनन्द दे सके।

(iii) सभ्रम अर्थात् आदर और विस्मय – जो कुछ भी उपयोगी तथा आवश्यक है उसे मनुष्य साधारण मानता है, अपने सभ्रम का भाव तो वह उन पदार्थो के लिए ही सुरक्षित रखता है जो विस्मय– विमूढ कर देने वाले है।

(iv) अविभूति अर्थात् सम्पूर्ण चेतना के अभिभूत हो जाने की अनुभूति –उदात्त की अनुभूति का अन्तिम रूप यही है ऊर्जा उल्लास सम्भ्रम आदि के सम्मिलित–प्रभाव रूप अतत· हमारी सम्पूर्ण–चेतना अभिभूत हो जाती है लौजाइनस ने "विस्मय –विमूढ" शब्द के द्वारा इसी भाव को व्यक्त किया है। ताकि ध्यान न जाए कि यह अलकार है।[1]

स्पष्टत कला की यही सबसे बडी सिद्धि है कि उसके प्रयोग के विषय मे प्रमाता को सन्देह तक न हो, परवर्ती आलोचना शास्त्र मे इसे ही कला का आत्मगोपन कहा गया है जब अलकारो का प्रकोप स्वतन्त्र रूप मे होने लगता है, अर्थात जब वे साध्य बन जाते है तो उनका उद्देश्य ही विफल हो जाता है इसलिए लौजाइनस अलकार प्रयोग के लिए यह आवश्यक मानते है कि वह साधन–रूप हो, प्रसंगानुकूल हो, अतिचार से मुक्त हो और अथलज हो, कम से कम अत्यनज प्रतीत हो क्यो कि कला–प्रकृति के समान प्रतीत होने पर ही सम्पूर्ण होती है।[2]

---

1 काव्य मे उदात्त तत्व – डॉ0 नगेन्द्र – पृष्ठ–77
2 काव्य मे उदात्त तत्व – डॉ0 नगेन्द्र – पृष्ठ–74

उदात्त के पोषक अलकारो मे रूपक के अतिरक्ति लौजाइनस ने विस्तारणा, शपथोक्ति (सबोधन) प्रश्नालकार विपर्यय, व्यतिक्रम, पुनरावृत्ति, छिन्न –वाक्य, प्रत्यक्षीकरण, सचयन, सार रूप परिवर्तन, पर्यायोक्ति आदि का मनौवैज्ञानिक पद्धति से विवेचन किया है।

(I) <u>विस्तारण –</u> किसी विषय के सम्पूर्ण अगो और अगभूत प्रसगो के समुदाय का नाम विस्तारण है जिससे विषय के विस्तार द्वारा युक्ति मे बल आ जाता है। इसके तत्व है– विवरण और प्राचूर्य।

(ii) <u>शपथोक्ति –</u> इसमे आन्तरिक शपथ के द्वारा ओज और विश्वास के अकुर उत्पन्न किए जाते है।

(iii) <u>प्रश्नालकार –</u> परम्परा के अनुसार वक्ता स्वय प्रश्न करके शीघ्र ही समाधान करने मे यदि सफल हो जाता है तो उसका यह वक्तव्य अत्यन्त उदात्त और विश्वासोत्पादक बन जाता है।

(iv) <u>विपर्यय और व्यतिक्रम –</u> इसमे शब्दो अथवा विचारो के सहज व्यक्तीकरण मे उलटफेर किया जाना स्वाभाविक है जिस प्रकार मनुष्य वास्तव मे क्रोध, भय, मन्यु, ईर्ष्या अथवा किसी अन्य भावना से, क्योकि आवेग अनेक और असख्य है और उनकी गणना सभव नही, उत्तेजित होकर कभी–कभी दूसरी ओर मुँह फेर लेते है, अपने मुख्य विषय को छोडकर दूसरे पर लपक उठते है और बीच मे ही कोई सर्वथा असबद्ध बात ले आते है और फिर उसी प्रकार अचानक ही तेजी से घूमकर अपने मुख्य विषय पर लौट आते है और बात–चक्र की भॉति अपने वेग परिचालित होकर जल्दी –जल्दी इधर–उधर बहकते वे अपनी शब्दावली को विचारो को, और उनके सहज क्रम को, नाना प्रकार के असख्य रूपो मे बदलते रहते है, उसी प्रकार श्रेष्ठ लेखक विपर्यय के द्वारा इस सहज प्रभाव को यथा सम्भव अभिव्यक्त करते हैं।

(v) पुनरावृत्ति और छिन्न–वाक्य – इन अलकारो मे जब तक आत्मिक उदात्तता की सामग्री नही आएगी तब तक आत्मा मे आवेग और सक्षोभ की अभिव्यक्ति से मनोदशा मे अनेक मनोवेगो का उठना स्वाभाविक है। इसलिए बाध्य होकर प्रयोक्ता को छिन्न वाक्यो और पुनरावृत्तियो का सहारा लेना आवश्यक हो जाता है।

(vi) प्रत्यक्षीकरण.– प्रत्यक्षीकरण मे साक्षात् वर्णन की क्षमता रहती है। समस्त वर्ण्य–विषय जीवन्त–सा हो उठता है। इस अलकार का प्रयोग प्राय पुनरावृत्ति और छिन्न वाक्य आदि के सहयोग मे ही होता है।

(vii) सार – इसमे वर्ण्य–वस्तु को उदात्त–तत्व की दृष्टि मे असाधारण की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। तथा वर्ण्य–वस्तु मे लगातार उदात्त का अभिव्यक्तिकरण रहता है।

(viii) रूप–परिर्वतन – यह अलकार वचन, काल, पुरूष, कारक और लिग के परिवर्तन द्वारा विषय के प्रतिपादन मे विविधता और सजीवता उत्पन्न करता है।

(vx) पुरूष– परिवर्तन – पुरूष–परिवर्तन मे अन्य पुरूष के लिए प्राय मध्यम पुरूष के प्रयोग द्वारा (अथवा अन्य प्रकार के विपर्यय द्वारा) प्रत्यक्ष प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।" कभी–कभी ऐसा होता है कि लेखक किसी अन्य व्यक्ति के बारे मे बात करते–करते एकाएक बात को काटकर स्वय अपने आपको उस व्यक्ति का रूप दे देता है।

(x) पर्यायोक्ति – इसमे बात को बहुत तरह से सजाकर चमत्कार के साथ कहा जाता है। जैसे मृत्यु के लिए 'नियत–मार्ग' का प्रयोग।

उपर्युक्त अलकारो के अतिरिक्त रूपक और अतिशयोक्ति का भी उदात्त शैली के निर्माण मे योगदान है।

उत्कृष्ट–भाषा.– उदात्त–शैली का मुख्य तत्व है उत्कृष्ट–भाषा, लौजाइनस ने 'आन दि सब्लाइम' नामक पुस्तक मे विचार और पद्–विन्यास को एक दूसरे

के आश्रित माना है। अतएव स्वभावत उदात्त की अभिव्यक्ति का माध्यम उत्कृष्ट या गरिमामयी भाषा हो सकती है। भाषा की गरिमा का मूल आधार है शब्द–सौन्दर्य, जिसका अर्थ है 'उपर्युक्त और प्रभावक' शब्द प्रयोग। सुन्दर शब्द ही वास्तव मे विचार को विशेष प्रकार का आलोक प्रदान करते है। उन्ही के द्वारा प्रत्यक्ष रूप मे किसी रचना मे सुन्दरतम् मूर्तियो की भॉति भव्यता सौन्दर्य, गरिमा, ओज और शक्ति तथा अन्य श्रेष्ठ गुणो का आविर्भाव होता है और मृत–प्राय वस्तुए जीवन्त हो उठती है।" किन्तु 'गरिमामयी भाषा' का उपयोग सर्वत्र नही करना चाहिए क्योकि छोटी–छोटी बातो को बडी और भारी–भरकम सज्ञा देना किसी से छोटे बालक के मुॅह पर पूरे आकार वाला त्रासद अभिनय का मुखौटा लगा देने के समान है।[1] अर्थात्, गरिमामयी पदावली का उपयोग प्रसग के अनुरूप ही होना चाहिए क्योकि वस्तु और शब्द के बीच पूर्ण सामजस्य बिना उदात्त की योजना के सम्भव नही है।

<u>गरिमा–मय एव अर्जित रचना–विधानः–</u> यह उदात्त–शैली का तीसरा तत्व है।," रचना का अर्थ है भाषा का सामजस्य, यह गुण स्वभाव जात होता है और हमारी श्रवणेन्द्रिय को ही नही वरन् हमारी आत्मा तक को प्रभावित करता है रचना–विधान के अर्न्तगत् शब्दो–विचारो, कार्यो, सुन्दरता तथा राग के अनेक रूपो का सगुम्फन होता है अर्थात् रचना का प्राण तत्व है सामजस्य जो उदात्त–शैली के निर्माण के लिए अनिवार्य है।[2] यह सामजस्य वक्ता और हमारे बीच समभाव की स्थापना करता है।" हमे भव्यता, गरिमा ऊर्जा तथा अपने भीतर निहित प्रत्येक भाव की ओर प्रवृत्त करता है, और इस प्रकार हमारे मन के ऊपर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेता है।"

---

1 काव्य मे उदात्त तत्व– डॉ0 नगेन्द्र–पृष्ठ–91
2 काव्य मे सौन्दर्य और उदात्त तत्व–शिव बालक राय – पृष्ठ–107

कल्पना तत्वः— लौजाइनस ने "आन दि सब्लाइम" नामक पुस्तक मे उदात्त पर विचार करते समय प्रासगिक रूप से बिम्ब और कल्पना चित्र प्रवक्ता की गरिमा ऊर्जा और शक्ति के सम्पादन मे बहुत कुछ सहायता करते है। 'कल्पना', लेखक के मतानुसार उस शक्ति का नाम है जो पहले कवि वर्ण्य—विषय का मनसा साक्षात्कार कराती है और फिर भाषा मे चित्रात्मकता का समावेश कर श्रोता के मनश्चक्षु के सामने उसे प्रत्यक्ष कर देती है। लौजाइनस की कल्पना—विषयक उक्त धारणा आज भी समीचीन प्रतीत होती है।

विरोधी तत्व — औदात्य के विरोधी तत्व पर विचार करते हुए लौजाइनस ने वालेयता का उल्लेख किया है। वालेय शब्द का अर्थ है बचकाना—जिसमे बच्चो के दुर्गुणो का ही प्राधान्य रहता है— जैसे चापल्य गरिमा का एकान्त अभाव, सयम का अभाव एक प्रकार की हीनता कायरता आदि। स्पष्टतया ये ही औदात्य के विरोधी तत्व है— और चचल पद—गुम्फ, असयत, रूचिहीन, वाक्स्फीति हीन और क्षुद्र भावाडम्बर व शब्दाडम्बर ये सभी दोष उदात्त को निकृष्ट बना देते है। वाक्स्फीति से अभिप्राय है अर्थ या भाव की गरिमा के अभाव मे अनावश्यक वागाडम्बर का प्रयोग। उदाहरणार्थ— वृद्ध जैसे क्षुद्र पदार्थ के लिए 'जीवित समाधि' शब्द का प्रयोग। भावाडम्बर का अर्थ है 'जहॉ किसी आवेग की आवश्यकता नही है वहॉ अवसर के अनुपयुक्त और खोखले आवेग का प्रदर्शन किया जाए अथवा जहॉ सयम की आवश्यकता है, वहॉ असमय दिखाई दे। शब्दाडम्बर से लौजाइनस का आशय वास्तव में अतियुक्त शब्दावली का है जिसके लिए हिन्दी मे 'उहा' शब्द का प्रयोग होता है। जैसे—स्त्री के लिए 'वक्षुदश', पुतली के लिए 'ऑख की कुमारी' आदि का प्रयोग। इनके अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार का विवेकहीन चमत्कार प्रयोग उदात्त का विरोधी है। आगे

चलकर इन्ही के आधार पर उदात्त के विपरीत रूप 'उपहास्य' का विवेचन किया गया।[1]

<u>अभिव्यक्ति मे क्षुद्रता</u>– इसी प्रकार अभिव्यक्ति की क्षुद्रता अत्यधिक सक्षिप्तता जडाव सगीत तथा लय का आधिक्य भी उदात्त–शैली के लिए घातक सिद्ध होते है। अभिव्यक्ति की क्षुद्रता का अर्थ है, क्षुद्र अर्थ के वाचक शब्दो का प्रयोग। उदात्त–विषय के अनुरूप उदात्त–शैली मे निकृष्ट और कुत्सित अर्थ के वाचक शब्द 'भाषा पर कलक' से प्रतीत होते है। साथ ही उक्ति की अत्यधिक सक्षिप्तता से भी उदात्तता का ह्रास होता है क्योकि बहुत ही सकीर्ण घेरे मे विचार को ठूॅसने से भी गरिमा नष्ट हो जाती है। "यह आरोप समास–शैली के विषय मे नही है जो कि शैली का गुण है," "वरन् ऐसी उक्ति के विषय मे है जो सर्वथा क्षुद्र और छोटे–छोटे भागो मे खण्डित हो, क्योकि शब्दो की अल्पता अर्थ को सकुचित कर देती है।" यही बात जडाव के विषय है। ऐसे शब्द जो एक –दूसरे से बहुत सटे हुए हो, छोटे–छोटे अक्षरो मे विभक्त हो और नितान्त विषमता और कर्कशता के द्वारा मानो लकडी की कीलो से एक दूसरे के साथ जडे हो, उदात्त शैली के दूषण होते है और अन्त में लय एव सगीत का आधिक्य भी उदात्त के प्रभाव को नष्ट कर देता है, इसके कारण उक्ति मे एक प्रकार की अतिशय सुकुमारता कृत्रिमता और एक–रसता उत्पन्न हो जाती है। और श्रोता का ध्यान विषय–वस्तु से हटकर लय एव सगीत पर केन्द्रित हो जाता है।

जैसा कि पीछे सकेत किया जा चुका है ग्रीक–साहित्य चिन्तन परम्परा मे लौजाइनस पहले व्यक्ति है जिन्होने काव्य–वस्तु एव काव्य–गरिमा का सबन्ध रचयिता के व्यक्तित्व से स्थापित करते हुए उसे महत्व प्रदान किया। उनसे पूर्व अरस्तू ने अनुकृति सिद्धान्त द्वारा प्रकृति को ही काव्य का आधार–स्रोत मानते

---

1 काव्य मे उदात्त तत्व (डॉ0 नगेन्द्र)–पृष्ठ–109

हुए कवि के निजी व्यक्तित्व को सर्वथा उपेक्षित एव तिरोहित कर दिया था अनुकृति सिद्धान्त के अनुसार कला प्रकृति की अनुकृति है इसका तात्पर्य है कि कला का सौन्दर्य प्रकृति के सौन्दर्य की ही अनुकृति मात्र है ऐसी स्थिति मे कलाकार का क्या योगदान है। केवल अनुकृति प्रस्तुत कर देना तो कोई बहुत बडी बात नही है। लौजाइनस ने अनुकृति सिद्धान्त की सर्वथा उपेक्षा करते हुए कवि के व्यक्तित्व की विशिष्टिता एव रचना की मौलिकता का प्रतिपादन किया जो उसकी नूतन दृष्टि का प्रमाण है। वस्तुत जहॉ प्लेटो घोर 'आदर्शवादी था अरस्तू वस्तुवादी या यर्थाथवादी वहॉ लौजाइनस स्वछन्दतावादी(रोमाटिक) था। पाश्चात्य परम्परा मे कवि व्यक्तित्व को महत्व प्रदान करने के कारण ही लौजाइनस को पहला रोमाटिक आलोचक माना जाता है जो ठीक ही है।

दूसरे औदात्य सिद्धान्त की प्रतिष्ठा भी सर्वप्रथम लौजाइनस द्वारा हुई। आगे चलकर विभिन्न पाश्चात्य आलोचको एव कला–मीमासको ने कला के दो प्रमुख तत्वो के अन्तर्गत् सौन्दर्य एव औदात्य को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है तथा कान्ट, हीगल, कैरिट सैतायन प्रभृति– सौन्दर्य–शास्त्रियो ने इनकी विस्तार से मीमासा की है वस्तुत आधुनिक कला–समीक्षा में अरस्तू के अनुकृति–सिद्धान्त की अपेक्षा औदात्य को ही अधिक महत्व प्राप्त है।

तीसरे लौजाइनस का दृष्टिकोण जितना गम्भीर है उनका विवेचन–विश्लेषण भी उतना ही सूक्ष्म एव व्यापक है, वे औदात्य को एक व्यापक रूप प्रदान करते है, कि उसके अन्तर्गत् कवि का व्यक्तित्व विचार–तत्व, भाव–तत्व, शैली का अलकरण, शब्द चयन रचना के गुण–दोष आदि सभी प्रमुख तत्व समाविष्ट हो जाते है। वे रचना की सर्जना–प्रकिया से लेकर उसकी आस्वादन–प्रकिया तक की स्थितियो को ध्यान मे रखते हुए उसके सभी महत्वपूर्ण पक्षो की व्याख्या सर्वथा–नूतन, मौलिक एव प्रौढ रूप मे प्रस्तुत करते है।

भाव–मीमासा.– भारतीय दृष्टि से लौजाइनस का भावावेगो को महत्व देते हुए अलकार गुण–दोष आदि की मीमासा करना विशेष महत्वपूर्ण है। यद्यपि लौजाइनस ने मूलत औदात्य को लक्ष्य माना है, पर भावावेगो के उद्वेलन एव तज्जन्य आनन्द की बात भी उन्होने स्थान–स्थान पर की है जो भारतीय रस–सिद्धान्त के अनुकूल है।

जहॉ औदात्य की व्यापक रूप से प्रतिष्ठा करते हुए लौजाइनस ने उसका सबध व विचार, भाव शैली आदि सभी पक्षो से स्थापित करने का महत्व–पूर्ण कार्य किया है, वहॉ उनकी यह सीमा भी है कि ऐसा करते समय उन्होने औदात्य के मूल क्षेत्र को भूला दिया है। औदात्य का मूल अर्थ है उच्च–विचार या ऐसी भावनाऍ जो त्याग आत्म–बलिदान या परोपकार की प्रेरक हो, इस दृष्टि से औदात्य एक चारित्रिक या नैतिक तत्व है। उसका कला से सीधा सबध नही है महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारो मे या महात्मा–गॉधी के जीवन–चरित मे पर्याप्त मात्रा मे औदात्य के होते हुए भी यह आवश्यक नही है कि कलात्मक सौन्दर्य से युक्त हो, कला का प्राथमिक गुण सौन्दर्य है, औदात्य उसका अतिरिक्त गुण है। फिर कला या काव्य मे औदात्य को स्थान औदात्य के कारण नही अपितु उसके काव्य सौन्दर्य के कारण ही मिलता है, अन्यथा नही, उदाहरण के लिए कबीर की निम्नाकित उक्ति को लीजिए–

"माली आवत देखि कै कलियॉ करै पुकार।
फूले–फूले चुनि लिए कालि हमारी बार।।"

यहॉ जिस उदात्त विचार की अभिव्यक्ति की गयी है वह अपने कलात्मक सौन्दर्य के कारण ही स्वीकार्य है, अन्यथा नही। यदि कोई अभिधा लिख दे–हम सबको मरना है अत ससार का मोह छोडो– तो यह वाक्य काव्य की कोटि मे नही आएगा। यद्यपि इनमे औदात्य है।

विवेचन— उदात्त के विषय मे लौजाइनस के मत का साराश इस प्रकार है—

विभाव रूप मे उदात्त से अभिप्राय ऐसे विषय का है जो अनन्त विस्तार असाधारण शक्ति एव वेग, अलौकिक ऐश्वर्य तथा उत्कृष्ट—प्रभाव क्षमता आदि गुणो से सम्पन्न हो।

भाव रूप मे उदात्त से तात्पर्य उल्लास, विस्मय सम्भ्रण आदि सचारियो से पुष्ट, आत्मा का उत्कर्ष करने वाली ऐसी प्रबल अनुभूति का है जो सम्पूर्ण चेतना को अभिभूत कर ले।

शैली के रूप मे उदात्त मे आधार तत्व है— उपर्युक्त एव प्रभावक शब्दो से युक्त उत्कृष्ट—भाषा, गरिमामय रचना—विधान, भव्य—योजना और प्राय अतिशय—मूलक अलकारो की योजना जिन पर औचित्य का अनुशासन अनिवार्यत रहना चाहिए।

अध्याय-2

कवि निराला का सर्जनात्मक विकास

यद्यपि निराला छायावाद के प्रवर्तको मे परिगणित होते है, किन्तु निराला जैसे अनेक क्षितिजो और दिगत भूमिकाओ के कवि को किसी वाद की सीमा मे बॉधना कठिन है। निराला का युग प्रमुखत प्रगीत युग रहा है और इस युग का काव्योत्कर्ष वस्तुत प्रगीत काव्य का ही उत्कर्ष कहा जाएगा। निराला वस्तुमुखी और चित्रात्मक विशेषताओ के प्रगीत कवि है। प्रगीत पद्धति मे नाद सौन्दर्य की ओर अधिक ध्यान रहने से सगीत तत्व का अधिक समावेश देखा गया है। सगीत को काव्य के और काव्य को सगीत के अधिक निकट लाने का सबसे अधिक प्रयास निराला जी ने किया है।

निराला ने अपने साहित्य की रचना करते समय शायद यह सोचकर कि उनका साहित्य स्वय निराला बनकर युवा पीढी की परम्परा से, रूढियो से, सामाजिक विषमताओ से, सघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित करता रहे, अपने पात्रो को भी अपने विद्रोही, अक्खड मस्तमौला और तेजस्वी स्वरूप मे प्रस्तुत किया है। आज भी महामानव व विद्रोही निराला अपने पात्रो के माध्यम से कह उठता है–

"तोडो, तोडो, तोडो कारा
पत्थर से निकले फिर
गगा जल धारा।।"

सचमुच यह निराला का आत्म–विश्वास बोल रहा है, पत्थर से गगा–धारा निकालने का उनका यही आत्म–विश्वास व अक्खडपन ही तो उन्हे इस सीढी पर लाकर खडा कर देता है, जहॉ उनका दीन–हीन किसान भी क्रान्ति का आह्वान करता है–

"जग के महामय ऑगन मे
बरसो विप्लव के नवजलधर"।[1]

---

1 बादल–राग . निराला रचनावली (1) पृष्ठ–129

महाकवि निराला के पात्र पूरे परिवेश व उनकी सामाजिकता को उजागिर करते है। चाहे वह कथा साहित्य हो, उपन्यास हो, कहानी हो, रेखाचित्र हो या कविता, अपने पात्रो को गढते समय वे न केवल पात्रो के चरित्र का उदात्तीकरण करते है, वरन् वे अन्याय, शोषण व रूढियो के खिलाफ मानवीय मूल्यो के उस धरातल पर चारित्रिक गरिमा के साथ उनके पूरे व्यक्तित्व को उभारकर प्रस्तुत करते है।

निराला काव्य की रचना भाव मनोवैज्ञानिक चित्रण है। मन के आवेग, मन की निराशा, मन की खिन्नता अनेकानेक भाव जो तिरोहित होते है, उन भावो से प्रतीत होता है कि कवि ने मनोवैज्ञानिक शैली मे राम के मानसिक धरातल का विश्लेषण किया है। निराला ने कभी बन्धन स्वीकार नही किया चाहे वह मर्यादापुरूषोत्म राम के मर्यादित चरित्र का हो, वे जीवन के किसी भी क्षेत्र मे निरर्थक बन्धन की बात नही करते, राम का मर्यादित स्वरूप, शान्त व गम्भीर व्यक्तित्व साहित्यकारो के लिए आकर्षण का केन्द्र बना रहा, परन्तु 'राम की शक्ति–पूजा' मे राम को सहज मानव के रूप मे प्रतिष्ठित करने का क्रान्तिकारी चरण निराला ने अपने व्यक्तित्व के अनुरूप उठाया था, निराला के राम का अन्तर्द्वन्द और आवेश देखने योग्य है–

"धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध
धिक् साधना जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी हाय उद्धार प्रिया का हो न सका
वह एक और मन रहा राम का जो न थका
जो नही जानता दैन्य जो नही जानता विनय"।[1]

अपने सम्पूर्ण साहित्य मे निराला एक छाया की भॉति छाए रहते है। उनके साहित्य को पढकर ऐसा लगता है मानो निराला स्वय इन विभिन्न पात्रो के माध्यम से कभी दीन–हीन दलित–वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रकट करते है, कभी समाज मे

---

1 'राम की शक्ति पूजा' – अनामिका–निराला रचनावली भाग–2–पृष्ठ–239

आमूल परिर्वतन के लिए क्रान्ति का आह्वान करते है, तो कभी प्रिया के प्रति प्रणय निवेदन –

> "मै। न कभी कुछ कहता,
> बस तुम्हे देखता रहता।
> चकित थकी चितवन मेरी रह जाती,
> दग्ध हृदय के अगणित व्याकुल–भाव।
> मौन दृष्टि की ही भाषा कहलाती ।"

<u>सर्जना का प्रथम सोपान</u>– निराला की काव्य–सर्जना का प्रथम–सोपान 'अनामिका' के रूप मे दिखाई देता है, जो बालकृष्ण–प्रेस कलकला से '1923' के उत्तरार्द्ध मे श्री 'नवजादिकलाल श्रीवास्तव' ने प्रकाशित किया था। साहित्य–साधना की दृष्टि से यह सकलन निराला का प्रस्थान–बिन्दु है। यह अनुभव व अभिव्यक्ति की अनेकमुखी प्रकृति के कारण उनकी आगामी व्यापक काव्य–चेतना की ओर स्पष्ट सकेत कर रहा है। विशेषत अन्य समान–धर्मा कवियो प्रसाद, पन्त, महादेवी की आरम्भिक कविताओ के कच्चेपन की तुलना मे 'अनामिका' के कवि की भाषिक सर्जनात्मकता स्पृहणीय है।

<u>'परिमल' मे निराला की काव्य–साधना का स्वरूप.</u>– कवि की सर्जना का दूसरा सोपान 'परिमल' मे दिखाई देता है जो सितम्बर '1929' मे प्रकाशित हुई थी, 'परिमल' मे कवि मिथिकीय अश को नए परिपेक्ष्य मे विश्लेषित किया। ग्वाल कवि परम्परा से बँधे निराला ने परम्परा अमुक्त चिन्तन का प्रसार और नयी दृष्टि का विनियोग किया है। यो तो 'परिमल' मे प्राय भाषा के तत्सम् रूप का प्रयोग हुआ है। किन्तु "जमुना के प्रति" जैसी लक्षणा प्रधान अलकारिक कविता के अपवाद के साथ लगभग सभी श्रेष्ठ कविताए समास, शिल्प–योजना की आग्रही नही है। 'जमुना के प्रति' कविता उक्ति–वैचित्र्य और विशेषण बहुलता के वावजूद वास्तविक जीवन

सवेदना से परिपूर्ण है, जिसमे स्मृति चित्रो के माध्यम से भव्य अतीत को पूरी सुकुमारता के साथ भाषा मे उतारा गया है।

"यमुने तेरी इन लहरो मे
किन अधरो की आकुलतान
पथिक प्रिया सी जाग रही है
उस अतीत के नीरव गान।।"[1]

छायावादी काव्य के साथ कविता का शाब्दिक अर्थ लेने की परम्परा अनुपयोगी सिद्ध होती है, इस रूप मे कविता काव्य भाषा की उत्तरोत्तर, घुलनशीलता, सूक्ष्मता और अनिर्दिष्ट प्रकृति से अधिक आत्मीयता और आत्म–विश्वास के साथ जुडती है। कविता का शाब्दिक अर्थ न हो सकने की स्थिति मे पाठक और कभी–कभी समीक्षक खीझता है। पर श्रेष्ठ कविता की सघन अर्थ–प्रकिया शाब्दिक अर्थ न हो सकने की सीधी और सरलीकृत पद्धति से परे होती है। इस दृष्टि से 'परिमल' की 'मौन' कविता पहले आती है–

" बैठ ले कुछ देर
आओ एक पथ के पथिक
प्रिय अन्त और अनन्त के
x x x
सरल अति स्वछन्द
जीवन प्राप्त के लघुपात से
उत्थान पतनाधात से
रह जाए चुप निर्द्धनद।।"[2]

---

1 यमुना के प्रति निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ 115 (सम्पादक नद किशोर नवल)
2 मौन परिमल निराला ग्रन्थावली भाग(1)–पृष्ठ 170 (सम्पादक– नन्द किशोर नवल)

इसी सग्रह की विषम मातृक्त छन्द मे 'प्रणीत', 'बादल राग' कविता खडी बोली पर आधारित काव्य–भाषा के अनुपम स्वर–विस्तार एव नाद योजना की सभावना को उद्घाटित करती है, इस कविता मे सब्य–साची अर्जुन के रूप मे परिकल्पित बादल का सेवारत कर्मठ–जीवन विशेष प्रवणता के साथ मुखरित हुआ है। यद्यपि मुक्त छन्द की शुरूआत करने वाली 'जूही की कली', 'जागृति में', 'सुप्ति थी', 'शेफालिका' आदि कविताएँ सौन्दर्य–प्रणय के विविध रूपो को हिन्दी काव्य के सन्दर्भ मे नया आयाम देती है। किन्तु इनमे वस्तु सवेदना के प्रति वैयक्तिक प्रतिक्रिया व्यक्त करने की प्रवृत्ति है। किसी बॅधी–बॅधायी लीक पर चलने का आग्रह नही –

> "विजय–वन–बल्लरी पर
> सोती थी सुहाग–भरी–स्नेह–स्वप्न–मग्न
> अमल–कोमल–तनु तरूणी–जुही की कली,
> दृग बन्द किये, शिथिल–पत्राक मे
> बासन्ती निशा थी,
> विरह–विधुर–प्रिया–सग छोड
> किसी दूर देश मे था पवन
> जिसे कहते है मलयानिल।"[1]

कविता के औदात्य और संगीत की माधुरी का समन्वय :–

'परिमल' के बाद 'गीतिका' (1936) के रूप मे कवि का तीसरा काव्य सकलन प्रकाशित हुआ । जो छायावादी काव्य भाषा के और निखरने का सकेत देता है। 'गीतिका' मे कवि ने सगीत व कविता को एक धरातल पर मिलाने की चेष्टा की है। कविता को सगीत से जोडने का एक सफल प्रयास निराला जी ने किया है। संगीत

---

1 'जूही की कली' परिमल निराला रचनावली भाव(1) सम्पादक–नन्द किशोर नवल

माधुरी और कविता का औदात्य मिलकर एक अपूर्व रागात्मक अनुभूति का सृजन करती है। ''गवैया मात्र सगीत की शब्दावली का इस्तेमाल करते है कविता के तत्व से मेल नही हो पाता, निराला ने सगीत की माधुरी को भी पैदा किया है, साथ ही साथ कविता के अस्तित्व की रक्षा भी की है। सस्कृतनिष्ठ शब्दो का भरपूर और सर्जनात्मक उपयोग करते हुए कवि ने 'गीतिका' के गीतो मे गभीर चिन्तन, सास्कृतिक सन्दर्भों, विविध प्रणय–स्थितियो को अनुस्यूत करने की सफल चेष्टा की है। सगीतात्मकता को केन्द्र मे रखकर रचे गये इन गीतो मे कविता के अनुभव को और कविता की रचना–प्रक्रिया को अक्षत रखने की सजगता है। 'गीतिका' की भूमिका मे निराला ने लिखा है– ''प्राचीन गवैयो की शब्दावली सगीत की रक्षा के लिए, किसी तरह जोड दी जाती थी।, इसीलिए उनके काव्य का एकान्त अभाव रहता था। आज तक उसका यह दोष प्रदर्शित होता है। मैने अपनी शब्दावली को काव्य के स्वर से भी मुखर करने की कोशिश की है।''[1]

कवि का शिल्पी रूप 'परिमल' की अपेक्षा 'गीतिका' मे अधिक उभरा है, उसमे एक तो सस्कृत के नाद तत्व को, उसकी सगीतात्मका को, उसकी समास परकता को हिन्दी के ग्रहणशील रूप मे घुलाने–पचाने की कोशिश है। 'गीतिका' की दुर्बोधिता के कारण (छोटे–छोटे शीर्षक) निराला जी की कविताओ मे 'विनयपत्रिका' का प्रभाव पडा, दीर्घ–समास–बहुला पदावली का प्रभाव निराला जी की 'गीतिका' मे पर्याप्त मात्रा मे देखा जा सकता है।

'अनामिका' में कवि की परिवर्तित मन· स्थितियॉ.–

कवि का चौथा सकलन 'अनामिका'(1937) के रूप मे प्रकाशित हुआ, जो कवि के प्रथम काव्य–सकलन 'अनामिका' के अतिरिक्त था इसे 'द्वितीय अनामिका' भी कहा जाता है। इस सकलन में तत्सम् शब्दावली पर आत्मविश्वास अधिक मुखरित हुआ है। 'प्रेयसी', 'रेखा' जैसी लम्बी प्रणय कविताओ मे कवि ने धारा प्रवाह रीति से

1 'गीतिका'–'भूमिका'–पृष्ठ–12

सस्कृत शब्दो का प्रयोग किया है। इन कविताओ की रचना के माध्यम से कवि जैसे इस धारणा का उन्मूलन करता है कि खडी बोली मे सस्कार के परिष्कार की न्यूनता है। 'अनामिका' मे ही 'राम की शक्ति–पूजा' है, जिसके लम्बे, सुगठित, रचना–विधान मे खडी–बोली पर आधारित काव्य–भाषा की अभूतपूर्व व्यजना–क्षमता उद्घाटित हुई है। रचानात्मक काव्य–व्यक्तित्व भाषा के कितने स्रोतो को उन्मुक्त कर सकता है। यह 'राम की शक्ति पूजा' मे देखा जा सकता है–

"रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम–रावण का अपराजेय समर
आज का, तीक्ष्ण–शर–विधृत–क्षिप्र–कर वेग–प्रखर,
शत शेल सम्बरणशील, नील नभ–गर्ज्जित–स्वर
प्रतिपल–परिवर्तित–व्यूह–भेद–कौशल–समूह–
x x x
वारित–सौमित्र–भल्लपति–अगणित–मल्ल–रोध,
गर्ज्जित–प्रलयाब्धि–क्षुब्ध–हनुमत्–केवल–प्रबोध,
उद्गीरित–बह्नि–भीम–पर्वत–कवि–चतु प्रहर–
जानकी–भीरू–उर–आशाभर,–रावण–सम्वर"[1]

'अनामिका' की कुछ कविताओ की रचना के साथ निराला दोहरे शिल्प के प्रणेता के रूप मे सामने आते है। 'दान' 'बनबेला' और 'सरोज–स्मृति' मे क्लैसिकल और यथार्थ–परक शिल्प की सह–विन्यस्ति हुई है– खासतौर से 'सरोज–स्मृति' जैसी शोक–गीति का दोहरा रचना–विधान, तत्सम एव तद्भव पर आधारित भाषिक सरचना स्पृहणीय है–

"धीरे–धीरे फिर बढा चरण,

---

1 'द्वितीय अनामिका' राम की शक्ति पूजा सम्पादक नन्द किशोर नवल पृष्ठ–329 निराला रचनावली भाग एक ।

बाल्य की केलियो का प्राङ्गण
कर पार, कुज–तारूण्य सुघर
आयी, लावण्य–भार थर–थर
कॉपा कोमलता पर सस्वर
ज्यो मालकौश नव–वीणा पर ।।"[1]

'अनामिका' मे जहॉ एक ओर 'मरण–दृश्य' जैसी सूक्ष्म गभीर गीति रचना है, वही 'खुला आसमान', 'ठूॅठ' व 'किसान की नई बहू की ऑखे', जैसी यर्थाथ– परक कविताऍ है, जिसमे महत्वहीन समझे जाने वाले जन–सामान्य मे प्रचलित शब्दो का रचनात्मक उपयोग किया गया है। 'ठूॅठ' कविता अपने रचना–विधान मे बेजोड है, कवि ने 'ठूॅठ' जैसे मामूली वस्तु को प्रतीक के रूप मे ग्रहण किया है और उसके माध्यम से जीवन की उदासी और श्रीहीनता की गहरी व्यजनाऍ विकसित हुई है–

"ठूॅठ यह है आज।
गयी इसकी कला,
गया है सकल साज।
x x x
केवल वृद्ध विहग एक बैठता कुछ कर याद"।[2]

यहॉ कवि 'ठूॅठ' रूपी प्रतीक के माध्यम से यौवन के ढल जाने की शोभाहीनता और अनुपयोगिता के बेवस एहसास की मार्मिक स्थिति का सश्लिष्ट अकन 'ठूॅठ' के बिम्ब मे हुआ है।

निराला की प्रबन्धात्मक दृष्टि:– '1938' मे निराला के 'तुलसीदास' काव्य का प्रकाशन हुआ। यहॉ कवि का झुकाव मुक्तक की तरफ बढ रहा है। जिस समय तुलसी का आविर्भाव हुआ, मुगल साम्राज्य का चरमोत्कर्ष था। यथार्थवादी दृष्टिकोण

---

1 ठूॅठ अनामिका निराला रचनावली भाग (1) पृष्ट–352
2 ठूॅठ अनामिका निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ–352

का सकेत और भारतीय सास्कृतिक दृष्टि का पराभव को कवि ने देखा, लोग अधर्मी होते जा रहे थे। इस काव्य के माध्यम से तात्कालिक शासन व्यवस्था पर कवि ने करारी चोट की है। 'निराला' के 'तुलसी' मे सस्कृति की सर्जनात्मकता के प्रश्न को उठाने वाली 'मानसिकता' सस्कारशील शब्दो मे मैत्री करती है। छन्द की मौलिक प्रकृति और उसका कसाव, शब्दो के जटिल रूप, सूक्ष्म–गम्भीर कल्पनाए इस काव्य को सामान्य की चिन्ता मे विशिष्ट बना देती है। कवि के शाब्दिक स्वेच्छाचार या दूसरी तरह से कहना चाहे तो भाषागत् अभिजात्य का 'राम की शक्तिपूजा' से भी अच्छा उदाहरण 'तुलसीदास' मे देखा जा सकता है। क्योकि यहॉ कवि सस्कृत के कोशवाची शब्दो का भरपूर उपयोग करता है, इतना ही नही, उनमे यथोच्छित अर्थ भी अनुस्यूत करता है।

> ''अब, धौत धरा, खिल गया गगन,
> उर–उर को मधुर, तापप्रशमन
> बहती समीर, चिर–आलिगन ज्यो उन्मन।
> झरते है शशधर से क्षण–क्षण
> पृथ्वी के अधरो पर निःस्वन
> ज्योतिर्मय प्राणो के चुवन, सजीवन।।''[1]

<u>'कुकुरमुत्ता' मे भाषा का अति–यर्थाथवादी धरातल</u>–शब्दो के अभिजात सस्कार का इतना दूरगामी उपयोग के बाद 'कुमुरमुत्ता' (1942) की रचना अपने आप मे एक सुखद आश्चर्य है। 'कुकुरमुत्ता' जन–सामान्य से रची–बसी भाषा में घोषणापूर्वक रचनात्मक उपयोग की शुरूआत करता है। सत्य बात तो ये है कि निराला ने भाषा के प्रयोग मे अपना आदर्श–गुरू, पडित ''अयोध्या सिह उपाध्याय हरिऔध'' को बनाया। उपाध्याय जी ने जहॉ 'प्रिय–प्रवास' मे रूपोद्यान प्रफुल्लपाय,

---

1 ''तुलसीदास निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ–283

कलिका राकेन्द्र बिम्बानना लिखा, वही 'चोखे' 'चौपदे', 'चुभते–चौपदे' मे उनकी भाषा सर्वथा बदल गयी है। इसी प्रकार निराला की भाषा वर्ण–विषयो के अनुसार अपने तेवर और व्यजना शक्ति को बदलती चलती है। शब्दो के भरपूर और दक्ष उपयोग से कवि ने हिन्दी के अभिजात शब्द–कोश की सवर्द्धना की है। 'कुकुरमुत्ता' के माध्यम से कवि ने एकदम साधारण ग्रामीण और कठोर शब्दो मे भरा–पूरा आत्म–विश्वासी व्यक्तित्व सिरजा है और इस परपरित धारणा को निर्मूल कर दिया है कि कविता की रचना के लिए सस्कारशील शब्द ही उपयुक्त होते है। यहॉ तो उर्दू शब्दो और एक दम ग्रामीण शब्दो मे ठेठ मुहाविरेदानी की सर्वथा नई क्षमता मुखरित हुई है –

"चाहिए तुझको सदा मेहरून्निशा
जो निकाले इत्र, रू, ऐसी दिशा
बहाकर ले चले लोगो को, नही कोई किनारा
जहॉ अपना नही कोई भी सहारा"
ख्वाब मे डूबा चमकता हो सितारा
पेट मे डॅड पेले हो चूहे, जबॉ पर लफ्ज प्यारा।"[1]

'अणिमा'– कवि के जीवन का सन्धि स्थल– 'कुकुरमुत्ता' के बाद कवि का जो काव्य–सग्रह प्रकाश मे आया वो था 'अणिमा'। जो सन् 1943 ई0 मे युग–मन्दिर उन्नाव से प्रकाशित हुई थी । 'अणिमा' मे कवि अपने जीवन की पीडा, छल–छद्म, शोषण आदि की प्रवृत्तिो का निदर्शन (नमूना) प्रस्तुत किया है। कविता देखने मे सरल है, लेकिन गभीर–गूढता को समेटे हुए है। कुछ–एक प्रशस्तियो, श्रद्धाजलियो को छोड दे तो 'अणिमा' मे अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप दृष्टिगोचर होते है। सवेदना एव भाषा दोनो ही स्तरो पर यह–सकलन कवि–जीवन का सन्धि –स्थल है। जिसमे एक ओर 'गीतिका', 'अनामिका' के तत्सम् गीतो की सी मृदु–गीतात्मकता है, दूसरी

1 'कुकुरमुत्ता'–निराला रचनावली–भाग–2, पृष्ठ–51

ओर किसी भी प्रकार की लयात्मक उद्‌भावना से युक्त गद्य–कल्प, शब्द–प्रधान कविताएँ है। लेकिन उल्लेखनीय बात यह है कि उत्तरोत्तर अभिव्यक्ति की ऋजुता और उस ऋजुता मे कुशलता से छिपी गहनता की ओर कवि का झुकाव होता जाता है–

> ''उपन्यास लिखा है,
> जरा देख दीजिए।
> अगर कही छप जाए
> तो प्रभाव पड जाय
> तो प्रभाव पड जाय उल्लू के पट्‌ठो पर
> मनमाना रूपया फिर ले लूँ इन लोगो से,
> नए किसी बगले मे एक प्रेस खोल दूँ,
> आप भी वहॉ चले
> चैन की बसी बजे।''[1]

अपने पूर्ववर्ती काव्य के सस्कारनिष्ठ बिम्ब विन्यास की प्रवृत्ति घटती चलती है और बहुत परिचित साधारण वस्तुओ से कवि प्रतीक–बिम्ब का काम लेता है। 'मै अकेला' का कुछ–कुछ तटस्थ सा अवसाद 'हट रहा मेला' और 'कोई नही भेला' के प्रतीको मे मुखरित हुआ है –

> ''पके आधे बाल मेरे,
> हुए निष्प्रभ गाल मेरे,
> 'चाल मेरी मन्द होती आ रही
> हट रहा मेला।
> जानता हूँ नदी झरने,

---

1 मास्को डायलाग्स अणिमा सग्रह निराला रचनावली भाग(2) पृष्ठ–42

जो मुझे थे पार करने,

कर चुका हूँ हँस रहा यह देख

कोई नही भेला।"[1]

'मेला' के हटते जाना जहाँ उत्सव–शून्य वृद्ध जीवन को सामने लाता है वही 'भेला' की अनुपस्थिति आत्म–निर्भर, रचना शील व्यक्तित्व को उजागिर करती है। और 'हट रहा मेला' के विषाद को पीछे कर देती है। विषाद और उपलब्धि की ऐसी ही सह–अवस्थिति की जटिलता को कवि ने कितनी सहजता से आम के सूखी डाल के बिम्ब मे अनुस्यूत कर दिया है। यह 'स्नेह–निर्झर–बह गया' गीत मे देखा जा सकता है। 'गीतिका' के क्लिष्ट शब्दावली मे रचे सिद्धि, आत्म–साक्षात्कार के गीतो के सामने 'अणिमा' का यह गीत दृष्टव्य है– जिसमे सिद्धि का सारा उल्लास और आत्मीय अनुभव बहुत अनौपचारिक ढग से अकित किया गया है।

"मै बैठा था पथ पर

तुम आए चढ रथ पर,

हँसे किरण फूट पडी

टूटी जुड गयी कडी

भूल गए पहर घडी

आयी इति अथ पर।

उतरे, बढ गयी बाँह,

पहले की पडी छाँह,

शीतल हो गयी देह,

बीती अविकथ पर।"[2]

---

1 'मै अकेला'– 'अणिमा' – निराला रचनावली (2)– पृष्ठ – 48

2 'मै बैठा था पथ पर' – 'अणिमा' – निराला रचनावली (2) – पृष्ठ – 48

'अणिमा' की कुछेक कविताएँ ठेठ गद्यात्मक शब्दावली और सरचना की दृष्टि से सफल बन पडी है। 'यह है बाजार' कविता मे गॉव की रखैल प्रवृत्ति पर सूक्ष्म और सीधा व्यग्य किया गया है। वर्णन की नितान्त रूखी समझे जाने वाली किन्तु प्रस्तुत प्रसग मे बेमिसाल लय–शून्य भाषा मे। 'लगेगी न बार' 'बैठाली' व्याही जैसे गॅवार शब्दो का बेलाग प्रयोग देखने योग्य है–

> ''सुखिया बोली अपनी सास को सुनाकर यो,
> मास के पैसे शायद अब तक भी बाकी हो,
> अच्छा है अगर करे पूरी धेली ज्यो त्यो।
> टूटा रूपया खर्च होते लगेगी न बार।''
> दुखिया बोला मन मे, ''ठहर अरी सास की,
> मास खिलाता हूँ मै तुझे अभी रास की
> चोरी है याद मुझे, बात कौन घास की
> बैठाली क्या जाने व्याही का प्यार।।''[1]

'अणिमा' मे प्रयोगवादी ठर्रे की कविता ''चूँकि यहॉ दाना है'' अपनी अजीबो–गरीब सरचना के कारण उल्लेखनीय है। इसकी सवेदना कुछ–कुछ अस्पष्ट और पेचीदी है। तोड–मरोड करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि इस कविता मे आज की पूँजीवादी व्यवस्था पर व्यगात्मक रीति से तीखा आघात् किया गया है। जिसमे सारे सबध, सारे किया कलाप, यहॉ तक की आत्मीय मॉ–बाप का रिश्ता सब पैसे के आश्रित है। 'दाना' का एहसान है–

> ''चूँकि यहॉ दाना है
> इसीलिए दीन है, दीवाना है।
> लोग है महफिल है,
> नग्मे है, साज है, दिलदार है, और दिल है,

---

1 'यह है बाजार' – अणिमा–निराला रचनावली–2, पृष्ठ–92

शम्मा है परवाना है

चूँकि यहॉ दाना है।।"[1]

<u>'बेला' मे कवि का भाषिक–प्रयोगः–</u> विराट रचना के परिपेक्ष्य मे ऐसी भी रचना कवि के भाषा अधिकार की द्योतक है। कवि का यह सग्रह मूलत भाषिक प्रयोग है, जिसमे कवि ने उर्दू गजलो की खानी और लोक–प्रियता से प्रभावित होकर उन्हे हिन्दी गीतो मे ढालने की साहसिक कोशिश की है। लेकिन यह साहसिकता सर्जन के स्तर पर महत्वपूर्ण नही। खासतौर से कवि की विराट–रचना–प्रक्रिया के परिपेक्ष्य मे। हिन्दी शब्दो के अपनी विशिष्ट प्रकृति है और (यह बात हर भाषा के सबध मे सच है।) जिससे वे गजलो की सवेदना को उनके खास ढग के लोच को बहन करने मे फारसी –उर्दू शब्दावली की तरह सक्षम नही हो सकते । इतना जरूर है कि खडी बोली के खडेपन को सवारने मे एक खास ढग से ये कृतकाय हुए है, इनमे उच्चारण सगीत की प्रतिष्ठा हुई है जो इन गीतो के प्रणयन मे कवि का एक विशिष्ट उद्देश्य रहा है। गजलो की परम्परा से अलग कुछ गीत अपनी प्रकृति मे बहुत रचनात्मक बन पडे है।

"मिट्टी की माया छोड–चुके

जो, वे अपना घट फोड चुके।

नभ की सुदूरता से ऊॅचे

जीवन के क्षण अब है छूॅछे,

आकर्षण के अभियानी के

गतिक्रम को जब वे तोड चुके।"[2]

---

1 'चूॅकि यहॉ दाना है' – अणिमा – निराला रचनावली भाग–2, पृष्ठ–114

2 'मिट्टी माया छोड चुके' – बेला – निराला रचनावली (2)–पृष्ठ–137

काव्य भाषा के विकास–क्रम मे कुछ गीत गजलो की परम्परा मे बहुत ही अच्छे बन पडे है, जिनमे हिन्दी और उर्दू के शब्दो का समन्वय कुछ इस प्रकार का हो गया है मानो कविता के प्रवाह मे बह रहे है –

"गिराया है जमी होकर, और छुटाया आसमॉ होकर।
निकाला, दुश्मनेजॉ, और बुलाया मेहरबॉ होकर।
चमकती धूप जैसे हाथवाला दबदबा आया,
जलाया गरमियॉ होकर, खिलाया गुलसितॉ होकर
उजाडा है कसर होकर, बसाया है असर होकर,
उखाडा है रवॉ होकर लगाया बागबॉ होकर।"[1]

'निराला के काव्य–भाषा के विकास–क्रम मे उनके कुछ शब्द–प्रयोगो का उल्लेख करना आवश्यक होगा– विशेषकर वहॉ जहॉ कवि ने हिन्दी–उर्दू शब्दो का समन्वय या समास से नई रचनात्मकता विकसित करना चाहा है, किन्तु वे प्रयोग सफल नही बन पडे है, जैसे–

"जडता तामस, सशय, भय, बाधा, अन्धकार,
दूर हुए दुर्दिन के दु ख, खुले बन्द द्वार
जीवन के उतरे कर, ऑखो को दिखा सार,
छुई बीन नये तार कस–कस कर।"[2]

<u>'नए पत्ते' मे सपाट–बयानी'–</u> 'नए पत्ते' 1946 भाषा और सवेदना दोनो सन्दर्भो मे कवि का विशिष्ट सकलन है। कविता को तमाम वाह्य उपकरणो से मुक्ति दिलाकर उसे स्वायत्त बनाने की चेष्टा 'नए–पत्ते' की खास विशेषता है। इस सकलन मे सग्रहीत कविताओ की सपाट–बयानी हिन्दी कविता की एक अप्रतिम

---

1 गिराया है जमी होकर .बेला निराला रचनावली भाग (2)– पृष्ठ – 138

2 वही राह देखता हूँ बेला निराला रचनावली भाग (2) पृष्ठ–175

उपलब्धि है। बेहद ठडक पडने से सारी फसल नष्ट प्राय हो गयी है, खेतिहर निराश हो चुके है, कवि इस कठोर ऋतु के वर्णन को प्रमाणिक बनाने के लिए उसी से 'सिरजी'[1] भाषा का उपयोग करता है और तभी उसकी अनौपचारिकता मे भरा–पूरा व्यक्तित्व उभरता है–

"एक हफ्ते पहले पाला पडा था
अरहर कुल की कुल मर चुकी थी।
हवा हाड तक बेध जाती है
गेहूॅ के पेड ऐठे खडे है,
खेतिहरो मे जान नही
मन मारे दरवाजे कौडे ताप रहे है
एक दूसरे से गिरे गले बाते करते हुए
कुहरा छाया हुआ।।"

सुखद आश्चर्य इस एहसास से उपजता है कि ऐसी बेलौस भाषा 'स्वशब्द वाच्यत्व'[2] से एकदम अलग है। और यही पर कविता कविता बनती है। नारेबाजी प्रचार के विल्कुल विपरीत। 'अरहर' का कुल का कुल मरना, हवा का हाड तक बेधना, गेहूॅ के पेड का ऐठे खडा होना, बेजान खेतिहरो का एक दूसरे से गिरे–गले बाते करना, यह है शब्दो की बनाबट, जिसमे पाले की स्थिति सजीव हो उठती है।

<u>निराला की काव्यात्मक सर्जना का अन्तिम रूपः–</u> निराला के काव्य विकास कम का अन्तिम सोपान 'अर्चना', आराधना', 'गीत–गुज' और 'सान्ध्य काकली' के रूप मे सामने आता है। इन सभी सग्रहो मे कुछ पुरानी रचनाएँ और कुछ नयी

---

1 'सिरजी' का शाब्दिक अर्थ–निर्मित पानी बनी हुई।

2 'स्वशब्द वाच्यत्व'– एक पारिभाषिक शब्द है यथा जिस रस मे कविता की जाए उसमे उस रस का नामोल्लेख न किया जाए, 'स्वशब्द वाचक' शब्द वाचक शब्द का दोष है कि हास्य रस की कविता मे हास्य शब्द का प्रयोग नही होना चाहिए। कवि जिस विषय को वर्णित करना चाहता है उसका नामोल्लेख नही करता।

रचनाएँ सकलित हुई है। 'सान्ध्य–काकली' को छोडकर शेष सभी रचनाए उनके जीवन–काल मे ही प्रकाशित हो गयी थी, 'सान्ध्य काकली' का प्रकाशन (1969) मे उनके मरणोपरान्त हुआ। ये सारी रचनाएँ निराला के काव्य विकास–कम को कोई नया आयाम नही दे पाती है। प्रथम दृष्टया इनको देखने से ऐसा लगता है कि निराला एक बार फिर पिछे लौट गए है। जहॉ तक निराला की धर्म–भावना का सवाल है वो अन्त तक उनमे बनी रही, उन पर 'वेदान्त' का भी गहरा असर है, लेकिन अनेक बार इसका अतिकमण भी किया है। एक जगह 'मार्क्स' ने लिखा है, ''धार्मिक वेदना एक साथ ही वास्तविक वेदना की अभिव्यक्ति और वास्तविक वेदना के विरूद्ध विद्रोह भी है''। निराला के इस अन्तिम चरण के काव्य को इसी दृष्टि से देखना उचित होगा। उनकी एक अन्नयतम् विशेषता यह भी है कि वे ग्राम्य जीवन के बिल्कुल निकट स्थित है, जो उनके अन्तिम चरण की रचनाओ पर ग्राम्य–जीवन, ग्राम्य–सस्कृति के अद्भूत आत्मीय वर्णन के रूप मे दिखाई देता है। यशस्वी कवि और समीक्षक डा0 केदारनाथ सिह ने निराला की इस चरण की कविता को ''परदेश से घर लौटे हुए कवि की कविता'' जैसी संज्ञा से अभिहीत करते है।

अध्याय-3

''लौंजाइनस के उदात्त-तत्व सिद्धान्त के आधार पर निराला काव्य का अध्ययन''

पिछले दोनो अध्यायो मे बताया जा चुका है कि लौजाइनस के 'उदात्त तत्व' की विशेषता क्या है? और निराला के सर्जनात्मक आयाम को कमवार प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय मे लौजाइनस के उदात्त–तत्व सिद्धान्त के पॉचो आयामो को कमवार निराला की कविताओ पर इसी के परिपेक्ष्य मे मूल्याकन करने का प्रयास किया गया है।

लौजाइनस का पहला सिद्धान्त है–'महान अवधारणो की क्षमता'। लौजानइस के अनुसार उस कवि की कृति महान नही हो सकती जिसमे धारणाओ की क्षमता का अभाव हो, उदात्तता महान–विचारो मे आश्रय पाती है, क्षुद्र विचारो मे नही। तात्पर्य यह है कि उसी कवि की कृति महान हो सकती है, अनुकरणीय हो सकती है, साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकती है, काव्य सिद्धान्तो की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकती है जिसमे महान विचारो की क्षमता हो। निराला के अन्दर वो सारे गुण मौजूद थे, जिसका प्रतिपादन लौजाइनस ने उदात्ततत्व के सिद्धान्त के रूप मे किया है। कवि को महान बनने के लिए अपनी आत्मा मे उदात्त–विचारो का पोषण करना होता है, ताकि वह गभीर विचारो वाले शब्दो का सर्जनात्मक प्रयोग कर सके। महान कवियो की कृतियो के पारायण से जो सस्कार प्राप्त होते है, वे निश्चय ही श्रेष्ठ रचना के प्रणयन मे सहायक होते है। विज्ञ पाठक निराला जी की महनीयता से अपरिचित नही है। वे जितने उदात्त थे उतने ही सहृदय और करूणापूर्ण भी। हिमालय के समान व्यक्तित्व की विशालता लिए हुए उनकी सहज द्रवण–शीलता, करूणा की गगा बन जाती थी और उस समय के किसी के भी दु ख को दूर करने मे अपना सब–कुछ त्याग सकते थे। किसी दीन–दलित के वेदना विह्वल क्षणो मे उनका रक्षा कवच बन जाना तथा अपने हृदय रस के अमृत से सरावोर कर उसे निर्भय होने का आश्वासन देना निराला जैसे पर–दुख कातर का ही काम था। व्यक्ति

की भॉति ही सामाजिक एव राष्ट्रीय जीवन के दैन्य–दुरित–निवारण हेतु उनके अन्तस् का करूणा सागर विक्षुब्ध हो उठता था।

'निराला के जीवन' का बहुत कुछ भाग बगाल मे बीता था, जो 'स्वामी–विवेकानन्द' के प्रभाव क्षेत्र मे आता था। रामकृष्ण–मिशन के दार्शनिक पत्र 'समन्वय' के सम्पादक भी कुछ दिनो तक वे (निराला) रहे। स्वामी विवेकानन्द की कुछ रचनाओ का उन्होने अनुवाद भी किया था, कहने का तात्पर्य यह है कि निराला का जीवन–दर्शन रामकृष्ण–मिशन और 'स्वामी विवेकानन्द' से अवश्य प्रभावित रहा होगा।

"भूलकर जब राह, जब जब राह भटका मै
तुम्ही झलके हे महाकवि,
सघन तम की ऑख बन मेरे लिए।।"

कवियो के कवि 'शमशेर' का महाप्राण निराला के सबध मे यह कथन और केदारनाथ अग्रवाल के कि–

"तुम हमारे मूर्तिकार ,
हम तुम्हारी मूर्ति है।।"

से निराला के कवि व्यक्तित्व का या उनकी महान अवधारणाओ का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह स्वीकारोक्तियॉ केवल दो विशिष्ट कवियो की ही नही है बल्कि पूरे हिन्दी साहित्य की है। कहने का तात्पर्य यह है कि सर्वग्राह्य वही हो सकता है जो महान धारणाओ की अवधारणा करे, और एक बहुत बडे जनमानस को प्रभावित करे, कवि की महान अवधारणाओ के सबध मे उपरोक्त पक्तियॉ दृष्टव्य है।

सामाजिक यथार्थ विषयक औदात्य–

महाकवि के पात्र पूरे परिवेश और उसकी सामाजिकता को उजागर करते है। कथा साहित्य हो उपन्यास हो, कहानी हो, रेखाचित्र हो, या कविता। निराला

अपने पात्रो को गढते समय न केवल पात्रो के चरित्र का उदात्तीकरण करते है, वरन् वे उन्हे अन्याय, शोषण और रूढियो के खिलाफ मानवीय मूल्यो के उस धरातल पर चारित्रिक गरिमा के साथ उनके पूरे व्यक्तित्व को उभारकर प्रस्तुत करते है। निराला ने काव्य साहित्य के साथ–साथ अपने गद्य साहित्य मे भी भारतीय नारी की तेजस्विता व गरिमा को बरकरार रखा है। वह अपने कुल, पद, मर्यादा और नारीत्व के सम्मान को बखूबी केवल जानती ही नही है अपितु प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए लगातार सघर्ष भी करती रहती है।

'विधवा' कविता भी कवि की प्रगतिवादी, यथार्थ–वादी दृष्टि की परिचायक है। जिसमे कवि की लेखनी समाज द्वारा उपेक्षित तिरस्कृत, अवलोहित वैधव्य के एकाकी, करूण और पीडामय जीवन का चित्र उपस्थित करती है।

"वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा–सी
वह दीप–शिखा सी शान्त भाव मे लीन।
वह क्रूर काल–ताण्डव की स्मृति रेखा–सी
वह टूटे तरू की छुटी लता–सी दीन
दलित भारत की ही विधवा है।"[1]

'विधवा' कविता सामाजिक रूढियो से सबधित एक क्रान्तिमूलक चेतना के रूप मे व्यक्त हुई है और वह यथार्थ जीवन को स्पर्श करने वाली उनकी काव्य–चेतना का जब काव्योचित सरसता के साथ ही औदात्य तत्व को सवहन करते हुए प्रगट होती थी तो ऐसा प्रतीत होता था कि उनकी काव्यात्मक चेतना का धरातल अन्य यथार्थवादी चित्रकारो की तुलना मे सर्वथा भिन्न है। यथार्थवादी चित्र गुप्त, दिनकर जी ने भी किया है लेकिन निराला का यथार्थवादी औदात्य औरो से भिन्न है।

---

1 'भारत की विधवा' निराला रचनावली भाग (1) परिमल मतवाला साप्ताहिक पृष्ठ–72

'विधवा' के लिए ''इष्टदेव के मन्दिर की पूजा–सी'' जैसा बिम्ब कोई महान अवधारणा वाला कवि ही दे सकता है। 'मन्दिर की पूजा सी' कहते ही भारतीय विधवा की वह पवित्र–मूर्ति पाठक के सामने उपस्थित हो जाती है, यह केवल मूर्ति ही नही होती है बल्कि उसका पूरा भारतीय सस्कार पूरी सादगी पवित्रता के साथ उपस्थित हो जाता है ऐसी कल्पना महाकवि निराला के यहॉ ही सभव है। निराला के परवर्ती काव्य की दूसरी शैली जो हास्य–व्यग्य और विनोद प्रधान है, जिसमे उन्होने 'कुकुरमुत्ता' की रचना की है, इस तरल शैली भी कही जा सकती है, यह बोल–चाल का ही नही दैनिक जीवन मे बरते जाने वाले कटाक्षो और अपशब्दो का भी प्रयोग करती है।

निराला की ये काव्य–शैलियॉ एक दूसरे से इतनी स्वतन्त्र है और अपने मे इतनी सशक्त भी है कि उन्हे किसी वृहत्तर वृत्त मे रखकर नही देखा जा सकता और न किसी लघुतर वृत्त मे रखा जा सकता है। काव्यवस्तु और काव्यशैली का सामजस्य प्रस्तुत करने वाले ये सुस्पष्ट एव अनिर्वाय शैली प्रयोग है। इतना बडा महान अवधारणाओ की क्षमता वाला कवि हिन्दी काव्य में तो है ही नही, नवयुग के सम्पूर्ण भारतीय साहित्य मे भी मुश्किल से मिलेगा।

''अबे! सुन बे, गुलाब
भूल मत गर पाई खूशबू रगो आब
खून चूसा खाद का तूने आशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपटलिस्ट!
x x x
कली जो चटकी अभी
सुखकर कार्टो हुई होती कभी
रोज पडता रा पानी

तू हरामी खानदानी।।"[1]

'कुकुरमुत्ता' निराला की उन गिनी– चुनी रचनाओ मे है जिस पर अनगिनत आलोचको ने टिप्पणियॉ की है। किसी ने इसे अभिजात्य से मुक्ति की सज्ञा दी है, तो किसी ने कुछ और। यहॉ निराला ने एक तरफ गुलाब को रखा है तो दूसरी तरफ कुकुरमुत्ता को। गुलाब जहॉ एक तरफ सभ्य समाज का प्रतीक है वही कुकुरतमुत्ता असभ्य समाज का, गुलाब का बडप्पन इस बात मे है कि वह 'कुकुरमुत्ता' द्वारा बार–बार की गयी टिप्पणियो का कोई जबाब नही देता। यही से कवि की भूमिका प्रारम्भ होती है, यही वह उदात्तता है जिससे समाज को महान अवधारणाओ की क्षमता का एहसास होता है। इस तरह का उदात्त अन्यत्र असभव है।

प्रकृति के मानवीकरण मे कवि का औदात्य –

औदात्य की अवधारणा 'सन्ध्या–सुन्दरी' मे सिर्फ मानवीकरण की दृष्टि से ही देखा गया है –

"दिवासान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है।
वह सन्ध्या–सुन्दरी परी –सी,
धीरे–धीरे–धीरे,
तिमिराचल मे चचलता का नही कही आभास,
मधुर–मधुर है दोनो उसके अधर–
किन्तु गम्भीर–नही है उसमे हास विलास।।"[2]

---

1. कुकुरमुत्ता निराला रचनावली (1) हस मासिक 3 अप्रैल 1941 – पृष्ठ – 50
2 सध्या–साप्ताहिक परिमल मे सकलित निराला रचनावली(1)मतवाला साप्ताहिक **24** नवम्बर 1923 पृ0–77

सन्ध्या का आगमन होता है तो स्तब्धता का एक वातावरण सा बन जाता है। स्तब्धता व्यापारो की सूक्ष्म अभिव्यक्ति निराला जी के औदात्य मे ही सभव है, इसमे ध्वनि–चित्र नही है, एक शान्ति का चित्र दिया गया है। चित्रो का ऐसा सूक्ष्म एव सर्वांगपूर्ण चित्रण कुशल–चितेरा और निपुण कलाकार ही कर सकता है। सन्ध्या का इतना सजीव मानवीकरण का चित्र   कवि की उदात्त–भावना को ही प्रस्तुत करता है। जैसा कि कविता का शीर्षक ही है सन्ध्या को एक सुन्दरी के रूप मे कवि उपस्थित करता है जो दिन के अवसान के बाद आसमान से सजधजकर ऐसी उतर रही है जैसी कोई प्रौढा नायिका नायक से मिलने के लिए सजधजकर आ रही हो। यहॉ पर कवि ने सन्ध्या–सुन्दरी के हास की कल्पना उसके उज्जवल कोमल एव वेदाग चरित्र से की है ऐसा कल्पना महान अवधारणाओ की क्षमता वाला कवि ही कर सकता है।

सौन्दर्य के मॉसल चित्रण मे कवि का औदात्य :–

रीति कालीन कवियो मे स्थूलता, ऐन्द्रियता, स्थिरता आयी उसके उत्तर मे छायावादी कवियो द्वारा श्रृगारिकता का एक सफल प्रयोग किया गया है–

> "बन्द कचुकी के सब खोल दिए प्यार से
> यौवन–उभार ने,
> पल्लव–पर्यनत पर सोती शेफालिके
> मूक आह्वान–भरे लालसी कपोलो के।
> व्याकुल विकास पर
> झरते है शिशिर से चुम्बन गगन के।"[1]

1 मतवाला साहित्य कलकत्ता   परिमल   निराला रचनावली भाग (1,

सौन्दर्य का उदात्त–चित्रण 'निराला' जैसा पूर्ण–व्यक्तित्व वाला कवि ही कर सकता है। 'शेफालिका' अपने पूर्ण–यौवन पर है, शेफालिका रूपी पुष्प के पूर्णयौवन को कवि ने एक सद्य यौवन युवती के रूप मे देखा है। किसी को उनकी यह कविता यौवन का मॉसल चित्रण लग सकती है। लेकिन किसी महान अवधारणा वाले व्यक्ति के लिए एक दिव्य भव्य चित्र का उदाहरण हो सकती है।

वैयक्तिक दु खानुभूति का औदात्य –

कवि निराला अपनी दु खानुभूति को, जो कि उनकी निजी थी, एक ऐसी उदात्त–स्थिति पर पहुँचा दिया जहॉ वे सारी भौगोलिक और दैहिक सीमाऐ पार कर सार्वजनीन और सार्वकालिक हो गए –

"पुष्प–मजरी के उर की प्रिय,
गन्ध–मन्द गति ले आओ।
नव जीवन का अमृत–मन्त्र–स्वर
भर जाओ फिर भर जाओ।
यदि आलस से विपथ नयन हो
निद्राकषर्ण से अति दीन,
मेरे वातायन के पथ से
प्रखर सुनाना अपनी वीन।
x x x
वीणा की नव चिरपरिचित तब
वाणी सुनकर उठूॅ तुरन्त।
समझूॅ जीवन के पतझड मे

आया हॅसता हुआ बसन्त।।"[1]

यह देखकर आश्चर्य होता है कि दुखो से निरन्तर घिरा रहने वाला और सघर्षो से जुझते रहने वाला व्यक्ति जब कोई सर्जनात्मक अभिव्यक्ति देता है, तो वह उस पूरे परिवेश मे पुष्प– मजरी की सुगन्ध और नव–जीवन का अमृत मन्त्रसर भर देना चाहता है। ऐसी विरोधी रचना –धर्मिता निराला जैसे महान अवधारणाओ वाले कवि के यहॉ ही सभव है। पतझड के बीच हॅसते हुए बसन्त की कल्पना कोई विराट ह्रदय वाला कवि ही कर सकता है।

'सरोज–स्मृति' निराला जी की एक प्रसिद्ध रचना है। कहने को तो आलोचको ने इसे शोक–गीत की सज्ञा दी है। शोक– गीत का इससे अच्छा उदाहरण हिन्दी–साहित्य मे फिलहाल बिरले ही है। इससे सरोज के बहाने कवि के कटु जीवनानुभव के विभिन्न–आयाम परत–दर–परत खुलते जाते है। लेकिन इस कविता मे कवि ने अपने आर्थिक–सघर्षो का लेखा–जोखा प्रस्तुत नही किया है बल्कि अपने उत्कृष्ट विचारो को सर्जनात्मक जामा पहनाकर एक उच्च–कोटि की रचना की है।

"धीरे–धीरे फिर बढा चरण,
बाल्य की केलियो का प्राद्रगण।
कर पार कुज तारूण्य सुघर,
आयी लावण्य भार–थर–थर।
कॉपा कोमलता पर सस्वर,
ज्यो 'मालकौश' नववीणा पर "[2]

पिता के मुख से पुत्री के तारूण्य का वर्णन कोई सहज काम नही है। किन्तु निराला जी ने एक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जो चित्र दिया है, उससे इस

1 बसन्त समीर परिमल निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ–192
2 सरोज–स्मृति निराला रचनावली(1) द्वितीय अनामिका सुधा 9 अक्टूबर 1935 पृ0–319

दोष का परिहार हो जाता है। यहॉ रचनाकार की सिर्फ कवि दृष्टि है। जब रचनाकार किसी का वर्णन करता है तो उसके सर्वांग चित्रण मे उसकी दृष्टि उलझती है। तारूण्य का भाव सौन्दर्य के कारण आया है। कवि उसके सौन्दर्य को रूपायित करना चाहता था। सौन्दर्य को सर्वागपूर्ण बनाने के लिए सतत् प्रयत्नशील है। कवि के रूप मे निराला जी की कविता पूरी तरह दोष–मुक्त है। पुत्री का वर्णन करते समय निराला जी के मन मे वात्सल्य रस आया वात्सल्य का चित्र खीचते–खीचते यौवन का चित्र आया तो वात्सल्य कट गया तो सम्पूर्ण चित्र एक सफल रचनाकार का हो गया। वात्सल्य और श्रृगार का समवेत चित्रण अमनोवैज्ञानिक है यहॉ पर कवि पिता नही रचनाकार का रूप हो जाता है। क्योकि वात्सल्य एव श्रृगार दुरभि सन्धि की प्रतीक है। वहॉ जाते–जाते कवि की दृष्टि सौन्दर्य पर जुड गयी। उस समय कवि के सामने सरोज नही थी बल्कि कवि एक नवयुवती का चित्र खीच रहा है। क्योकि रस की दृष्टि मे साधारणीकरण हो गया। रचनाकार पिता नही रह गया लडकी एक सामान्य युवती और निराला रूपी पिता कवि रूपी 'निराला' हो गया।

अपनी ही पुत्री के सौन्दर्य को काव्य मे तिरोहित करना सहज बात नही हो सकती। सरोज के सौन्दर्य का रेखाकन जिसमे वात्सल्य की लहरिल धारा प्रवाहित हो रही हो और यौवन का सौन्दर्य भी झॉकता हो, ऐसा चित्र कवि निराला ही खीच सकते है। पुत्री की यौनोचित चचलता को नववीणा पर 'मालकौश' राग के कोमल स्वरो के झकृत जैसा बिम्ब देकर कवि ने जिस उदात्त भाव का परिचय दिया है वह अन्यत्र सभव नही है सरोज के सौन्दर्य मे सम्पूर्ण आकाश और पृथ्वी तथा पृथ्वी के अनेक सर्जनात्मक आयाम मानो एक साथ समाहित हो गए हो। इनको पढने पर कवि वर बिहारी की यह पक्तियॉ बरबस खीचती है–

"भूषन भार सम्हारिए,
क्यो यह तन सुकुमार,
सूखे पॉव न धरि परै,
शोभा ही के भार।।"

दार्शनिक दृष्टि –

जिस प्रकार निराला जी प्रकृति मे नारी का सौन्दर्य देखते थे उसी प्रकार उनकी रहस्यमयी कविताओ मे दर्शन का पुट स्वयमेव झलकने लगता है –

" होगा फिर से दुर्घर्ष समर,
जड से चेतन का निशिवासर।
कवि का प्रतिदिन से जीवन–भर,
भारती इधर है उधर सकल।
जड जीवन के सचित कौशल,
जय ईधर ,ईश है उधर सबल माया कर।।"[1]

व्यक्ति की भॉति ही सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के दैन्य–दुरित निवारण–हेतु उनके अन्तस् का करूणा–सागर विक्षुब्ध हो उठता था। तभी वे जडता की रावणीवृत्तियो से चेतना के रामत्व का शास्वत सघर्ष कराते है और जीवन की हरीतिमा को चर जाने वाली प्रत्येक शक्ति से यावज्जीवन लडने की चुनौती स्वीकार करते है। वह त्रेता का मिथक है, मध्य–युगीन सस्कृति की आकाक्षा है, और आधुनिक युग की आवश्यकता भी है। सचित कौशल की जडता उनकी सारस्वत–साधना के चरण–चूमती है। मायाबी कितना ही बलवान

---

1 तुलसीदास निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ–305 मासिक–पत्रिका 'सुधा' सन् 1934ई0

क्यो न हो अतत उसे अध्यात्य एव देवत्व के आगे विनत–विनम्र होना ही पडता है।

अभेद एव अखण्ड़ता की दृष्टि–

कवि तात्कालिक वैमनस्यता एव कटुता तथा जाति के नाम पर धर्म के नाम पर आपसी टकराव को समाप्त करके राष्ट्र के नव–निर्माण मे जुट जाने का आह्वान करता है–

"हो रहे आज जो खिन्न–खिन्न।
छुट–छुटकर दल से भिन्न–भिन्न,
यह अकल–कला गह सकल छिन्न, जोडेगी,
रवि–कर ज्यो विन्दु–विन्दु जीवन
सचित कर करता है वर्षण
लहरा भव–पादव–मर्ष–मन मोडेगी।।"[1]

कवि का विश्वास है कि विभिन्न जातियो, धर्मो के बीच जो भेद की दीवारे खडी है वे टूट जाऍगी। तुलसी की ईश्वरीय कला सभी को परस्पर एकता के सूत्र मे आवद्ध करेगी। जैसे सूर्य की किरणे एक–एक बूँद जल खीचकर बादल बनाती है उसकी वर्षा मे मुर्झाए प्राणो की हरीतिमा लौट आती है। उसी प्रकार तुलसी का नाना–पुराण निगमागम–सम्मत ज्ञान ऐसे 'मानस' की पुष्टि करेगा जिसके प्रभाव से धरती पर मूल्य एव नैतिकता का साम्राज्य पुन स्थापित होगा। यहॉ निराला के इस रविकर ज्यो–ज्यो, विन्दु–विन्दु जीवन पर महाकवि कालिदास के रघुवश की 'सहसगुण मुत्स्रष्टुम आदत्ते हि रसं रवि' जैसी पक्तियो का स्पष्ट प्रभाव दिखायी पडता है इस धरती पर आसुरी

---

1 'तुलसीदास' निराला रचनावली पृष्ठ–306 'सुधा मासिक रचना 1943'

अत्याचार बढता है किन्तु हमारे बीच कोई राम नही है जो यह प्रण कर सके कि "निसिचर हीन करऊँ महि" राम का यह शौर्य सुप्त हो गया है उसकी वीरता का आभूषण छिप गया है अत यह चिन्ता किसी दयालु हृदय मे ही जाग सकती है।

आत्म–विश्वास की दृढ़ता–

कवि निराला का पूरा जीवन उतार चढाव एव दुख सुख के झझावातो से परिपूर्ण था। कवि इसके बाद भी अपने आत्म–बल एव दृढता से पूरी तरह लवरेज दिखाई देता है–

करना होगा यह तिमिर पार
देखना सत्य का मिहिर द्वार
बहना जीवन के प्रखर ज्वार मे निश्चय
लडना विरोध से द्वन्द–समर
रह सत्य–मार्ग पर स्थिर निर्भर
जाना–भिन्न भी देह, निज घर नि सशय।।"[1]

जहॉ निराला इस तरह की प्रेरणा देते हुए दिखाई देते है वहॉ हमे उस वैदिक ऋषि की स्मृति हो आती है जो पूषन् से प्रार्थना करता है कि–

"हिरण्य मयेन पात्रेण
सत्य स्यापिहितम् मुखम्
तत्व पूषन्नपावृणु।
सत्य धमाये द्रष्टये।।"[2]

1 'तुलसीदास ' निराला रचनावली(1) पृष्ठ289 सुधा–मासिक रचना–1934
2 ईशावास्येनिषद् – 15

निराला की महान अवधारणाओ की क्षमता के उदाहरण के रूप मे और भी कई कविताएँ प्रस्तुत की जा सकती है। उनकी तीन और प्रसिद्ध कविताएँ, 'सरोज–स्मृति', 'राम की शक्तिपूजा', और 'कुकुरमुत्ता' को यहाँ उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

आवेग–मूलक भयकरता.–

'राम की शक्ति–पूजा' कवि की एक उत्कृष्ट रचना है, इस रचना मे उदात्त–शैली के वे पाँचो तत्व दिखाई देते है, जिसका प्रतिपादन लौजाइनस ने अपने उदात्त–सिद्धान्त मे किया है। इसमे एक ओर आकाश, समुद्र, मेघमडक, वायु–वेग, दिगन्तव्यापी अन्धकार दुर्गम् पर्वत ज्योति प्रपात आदि भौतिक परिवेश के विराट बिम्ब है। और दूसरी ओर योग–विद्या सहसार आदि चको के अलौकिक बिम्ब है। इस कविता मे ओज का प्राधान्य है। तत्सम् शब्दो का प्रभावी प्रयोग है, किया पदो से मुक्त सघन शब्दावली का प्रयोग है तथा परिपुष्ट शब्द–योजना है।

"ये अश्रु राम के आते ही मन मे विचार,
उद्वेल हो उठा शक्ति–खेल–सागर अपार,
हो श्वसित पवन–उनचास, पिता–पक्ष से तुमुल
एकत्र वक्ष पर बहा वाष्प को उडा अतुल,
शत घूर्णावर्त, तरग–भग उठते पहाड
जल राशि–राशि जल पर चढता खाता पहाड
तोडता बन्ध–प्रतिसघ धरा, हो स्फीत–वक्ष
दिग्विजय–अर्थ प्रतिपल समर्थ बढता समक्ष।"[1]

1 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) द्वितीय अनामिका पृष्ठ–332

प्रस्तुत पक्तियो मे हनुमान के क्रोध का विशद्–चित्रण है। कथा कुछ इसप्रकार है– राम की ऑखो मे ऑसू देखकर उनके प्रिय हनुमान क्रोधित होकर आकाश की ओर दौडते है शक्ति को निगलने के लिए। हनुमान के उसी क्रोध की विशद्ता की तुलना समुद्र की विशद्ता से की गयी है। ऐसी तुलना कोई महान अवधारणाओ वाला कवि ही कर सकता है, यहा सागर के मर्यादाहीन रूप को चित्रित किया गया है। जल–राशि को मथता हुआ वायु भयकर शब्द कर रहा है। यह शब्द की भयकरता कुछ इस प्रकार है मानो बज्र के समान दृढ अग वाले तथा एकादश रूद्र के अवतार हनुमान जी कूद्ध होकर अट्टाहास करते हुए आकाश की ओर बढ रहे है। लेकिन इस भयकरता मे भी जिस तरह की उदात्तता कवि ने दिखाई है, वह निराला के यहॉ ही सभव है।

"उद्दाम प्रेरणा प्रस्तुत आवेग अर्थात्, भावावेग की तीव्रता"

लौजाइनस का विचार है कि जो आवेग, उन्माद, उत्साह के उद्दाम वेग से फूट पडता है और एक प्रकार से वक्ता के शब्दो को विस्मय से भर देता है उसके यथा–स्थान व्यक्त होने से स्वर्ण जैसा औदात्य आता है, वह अत्यन्त दुर्लभ है। भव्य आवेग के परिणाम–स्वरूप हमारी आत्मा स्वत ऊपर उठकर मानो गर्व से उच्च–आकाश मे विचरण करने लगती है, तथा हर्ष एव उल्लास से भर जाती है। बज्रपात का पलक झपकाए बिना सामना सभव है पर भावावेग के प्रभाव से अविचल–अछूता बना रह पाना सभव नही। हमारा स्वभाव है कि हम छोटी–छोटी धाराओ की अपेक्षा महासागर से अधिक प्रभावित होते है। औदात्य मनुष्य को ईश्वर के ऐश्वर्य के समीप तक ले आता है। उल्लास–आनन्द, देश–काल–निरपेक्ष होता है जो सदा सबको आनन्दित करता है वही औदात्य आवेग है। विस्मय विमुग्ध करने वाला चमत्कारी–भाव परिवेश मानव मे गरिमा को जन्म देता है। उदात्त उत्कृष्ट वही है जो पाठक या स्रोता को विमुग्ध या

अविभूत करे। आवेग दो प्रकार का बताया गया है भव्य और निम्न। एक से आत्मा का उत्कर्ष होता है, तो दूसरे से अपकर्ष। निम्न आवेग मे दया, शोक, भय, आदि के भाव आते है। उदात्त सृजन मे वस्तुत भव्य आवेग सहायक होता है।

निराला काव्य का मुखर स्वर है 'उदात्त' उसका सजग गुण है 'ओज'। उसमे ऐसी शक्ति है जो सिद्ध सगीत की तरह मनुष्य की चेतना को ऊपर उठाती है, यह उदात्त–तत्व काव्य की विषय–वस्तु मूर्ति–विधान ध्वनि एव छन्द की लय मे एक साथ व्याप्त रहता है यद्यपि 'उदात्त' भावना के लिए विस्तृत कथा–वस्तु और सूक्ष्म–चरित्र सदा अपेक्षित नही होता है थोडी से सारगर्भित शब्दो मे भी एक विशद् चित्र खीचा जा सकता है। निराला काव्य मे प्रवाह है लेकिन फैलाव नही है भावना घनीभूत होकर कम से कम शब्दो मे प्रकट होती है।

वीर रसात्मक रचना मे विस्तार अधिक है कवि का वस्तु–विधान विषयानुसार छोटा और बडा होता रहता है। अर्थात् कभी वे लघु–चित्रो की उद्भावना करते है और कभी उनका चित्रफलन वस्तु के अनुसार विस्तृत और विषद् होता है। वीर रस की रचनाओ मे निराला का काव्य–शिल्प अधिक प्रसरण–शील हो गया है, हम 'महाराज शिवाजी के पत्र' को देखे अथवा जागो फिर एक बार सर्वत्र दूर–दूर तक वीर–भाव को जगाती हुई निराला की पक्तियॉ वहॉ विराम लेती है। जहॉ पाठक एक लम्बे चित्र का आकलन कर लेने के पश्चात् स्वय विराम चाहता है। जहॉ जहॉ उदात्त की सृष्टि कवि ने करनी चाही है वहॉ वहॉ शिल्प मे इसी प्रकार की सह–प्राणता और आकारगत् प्रसार आ गया है। 'राम की शक्ति–पूजा' हो या 'तुलसीदास' इन दोनो रचनाओ मे महाकाव्योचित औदात्य लाने का कवि का प्रयत्न रहा है। कवि के छन्दो के वाचन मे उतार–चढाव की कला अद्भूत एव विलक्षण थी। 'यमुना के तट पर'

और 'पचवटी प्रसग' तथा 'तुम और मै' की कल्पना–शीलता देखते ही बनती है। 'बादलराग' और 'कुकुरमुत्ता' जैसी कविताएँ कवि के उदात्तीकरण की प्रवृत्ति को एक नया–आयाम देते है। निराला ने अपने काव्य मे उदात्त चित्रो को काव्योचित उत्कर्ष दिया है यह उनकी पाडित्य–शैली भी कही जा सकती है। अपने काव्य मे निराला ने विशाल–चित्र–फलक पर सशलिष्ट और सामासिक भाषा प्रयोगो द्वारा विराट चित्रो की अवतारणा की है।

उज्जवल–उदात्त सास्कृतिक आवेग –

'तुलसीदास' कविता के आरम्भ मे प्राय दस छन्दो तक देश की सास्कृतिक विश्रृखलता एव नैतिक आत्मिक विपन्नता का वर्णन किया गया है। ऐसे वातावरण मे तुलसी जैसे किसी भी स्वाधीन चेतना–सम्पन्न भारतीय के मन मे घुटन–टुटन का अनुभव स्वाभाविक है। इन आरम्भिक छन्दो मे आवेग का निम्न–स्वरूप दिखाई देता है।

"वीरो का गढ, वह कालिजर
सिहो के लिए आज पिजर,
नर है भीतर, बाहर किन्नर–गण गाते,
पीकर ज्यो प्राणो का आसव
देखा असुरो ने दैहिक दव,
बधन मे फॅस आत्मा–बॉधव दुख पाते।

x x x

सोचता कहॉ रे, किधर कूल
बहता तरग का प्रमुद फूल?
यो इस प्रवाह मे देश मूल खो बहता,
'छल–छल–छल' कहता यद्यपि जल,

वह मत्र मुग्ध सुनता कल–कल

निष्क्रिय, शोभा–प्रिय, कूलोपल ज्यो रहता।"[1]

दुख के बाद सुख, निराशा के बाद आशा का आनन्ददायी सचार स्वाभाविक है। जैसे रात के बाद दिन आता है, असफलता से सफलता का प्रस्फुटन होता है। उसी प्रकार मध्यकाल की विषम परिस्थितियो के कुहासे को चीरकर तुलसीदास के रूप मे नवीन सास्कृतिक सूर्य, अनुकूलता का प्रभात लेकर प्रादुर्भूत हुआ। दिगन्त–व्यापी जडता मे यही चेतना भरेगा। कण–कण को यही अपनी भास्वर दीप्ति से आलोकित करेगा। यही सम्पूर्ण देश की आशाओ का केन्द्र बिन्दु है, इसी से सबके स्वप्न साकार होगे। अत इसी सूर्योदय के साथ कविवर निराला देशवासियो को जगाते है और इस महिमा–मण्डित ज्योतिष्मान विराट् नक्षत्र से प्रेरणा लेने की बात करते है। यहॉ उनका भव्य आवेग देखते ही बनता है–

"जागो, जागो आया प्रभात्

बीती यह बीती अन्ध रात!,

झरता भर ज्योतिर्मय प्रपात पूर्वाचल,

बॉधो बॉधो किरणे चेतन।

तेजस्वी है तमजिज्जीवन,

आती भारत को ज्योतिर्धन महिमाबल।।"[2]

तुलसी के रूप मे यहॉ उज्जवल उदात्त–सस्कृति का पुनरूदय हो रहा है, कवि भावावेग से किन्तु उदात्तता को समेटे हुए अपने भारत वासियो का आह्वान कर रहा है कि हे भारतवासियो जागो प्रभात हो गया है। अन्धकार समाप्त हो गया है, देखो! युदचायक से ज्ञान की किरणे का ज्योतित झरना झर

---

1 तुलसीदास निराला रचनावली (1) पृष्ठ – 282, 283
2 'तुलसीदास' निराला–रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 305

रहा है, यहॉ उदात्तता–युक्त भावावेग के समाज को नई, जागृति व नव–चेतना का सचार करता है। युग की कठोर आवश्यकताओ ने इस शक्तिधर शोभाशाली कवि को जन्म दिया है, इसकी ऊर्जस्वित् वाणी मे मुमुक्षुओ को नवीन प्राणोण्या मिलेगी। धरती से छल–कपट द्वेष दभ, दुगुर्ण, दूर, होगे शुभ सात्विक भावो का उदय होगा असत् पर रात की प्रतिष्ठा होगी।

यहॉ काव्य के माध्यम से देवी सरस्वती का मुखरित आवेग जाग उठा। जीवन को जडता के भावो से भरने वाली तथा दूषित भावो रूपी पकिल से युक्त जो सैकडो काव्य कृतियॉ रूपी नदियो के वेग के साथ बहती रहती है–

"देश–काल के शर से विधकर,
यह जागा कवि अशेष छविधर।
इनका स्वर भर भारती मुखर होएगी,
निश्चेतन, निजतन मिला विकल।
छलका शत् शत् कल्मष के छल
बहती जो वे रागनी सकल सोएगी।"[1]

मानस की कथा मे तुलसी के राम ऋषियो का अस्थि–समूह देखकर ऑखो मे ऑसू भर लेते है, फिर यही राम ऋषिमुनियो एव देवताओ को अपने आश्वस्ति वचनो से निर्भय निश्चिन्त बनाते है–

"अस्थि समूह देखि रघुराया,
पूछेउ मुनिन्ह लागि अतिदाया।
निसिचर निकर मुनिन्ह सब खाए,
सुनि रघुवीर नयन जल छाये।
x x x
जानि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा

---

1 तुलसीदास निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ – 306

तुमहि लागि धरिहौ मुनि बेसा।

हरिहऊँ सकल भूमि गरूवाई

निर्भय होउ देव समुदाई।।"[1]

जब यह प्रसग हमारे ध्यान मे रहेगा, तो निराला का आवेग औदात्य कुछ आसानी से समझ मे आएगा, क्योकि यहॉ भी कविराट् तुलसी के प्रयास से वे ऋषिगण–सज्जन बिगुण हर्षित है–

"सुना उर ऋषियो का ऊना,

सुनता स्वर, हो हर्षित दूना।

आसुर भावो से जो भुना, था निश्चल"[2]

लौजाइनस काव्य के मूल्याकन का अधिकारी उसे मानता है जिसमे अनुभव की परिपक्वता हो, उसके लिए जरूरी है कि वह शैली तथा सघटन की उन विशेषताओ की उद्घाटित कर सके, जो उदात्तता के आधार–भूत साधन है। निराला ने अपने काव्य के माध्यम से जो उदात्तता हम पाठक तक पहुँचायी है उसे इस महाकवि ने न सिर्फ अनुभव किया था, अपितु बहुत नही तो कुछ अश जिया भी था। यह कवि के काव्य की विशेषता ही रही है कि उनका काव्य चाहे यर्थाथवादी हो चाहे व्यक्तिवादी, या सामाजिक यथार्थ हो या वैयक्तिक दुखानुभूति रही हो निराला जी अपने आत्म–विश्वास की दृढता, आवेग–मूलक भयकरता एव अभेद अखण्डता की दृष्टि को औदात्य के रूप मे पिरोने का एक सफल प्रयास किया है। लौजाइनस के अनुभव की परिपक्वता का भाव स्पष्ट है जो उस परिस्थिति को जॉचा–परखा हो या यो कहे कि वास्तविक जीवन मे भी अनुभव किया हो, कवि की जीवन–शैली भी कुछ उसके उदात्तरूपी काव्य से भी मेल खाती थी।

---

1 तुलसीदास निराला रचनावली भाग(1)

2 सन्दर्भ रामचरित मानस

नव–जागृति का आह्वानः–

निराला जी ने अपनी कविता 'जागो फिर एक बार' के माध्यम से भारत के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण दिलाकर एव महापुरूषो को प्रेरणा–स्रोत बनाकर, जन–मानस मे नव–जागृति का आवेग भरकर, नई ऊर्जा के साथ राष्ट्र–निर्माण मे अपना योगदान देने का आह्वान करते है। एव नव–जागरण का शखनाद करते है –

"जागो फिर एक बार
समर मे अमर का प्राण
गान गाए महासिन्धु–से
सिन्धु नद तीर–वासी।
सैन्धव तुरगो पर
चतुरग चमू सग
x x x
फाग का खेला रण
बारहो महीनो मे?
शेरो की मॉद मे
आया है आज स्यार।"[1]

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि नवजागरण का आह्वान करता है कि हे सिन्धुतट के निवासियो अर्थात् भारतीयो। एक बार पुन नई ऊर्जा के साथ राष्ट्र–निर्माण मे एक फिरगियो को खदेड बाहर करने का आह्वान करता है, निराला जी कुछ अतीत के दृष्टान्तो के माध्यम से यहॉ के जन–मानस को यह स्मरण दिलाना चाहते है कि उस चतुरगिणी सेना को स्मरण करो जो घोडो पर

1 जागो फिर एक बार भाग (2) परिमल मतवाला साप्ताहिक कलकत्ता पृ0 – 152

सवार होकर महासागर के–से गभीर गर्जन से युक्त स्वर मे युद्ध–गीत गाते है। यह युद्धगीत कहने को एक गीत था लेकिन इसमे रसानुभूति के माध्यम से मन को छू लेने वाली गहराई भी थी, साथ ही साथ उसी गहराई मे जन–मानस को राष्ट्रीयता रूपी आवेग मे सराबोर करने की क्षमता भी। गुरू–गोविन्द सिह की प्रतिज्ञा किसी भी व्यक्ति के अन्दर स्फूर्ति पैदा करने के लिए सजीवनी बूटी का काम कर सकती है। वे गुरू गोविन्द सिह का वीरो के मन को मोहने वाला दुर्जय सग्राम का राग गाते है, वह राग ऐसा मानो उस राग से भारतीय जन–मानस मे उत्साह–रूपी आवेग का सचार हो गया हो। किसी ने ठीक ही कहा था कि गुरू–गोविन्द बारहो महीने खूनो की होलियॉ खेलते थे ऐसे सिह वीरो का निवास–भूमि मे कायर डरपोक लोगो का कोई स्थान नही है।

पुरूषत्व का समावेश –

निराला का स्पष्ट मत था कि वीर भोग्या बसुधरा। इसका यह अभिप्राय कदापि नही था कि पौरूषवान व्यक्ति को ही जीने का अधिकार है बल्कि उनका इशारा अग्रेजी शासन की तरह था, वे देशवासियो का आह्वान अपनी कविता के माध्यम से करना चाहते है। वे सदेश देते थे कि मेरे देशवासियो अगर आपको इन अग्रेज फिरगियो को देश से निकालना है तो पहले अपने पॉवो पर चलने की आदत डालो यानी आत्मनिर्भर बनो।

"सिहो की गोद से
छीनता रे शिशु कौन।
मौन भी क्या रहती वह
रहते प्राण? रे अजान
एक मेषमाता ही
रहती है निर्निमेष।

दुर्बल वह,

छिनती सतान जब।

जन्म पर अपने अभिसप्त,

तप्त ऑसू बहाती है।"[1]

निराला की काव्य शैली उनके काव्य–व्यक्तित्व के आधार पर कई रूपो मे अभिव्यक्त हुई है, सबसे वह स्वछन्द विद्रोहिणी शैली है जो उनके विद्रोही व्यक्तित्व व तद्रुप काव्य–वस्तु का प्रतिनिधित्व करती है निराला की काव्य–शैली का यह कदाचित् यह सबसे अधिक सशक्त स्वरूप है, मानव जीवन की सारी विशेषताओ और रूढियो का आपात विनाश करने वाली भाव–चेतना इसी शैली का आश्रय लेकर प्रस्फुटित हुई है, निराला ने अपने इस काव्य शैली के माध्यम से मानव के पौरूष अशरूपी प्रतीक को उद्धृत किया है। यहॉ कवि अपने आवेगमय कविता के माध्यम से एक दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए जनमानस से यह प्रश्न करता है कि ऐसी शक्ति या साहस किसमे है जो सिहनी की गोद से उसके बच्चे को बल–पूर्वक ले सके, क्या सिहनी अपने जीते जी ऐसा होने देगी? फिर उन्होने भेड का दृष्टान्त देते हुए कहा कि सिर्फ भेड ही ऐसा करने देगी और वह–पुत्र–वियोग मे तडप–तडप कर मर जाती है। फिर पुन प्रश्न करता है कि क्या शक्तिशाली मानव अत्याचार सहकर भी जीवित रह सकता है कदापि नही। अर्थात् कवि का स्पष्ट सन्देश अपने देशवासियो के प्रति है कि वीरभोग्या बसुन्धरा। इस प्रकार निराला जी अपने देशवासियो का आह्वान करते है कि अपनी मिट्टी, अपनी सस्कृति एव अपने पौरूष पर भरोसा करे, उनका समस्त काव्यरूपी व्यग्य वाण चाटुकार भारतीयो के ऊपर होता था। वे उनके जमीर को काव्यमयी व्यग्य बाण से झकझोरते थे और राष्ट्र की मुख्य धारा मे

---

1 जागो फिर एक बार (2) . परिमल निराला रचनावली भाग (1) पृ0–153

शामिल हो जाने का आह्वान करते थे। इस प्रकार निराला जी का देश–प्रेम मुखर है, भेड और बकरी की तरह निरूपाय एव दीन बनकर विदेशी दासता का अभिसप्त जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा मातृभूमि पर शीश चढा देना कही अधिक अच्छा है।

क्रान्ति का मानवीकरण–

निराला ने अपने 'बादलराग' कविता के माध्यम से प्रकृति के विप्लवकारी स्परूप का वर्णन कर रहे है। कवि आवेग से युक्त एव मानवीकरण से परिपूर्ण बादल को पुचकारते हुए मानो उलाहना दे रहा है–

> "बार–बार गर्जन,
> वर्षण है–मूसलाधार।
> हृदय थाम लेता है ससार
> सुन सुन घोर बज्र हुकार।
> अशनिपात से शायित उन्नत–शतशतवीर,
> क्षत–विक्षत हत अचल शरीर
> गगनस्पर्शी स्पर्द्धा धीर।।"[1]

यहाँ कवि अपने 'बादल–राग' कविता के माध्यम से यह दर्शाना चाहता है कि क्रान्ति के समय बडे गर्वीले वीर धराशयी हो जाते है। अर्थात क्रान्ति के लहर के सम्मुख कोई भी शक्ति टिक नही पाता। निराला जी क्रान्ति का आह्वान करते है, सच्चाई भी यही है कि निराला का यह काल बगाल मे रहने का काल था उस समय बगाल प्रदेश–क्रान्तिकारियो की कर्मभूमि बनी हुई थी, पूरे देश मे मानो जुनून छा गया था। सच्चाई तो ये है कि कवि एक

---

1 बादल–राग निराला रचनावली भाग (1) पृ० –

नवजागरण का आह्वान इस काव्य के माध्यम से करना चाहता है। कवि कहता है कि ये विप्लव के बादल! तुम बारबार गरजते हो अथवा मुसलाधार वर्षा करते हो, यानी सामन्ती समाज को चुनौती कवि अपने आवेग–पूर्ण काव्य के माध्यम से देना चाहता है। तुम्हारे घोर और भयकर गर्जन को सुनकर और मुसलाधार वर्षा से त्रस्त्र होकर ससार के प्राणी अपना ह्दय थाम लेते है अर्थात भय से सिहर उठते। तुम वीरो के समान अपना मस्तक ऊपर को उठाए हुए उन सैकडो पर्वत पर बिजलियॉ गिराकर अचल शरीरो को विदीर्ण कर देते है जो ऊॅचाई और धैर्य मे आसमान के बराबरी काव्य करने वाले होते है। सबधित काव्य के माध्यम से कवि ने बादल की तुलना तत्कालीन अग्रेजी शासक से किया है। कवि कहता है कि 'बादल' की तरह धीरे–धीरे कवि ने पूरे सामाजिक परिवेश व वातावरण को चूसा है।

छायावादी काव्य मे यद्यपि प्रसाद, पन्त, निराला एव महादेवी सभी ने आत्मानुभूति को वाणी दी तथा निराला का स्वर ओजस्वी रहा, 'बादलराग' लिखने वाले निराला के स्वर मे बादल की गुरूगर्जना अवश्य हुई है कवि को वह गर्जना स्पष्ट रूप से सुनाई पडती है –

''झूम–झूम मृदु गरज–गरज घनघोर!
राग–अमर! अम्बर मे निज रोर!
झर–झर–झर निर्झर–गिरि–सर मे,
घर, मरू, तरू–मर्मर, सागर मे,
सरित्–तडित–गति–चकित पवन मे,
मन मे विजय गहन–कानन मे,
आनन–आनन मे, रव–घोर–कठोर–

राग–अमर ! अम्बर में भर निज रोर!"[1]

अनुभूति और अभिव्यक्ति की ईमानदारी तथा सच्चाई निराला की सबसे बड़ी विशेषता है। इस खास अर्थ में निराला प्रगतिवाद से जुड़ते हैं, उनके काव्य में विशाल जनःमानस की पीड़ा तथा गुरू–गर्जना का विराट दृश्य परिलक्षित होता है। और कवि बादलरूपी गुरू का ज्ञान की वर्षा का आह्वान करता है, तथा जन–मानस में जन–जागृति तथा देश भक्ति का जज्बा भरने का कवि का अनथक प्रयास है। महाकवि ने उपर्युक्त कविता में स्पष्ट किया है कि बॉधाएँ अगर आवें भी तो उसे दूर करें या और नई ताकत से उसका सामना करें।

राम की शक्ति–पूजा में नाटकीय तत्वः–

निराला 'राम की शक्तिपूजा' में नाटकीय काव्य शैली का समावेश बड़े ही चातूर्यपूर्ण ढ़ग से किया है। और यह निराला का 'स्वगत् कथन' है। संवादों के माध्यम से निराला ने अपने आवेग–मूलक विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति 'राम की शक्ति–पूजा' के प्रति की है। आवेग की अभिव्यक्ति ही नाटकीय तत्व का मूल गुण है। यह आवेग स्वयं ही अपने आप से प्रश्न करने लगता है, आवेग का उतार–चढ़ाव आद्योपान्त इस 'राम की शक्ति पूजा' में छल कर रहा है नाटक में जब वह व्यक्ति आत्महत्या करने के लिए तैयार हो रहा था कि तब तक शक्ति राम का हाथ पकड़ लेती है यही आवेग का उतार–चढ़ाव इस कविता में स्पष्ट झलकता हैः–

"है अमानिशाः उगलता गगन घन अन्धकार
खो रहा दिशा का ज्ञानः स्तब्ध है पवन चारः
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू–धर ज्यों ध्यान मग्न केवल जलती मशाल।

1. बादल–राग : निराला रचनावली भाग – (1)

स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर–फिर सशय,

रह–रह उठता जन जीवन मे रावण–जय–भय,

जो नही हुआ आज तक हृदय रिपु दम्य श्रान्त,

एक भी अयुत–लक्ष मे रहा जो दुरा कान्त,

कल लडने को हो रहा विकल वह बार–बार,

असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार–हार।"[1]

यहॉ निराला के राम जो कि एक सामान्य मानव है उनके विरूद्ध महाशक्ति है। जो राम की सारी युक्तियो को अपनी माया से धराशायी कर देती है। महाशक्ति अन्याय का प्रतीक रावण का साथ देने लगती है, महाशक्ति को रावण का पक्ष लेना मानो, चॉद की शीतलता को ग्रहण लग गया हो ऐसे सघर्षरत् पात्रो के नाटकीय अतर्द्वन्द लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण आदि की पृष्ठभूमि के लिए प्रकृति का यह दृश्य कवि ने उकेरा है। निराला के राम युद्ध–भूमि से वापस आकर गहन मत्रणा मे लग जाते है, हर किसी के मन मे युद्ध का आवेग तो है लेकिन अपने आराध्य एव युद्ध के मुखिया राम के अगले ओदश की प्रतीक्षा मे है, उस अवसर पर रात्रि के समय का चित्र खीचा है महाकवि ने । अमावस्या की रात है, आकाश निरन्तर अन्धकार का बमन कर रहा है। अर्थात् आकाश मे निरन्तर अन्धकार बढता जा रहा है परिणाम स्वरूप दिशाओ का ज्ञान, दिशाओ का सूचक सकेत चिन्ह लुप्त हो गए है और पवन का सचार अवरूद्ध हो गया है पर्वत के पीछे विशाल समुद्र निर्बाध वेग से गर्जन करता हुआ उमड रहा है उधर पर्वत मानो समाधिस्थ हो गया है। अन्धकार के आतक से सॉस रोककर खडा हुआ है, सच तो यह है कि 'राम की शक्ति पूजा' मे प्रकृति का चित्रण पूरी तरह मनोवैज्ञानिक तथा शैली वैज्ञानिक दोनो दृष्टियो

---

1 राम की शक्ति पूजा निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ – 330 द्वितीय अनामिका 23 अक्टूबर 1936

से अत्यन्त मार्मिक है, चाहे वर्ण–योजना हो बिम्ब–रचना हो, या लय विधान, सभी मे विरोध शोध जटिलता आदि गुणो का अत्यन्त चमत्कृत प्रयोग किया गया है। अपने युग की विषम् परिस्थितियो के विरूद्ध कवि की प्रतिभा का सघर्ष अथवा विजय का विश्वास।

कथा–वस्तु का सूक्ष्म–चरित्र–चित्रण सदा अपेक्षित नही है महाकवि की ये विशेषता रही है कि थोडे से सारगर्भित शब्दो मे एक विशद् चित्र खीच देते है। उन्होने ससार को प्राण सघात का सिन्धु कहा इतने से ही शक्ति की लहरो का चित्र सामने आ गया। सदा उदात्त–युक्त एक ही रचना मे निरन्तर उदात्त–स्वर ही सुनाई दे तो श्रोता भी विचलित हो उठेगा। इसीलिए तो कहा जाता है कि निराला का काव्य विरोधी तत्वो का सन्तुलन है। उदात्त एव अनुदात्त का समन्वय। अन्धकार एव प्रकाश (मशाल) का समन्वय। 'राम की शक्ति–पूजा' मे एक ओर राम का पराजित मन है तो दूसरी ओर लक्ष्मण का अमोद्य तेज है एक ओर कवि मे आवेग से युक्त युद्ध की विभिषिका का वर्णन है तो दूसरी ओर माँ द्वारा राम को राजीव नयन कहा जाना विरोधी तत्वो की वह विषमता और उनका सन्तुलन, विषम–वस्तु, मूर्ति–विधान और छन्द प्रवाह सर्वत्र देखा जा सकता है। महाकवि के काव्य मे प्रवाह है लेकिन फैलाव नही है भावना धनीभूत होकर कम से कम शब्दो मे प्रकट होती है। निराला का काव्य सहज अथवा सुबोध नही है। इसका कारण कुछ लोग भाषा की क्लिष्टता मानते है, जबकि सच ये है कि भाव की गहराई व्यजना का बॉकापन शब्दो की ध्वनि और छन्द की लय का अनूॅठापन भी इसका कारण है थोडा परिश्रम करने पर जैसे मिल्टन के उदात्त काव्य का रस मिलने पर उसके आगे अन्य कवियो की रचनाऐ फीकी लगती है, वैसे ही निराला काव्य का एक बार रस मिलने पर दूसरे कवि कम अच्छे लगेगे।

आचार्य 'रामचन्द्र शुक्ल' ने निराला जी के इस काव्य को सशलिष्ट कहा है। सबधित पक्ति मे कवि ने शिविर के इर्द–गिर्द के परिवेश का वर्णन किया है आकाश अन्धकार उगल रहा है हवा का चलना रूका हुआ है पृष्ठभूमि मे स्थित समुद्र गर्जनकर रहा है, पहाड ध्यानस्थ है और मशाल जल रही है। तात्पर्य यह है कि ये सब के सब कियाशील है हवा का रूकना और पहाड का ध्यानास्थ होना भी अनायास नही है ये उनकी क्रियाऐ है। ये क्रियाशील ही इस बिम्ब को प्रभावशाली बनाते है। यहॉ कवि अपने मानस का प्रतिबिम्ब वाह्य–जगत् मे देखता है कवि का मानस आवेग से पूर्ण है वह ह्रदय की भावानुभूति पहाडो मे देख रहा है पहाड रूपी ह्रदय मानो अग्नि–वर्षा कर रहा है। यहॉ मानस का बिम्ब वाह्य जगत मे स्पष्ट परिलक्षित होता है।

कृतिवास की रामायण मे इन्द्र की प्रार्थना पर ब्रम्हा अकालबोधन द्वारा राम को देवी की आराधना करने का परामर्श देते है। किन्तु 'राम की शक्ति–पूजा' मे जामवन्त अत्यन्त प्रभावी रीति से राम के गौरव के अनुकूल इस प्रकार का परामर्श देते है –

"हे पुरूष सिह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय सयत प्राणो से प्राणो पर,
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त,
तो निश्चय तुम हो सिद्ध, करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन।
तब तक लक्ष्मण है महावाहिनी के नायक,

मध्य भाग मे, अगद दक्षिण–श्वेत सहायक।"[1]

बग्ला रामायण मे एक सौ आठ कमल से दुर्गा–पूजा करने का प्रस्ताव है। विभीषण कहते है कि रावण के समान शक्ति उपासना करके आप भी महाशक्ति को अपने वश मे कर लो जाम्बवान कहते है शक्ति का सिह है, आप भी पुरूषो मे सिह है। आप भी अपने ऊपर शक्ति को धारण करे, फिर तो बुराई का सर्वनाश सुनिश्चित है यहॉ महाकवि का इशारा है कि आराधना का आराधना से ही उत्तर दिया जा सकता है। यानी महामायावी रावण को उसी के छल–रूपी ज्ञान से पराजित किया जा सकता है। यहॉ कवि यह स्पष्ट करना चाहता है कि जब पापी रावण उपासना के दम पर शक्ति का सहयोग प्राप्त कर सकता है तो आप उपासना के सिद्ध पुरूष ही है । यहॉ महाकवि अपने इस काव्य के माध्यम से यह जन–मानस को सदेश देते है कि आराधना का दृढ आराधना से दो उत्तर, यदि फिर भी बुराई नष्ट न हो तो जैसे को तैसा के मार्ग पर चलना चाहिए। यानी 'सठे–साठ्यम् समाचरे'[1] की नीति पर चलकर बुराई पर विजय प्राप्त करो और जनता को मुक्ति दिलाओ, यहॉ कवि ने अपने राम से बुराई पर विजय दिलाने मे सफलता भी प्राप्त की है। कवि ने एक अनुभवी एव बुजुर्ग पात्र के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि तामसी शक्ति की अपेक्षा सात्विक शक्ति कही अधिक प्रभावकारी होती है। पाठक और श्रोता को इस काव्य को पढने पर उनमे सिर्फ आवेग ही उत्पन्न नही होता बल्कि रोमाच भी उत्पन्न होता है। निराला द्वारा बुजुर्ग जाम्बवान द्वारा व्यूह रचना करके एव युद्व वर्णन को सजीवता प्रदान करके मानो समूचे काव्य को ही नया आयाम दिया है, महाकवि ने अपने काव्य मे मानो बुराई पर अच्छाई की विजय के लिए समूचे देशवासियो का आह्वान किया है।

1 'राम की शक्ति–पूजा' द्वितीय अनामिका निरालाा रचनावली भाग (1) पृ0–335, रचना 23 अक्टूबर 1936

कवि का विद्रोही स्वरः–

महाकवि ने अपने आवेगमय काव्य के माध्यम से बादल से प्रार्थना की है कि हे गम्भीर स्वर वाले बादल तुम इतनी कठोरता से बरसो कि सम्पूर्ण प्रकृति मे एक नव–जीवन का सचार हो जाए –

"घन–गर्जन से भर दो वन।
तरू तरू पादप–पादप तन।
अब तक गुजन–गुजन पर
नाची कलियॉ छवि निर्भर,।
भौरो ने मधु पी–पीकर,
माना, स्थिर–मधु–ऋतु कानन।
गरजो हे मन्द, बज्र स्वर,
थर्रारे भूधर–भूधर,
झरझर झरझर धारा झर,
पल्लव–पल्लव पर जीवन।।"[1]

नव–जीवन निर्माण के लिए राग–रग का वातावरण हितकर नही है इसी कारण कवि मेघ से गर्जन को प्रार्थना करता है वह उनके प्रलयकारी रूप मे नवीन सृष्टि के निर्माण का दर्शन करता है, यह कवि प्रकृति–रूपी बादल से प्रार्थना करता है कि हे बादल! तुम अपने गर्जन–रूपी आवेगमय वर्षा से वन के प्रत्येक वृक्ष और पौधे को भर दो, अब तक अपने सौन्दर्य पर जीवित रहने वाली अर्थात् सौन्दर्य से भरी हुई कलियॉ भौरो के गुजन को सुन–सुनकर नाचती है। भौरो ने उनका मधु पी–पीकर वन मे बसन्त–ऋतु की शोभा को स्थायी माना है। प्रकृति का मानवीकरण करते हुए निराला ने पूँजीवादी वर्ग को भौरा एव

---

1 'घन गज्रन से भर' दो मन गीत द्वितीय अनामिका पृष्ठ–35

सर्वहारा वर्ग को मधु की उपमा से सबोधित किया है, कवि कहता है हे गम्भीर स्वर वाले बादल। तुम इतनी गम्भीरता कठोरता से गरजो कि तुम्हारा स्वर सुनकर प्रत्येक पर्वत भय से कॉप जाय और उनसे झर–झर पानी के झरने फूट पडे तथा पत्ते–पत्ते मे नव–जीवन का सचार हो उठे। यहॉ कवि ने प्रकृति का मानवीकरण किया है, भाषा मे ध्वन्यात्मकता द्रष्टव्य है।

विद्रोह का आह्वान –

निराला क्रातिकारी कवि है। शक्ति का उपासक कवि चुपचाप तत्कालीन व्यवस्था का अन्याय कैसे सह–सकता है? 'महाराज शिवाजी' का पत्र मे ऐतिहासिक प्रसग द्वारा पराधीन राष्ट्र के सुप्त सस्कारो को जगाते है –

"आ रही है याद अपनी मरजाद की ,
चाहते हो यदि कुछ प्रतिकार।
तुम रहते तलवार के म्यान मे,
आओ वीर स्वागत् है।
सादर बुलाता हूँ,
है जो बहादुर समर के।
वे मर के भी,
माता को बचायेगे।
शत्रुओ के खून से,
धो सके यदि एक भी तुम मॉ का दाग।
कितना अनुराग देशवासियो का पाओगे।
निर्जर हो जाओगे–

अमर कहलाओगे।।"[1]

निराला की आस्था का आधार भारतीय जनता की अजेय शूरता है। पारम्परिक भेद–भाव को भुलाकर सगठित रूप से विदेशी शासको के विरूद्ध मोर्चा जमाने की प्रेरणा है। उपर्युक्त काव्य मे देश–प्रेम के प्रति कवि की अर्न्तरात्मा की आवाज बाहर निकल पडती है। इसलिए वह अपने प्रबल–प्रतिद्वन्दी जयसिह से अपने सभी भेद–भाव भुलाकर उसी के माध्यम से जन–जागरण का आह्वान की। आज का समय आपस मे लडने का नही अपितु सगठित होकर फिरगियो का विरोध करने का है। कवि का कहना है कि हे वीर! मेरे पास आओ मै तुम्हारा स्वागत करता हूँ और तुमको अपने पास आने के लिए सादर आमत्रित करता हूँ जो बहादुर होते है वे प्राण त्याग–कर भी मातृ–भूमि की रक्षा करेगे। यानी कवि जन–सहयोग का आह्वान करता है कि आओ हम सभी मिलकर अपनी मातृ–भूमि की रक्षा करने का वचन ले। कवि अपने काव्य–रूपी आवेग को नई दिशा देते हुए कहता है कि हे देशवासियो! यदि तुम शत्रुओ के खून से भारत–माता का एक भी दाग धो सकोगे तो अपने देशवाशियो का अटूट स्नेह अपने आप प्राप्त हो जाएगा ऐसा करके तुम तो देवता कहलाओगे और इतिहास मे अमर बन जाओगे। अग्रेजियत मे रगे हुए, अगरेज भक्तो पर कवि ने तीखी टिप्पणी की है निराला ने ऐसे चापलूसो को राष्ट्र–द्रोही की उपमा से संबोधित करने का प्रयास किया है।वे इन चापलूसो को अपने राष्ट्र का दुर्भाग्य तक की सज्ञा दी है। इस तरह की जन–चेतना वह भी एक काव्य के माध्यम से निराला जैसा उच्च–कोटि का कवि ही कर सकता है।

निराला की इस कविता मे मुहावरेदार लोक–व्यवहार की भाषा भी द्रष्टव्य है। महाकवि अपने देश के उन गद्दारो को अपने काव्य–मयी व्यग वाणो से ऐसे भेदते थे मानो जगल मे जिस तरह हिरण या अन्य जगली जानवरो को देखकर

---

1 महाराज–शिवाजी का पत्र उपरा पृष्ठ – 82

शेर उनके शिकार के लिए दौडता हो, यहॉ कवि जयसिह। के माध्यम से इनको एक अवसर दे रहा है कि देश–सेवा से बढकर और कोई कार्य नही, फिर कवि देश के सभी नागरिको को विशेषकर जो उदासीन है, चापलूस है, उनमे राष्ट्रीयता का सचार कर रहा है और जयसिह के मध्यम से कहता है–

"धीमान् कहते है तुम्हे लोग
जय सिह। सिह हो तुम
खेलो शिकार खूब हिरनो का
याद रहे–
शेर कभी मारता नही है शेर,
केसरी,
अन्य वन्य पशुओ का शिकार करता है।"[1]

निराला लौह–पुरूष थे। आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक किसी प्रकार की वाधाए उनके मजबूत कन्धो को झुका नही पायी। वो आजीवन एकाकी समस्त समाज से जूझते रहे, उनका यह अद्म्य साहस 'छत्रपति शिवाजी' कविता मे शिवाजी के क्षत्रियत्व के साथ प्रकट हुई, स्वाभाविक है कि कवि का जन्म परतन्त्र भारत मे हुआ था। देश गुलामी की बेडियो मे जकडा हुआ था, इस गुलामी के लिए कवि फिरगियों से अधिक जिम्मेदार स्वय अपने देशवासियो को मानता है, कवि यहॉ के बुद्धजीवियो विशेषकर पढे–लिखे पूॅजीपति वर्ग को कोसते हुए कहता है कि तुम सभी को लोग विद्वान कहते है तुम कैसे विद्वान हो मै माना कि तुम विद्वान हो तुम्हे राष्ट्र की सुविधाओ के दोहन का हक है परन्तु जरा सोचो। जिस प्रकार शेर कभी शेर का शिकार नही करता उसी प्रकार तुम

---

1 'महाराज शिवाजी का पत्र' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ–162

सभी शेर सिर्फ हिरन रूपी फिरगियो का शिकार करो और राष्ट्र को गुलामी एव दासता से मुक्ति दिलाओ।

कवि यहॉ देशवासियो को आगाह करते हुए कहता है कि हमारी पारम्परिक फूट सबसे बडी कमजोरी है और फिरगियो की ताकत। वे राष्ट्र के समस्त नागरिको का आह्वान करते है कि जिस दिन हम सभी एक हो जाए फिर कोई भी विदेशी हमारी भारत–माता को हथियाने का विचार भी मन मे नही ला सकता। कवि के अनुसार एकता ऐसी ढाल है जिसे विखण्डित करने का माद्दा किसी विदेशी मे नही है। इसी एकता का आह्वान कवि इस आवेगमय कविता के माध्यम से करता है–

> "वीर।– सर्दारो के सर्दार।–महाराज।
> बहु–जाति, क्यारियो के पुण्य–पत्र–दल–भरे।
> आन–बान शान वाले भारत–उद्यान के,
> नायक हो, रक्षक हो,
> बासती सुरभि को हृदय से हरकर,
> दिगन्त भरने वाला पवन ज्यो।
> वशज हो–चेतन अमल अश,
> हृदयाधिकारी रविकुल–मणि रघुनाथ के ।"[1]

महाकवि ने यहॉ जयसिह के व्यक्तित्व व कृतित्व का चित्रण किया है रघुकुल गौरव श्रीराम के माध्यम से भारत के गौरवमयी अतीत का वर्णन है। देशभक्ति की व्यजना कूट–कूट भरी गयी है कवि जयसिह। के माध्यम से देश के पूँजीपतियो बुद्धिजीवियो का आह्वान करता है कि आप राष्ट्र की मुख्य धारा से जुडे जाओ, जुडो ही मत बल्कि हम गरीब एव अनपढ जनता को नेतृत्व

---

1 महाराज शिवाजी का पत्र निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 156

प्रदान करो कवि कहता है कि आप भारत रूपी बगिया के माली एव स्वामी हो। आप भारत रूपी उद्यान मे उसी प्रकार नव–चेतना भरते है जिस प्रकार बसन्त–कालीन वायु बासन्ती सौरभ को सारी दिशाओ मे भर देती है। आइए! देश की एकता के डोर मे बॅधकर एक स्वतन्त्र एव नव–भारत के विकास मे एक कडी बन जॉए।

अतीत की स्मृति –

कवि निराला के मन मे यमुना को देखकर भारतीय सस्कृति से सबधित समस्त अतीत जागृत हो उठता है वे कथाओ का सार लेकर एव अपने पिछले अनुभवो का सार अपनी कविता 'यमुना के प्रति' के माध्यम से जन–आह्वान करता हुआ कहता है कि –

"मुक्त ह्रदय के सिहासन पर।
किस अतीत के ये सम्राट
दीप रहे जिनके मस्तक पर
रवि–शशि–तारे–विश्व–विराट?
निखिल विश्व की जिज्ञासा–सी,
आशा को तू झलक अमन्द।
अन्त पुर की निज शय्या पर
रच रच मृद छन्दो के बन्द।।"[1]

प्रकृति के माध्यम से कवि रहस्यानुभूति की अभिव्यक्ति करता हुआ कहता है कि तेरे उन्मुक्त ह्दय के इस सिहासन पर किस विगत् युग के सम्राट विराजमान है जिनके मस्तक पर ये सूर्य चन्द्र एव होर विशाल–विश्व–दीपक की

1 यमुना के प्रति निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ–116

तरह चमकते रहते है। यह कवि यमुना के माध्यम से सुदुर अतीत की किन खोई हुई स्मृतियो को जगाने का प्रयत्न कर रहा है। लघु लहरो के मधुर स्वरो मे किस अतीत काल की गहरी विशाल–क्रीडा की स्मृति मे गुनगुना रही है। मानो तुम्हारे हृदय पर मादक ध्वनियॉ मौन पवन मे गॅूजती रहती है। तुम किस प्रेमी के ध्यान मे डूबी हुई नित्य–नवीन सगीत भरे गीतो की रचना करती रहती हो, जिस समय समूचा राष्ट्र सोता है और एक खामोशी का वातारण रहता है उस समय भी तेरी कल–कल ध्वनि का मधुर सगीत गुजायमान रहता है। यहॉ महाकवि ने जन–मानस को यमुना का मानवीकरण कर निरन्तर आगे बढने की प्रेरणा देता है।

युद्धोन्माद का चित्र–

निराला जी मानव को विलासमय जीवन त्यागने और कुछ कर गुजरने का आह्वान करते हुए कहते है कि हे देशवासियो राष्ट्र के विकास मे युद्ध–स्तर पर योगदान दो, कवि राष्ट्रीयता की दुन्दुभी बजाते हुए कहता है कि–

"मेरी झररर् झरर, दमामे
घोर नकारो की है चोप,।
कड्–कड्कड् सन्सन् बन्दूके
अररर अररर अररर तोप।
धूम–धूम है भीम रणस्थल,
शत् शत् ज्वालामुखियॉ घोर।
आग उगलती दहक–दहक दह,
कॅपा रही भू नभ के छोर
फटते लगते है छाती पर,
घाटी गोले सौ–सौ बार।
उड जाते है कितने हाथी,

कितने छोडे और सवार।"

यहॉ कवि युद्ध का एक भयानक चित्र प्रस्तुत करता है और यह भी दर्शाने का प्रयास करता है कि युद्ध से आर्थिक शारीरिक हानि ही नही होती है बल्कि युद्ध मानव के लिए एक विनाश का मार्ग प्रशस्त करती है। जिससे न सिर्फ एक राष्ट्र एक मनुष्य का नुकसान होता है वरन् सम्पूर्ण मानवता कलकित होती है। साथ ही साथ कवि यह भी अपने अतीत के माध्यम से बताना चाहता है कि इसी राष्ट्र के आन–बान और शान की रक्षा के लिए पूर्वजो ने अपने प्राण कैसे हॅसते–हॅसते न्योछावर कर दिये। प्रवाह–पूर्ण शैली मे युद्ध का सजीव चित्रण है। सच तो यह है कि यह वर्णन हमे वीरगाथा काल के युद्ध वर्णनो का स्मरण करा देती है।

मरण का स्वागत्:–

'मरना नही मर कर अमर होना' यह था निराला के जीवन का आदर्श । यह बात नही है कि महाकवि को निराशा और उदासी ने न घेरा हो किन्तु उसके पार भी कुछ देखने का साहस सजोए रहे। कवि कहता है–

"गिरिपताक उपत्यका पर,
हरित तृण से घिरी तन्वी।
जो खडी है वह उसी को,
पुष्पभरण अप्सरा है।
जब हुआ बचित जगत् मे,
स्नेह से , आमर्ष के क्षण।
स्पर्श देती है किरण जो,
उसी की कोमलकरा है।।"[1]

---

1 मरण को जिसने बरा है अपरा पृष्ठ – 142

जो मृत्यु से नही डरता है उसी को जीवन का आनन्द प्राप्त होता है, अन्यथा व्यक्ति की सारी जिन्दगी मृत्यु मे भय मे ही व्यतीत हो जाती है। छायावादी कवि की प्रमुख विशेषता प्रकृति मे प्रेयसी का दर्शन करना भी है। महाकवि की प्रमुख विशेषता प्रकृति मे प्रेयसी का दर्शन करना भी है। महाकवि भी पहाडो पर तथा उपवनो मे हरी घास से सजी हुई जिस कोमलागी नारी के दर्शन होते है वह मृत्यु से न डरने वाले व्यक्ति को पुष्पो से भर देने के लिए प्रस्तुत खडी अप्सरा है जब मै ससार मे प्रेम से बचित हुआ और मेरे जीवन मे कोध के अवसर आए तब मुझे अपने स्पर्श से जो सान्त्वना देती है वह किरण उसी रहस्यमयी सत्ता का एक कोमल हाथ है, यहॉ कवि का दार्शनिक चिन्तन पद्धति भी मुखर है। जितना ही अपने जीवन मे मृत्यु की विकरालता का अनुभव कर रहे थे। जितना ही उनका शरीर विष से दग्ध हो रहा है उतना ही स्वर कोमल और शान्त होता था। इसी आवेगपूर्ण एव ओजस्वी कवि (जो मानव के बिना मृत्यु की वैतरणी पार करने वाले) का नाम है निराला।

भविष्य के प्रति आशा.–

निराला का काव्य भविष्य के प्रति आशा का सदेश भी देता है, तथा पूरे मे कवि सकारात्मक सोच की तरफ बढता है, सन् 1942 के 'भारत छोडो' आन्दोलन के समय देश ने अपना सब कुछ दॉव पर लगा दिया था। यहॉ कवि निराला भारतीय इतिहास के गौरवपूर्ण अतीत की ओर सकेत करते है–

"यह देश। उधर अदम्य होकर
बढता ही चला राष्ट्र इस्लामी वेग प्रखर।
पृथ्वी सॅभालने मे असमर्थ हुई निश्चय,
दुर्दान्त क्षत्रियो मे जो था प्राणों मे भय।
उन इतर प्रजाओ मे छाया उसका तुषार

x x x

अधिकार चाहती ही देना, सुनकर पुकार,

प्राणो की पावन् गूँथ हार।

अपना पहनाने को अदृश्य प्रिय को सुन्दर,

ऊँचा करने का अपर राग से गाया स्वर।"[1]

यहाँ कवि ने भारतीय इतिहास और सस्कृति का ओजस्वी वर्णन लिया है सम–सामयिक वातावरण मे देश–भक्ति की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए अतीत के गौरव से परिचित होना सर्वथा आवश्यक होता है। कवि को मानो अतीत की घटनाऐ एक–एक करके चित्रपट के समान ऑखो के सामने घूम जाती है। जिस प्रकार निपुण सृष्टि नवीनता चाहती है और दूसरे लोगो को उसके अधिकार गिनकर अथवा बहुत ही सीमित रूप मे देना चाहती है। यहाँ कवि देशवासियो को यह बताना चाहता है कि जिस प्रकार इस्लामी राष्ट्र का कार्य–क्षेत्र बढता गया उसी प्रकार अग्रेजो का भी राज उत्तरोत्र बढता जा रहा है कवि के माथे पर चिन्ता की लकीर साफ झलकती है।

निराला के काव्य मे 'उद्दाम प्रेरणा प्रस्तुत आवेग' अपनी अलग पहचान रखता है उदद्‌ाम का शाब्दिक अर्थ है– जिसमे कोई बन्धन नही हो यानी बन्धन–रहित। निराला ने अपने काव्य मे बन्धन या दबाव को कही कोई स्थान ही नही दिया। समूचा काव्य निर्बन्ध है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि कोई कवि सदा उदात्त एव ओजपूर्ण कविताए नही कर सकता है। एक ही रचना मे यदि निरन्तर उदात्त–स्वर ही सुनाई दे तो श्रोता विचलित हो उठे। निराला के काव्य की विशेषता है विरोधी तत्वो का सन्तुलन, उदात्त एव अनुदात्त का समन्वय इसके कथा–वस्तु, चरित्र–चित्रण या छन्द प्रवाह मे एक रसता नही आने पाती। 'राम की शक्ति–पूजा' मे एक ओर राम का पराजित मन

---

1 सहस्राब्दि अपरा पृष्ठ – 179

है तो दूसरी ओर हनुमान का शक्ति–प्रदर्शन है विभीषण की दीनता और राज्य–लोलुपता है तो दूसरी ओर लक्ष्मण का अमोद्य तेज है।

निराला के आवेग पूर्ण काव्य मे विस्तार अधिक है कवि का वस्तु–विधान विषयानुसार छोटा और बडा होता रहता है, अर्थात् कभी वे लघुचित्रो की उद्भावना करते है और कभी उनका चित्रफलक वस्तु के अनुसार विस्तृत और विषद् होता है कवि ने छनदो के वाचन मे उतार–चढाव की कला अद्भूत एव विलक्षण थी। यहॉ महाकाव्योचित गरिमा को मण्डित करने का सफल प्रयास महाकवि ने किया है।

"समुचित अलंकार–योजना"

लौजाइनस के अनुसार मात्र चमत्कार प्रदर्शन के लिए अलकारो का प्रयोग नही होना चाहिए, यह अधिक उपयोगी तब होगा जब अर्थ को उत्कर्ष प्रदान करे, और मात्र चमत्कृत न करके पाठक को आनन्द प्रदान करे। अलकार सर्वाधिक प्रभावशाली तब होता है जब इस बात पर ध्यान ही न जाए कि वह अलकार है। अलकार का शाब्दिक अर्थ है सुशोभित करने वाला या वह जिससे सुशोभित हुआ जाता है। इन दोनो अर्थो मे परस्पर थोडा अन्तर है, पहला अर्थ जहॉ अलकार को कर्त्ता या विधायक सूचित करता है वहॉ दूसरे अर्थ मे वह साधन मात्र रह जाता है काव्यशास्त्र मे अलकार इन दोनो अर्थो मे प्रयुक्त हुआ है। जहॉ वामन, भामह आदि ने अलकार को व्यापक–अर्थ मे ग्रहण करते हुए सौन्दर्य के पर्यायवाची के रूप मे ग्रहण किया है वहॉ पर काव्य को सुशोभित करने वाला माना गया है। किन्तु जहॉ तक सकुचित अर्थ मे विशिष्ट कथन शैलियो के रूप मे प्रयुक्त हुआ है। वहॉ वह काव्य–सौन्दर्य का साधन मात्र रह गया है।

"युवते रिवरूप मक काव्य, स्वदते शुद्वगुण तदत्यवीत।
विहित प्रणय निरन्तराभि, सदलकार विकल्पनाभि।।"

अर्थात् काव्य–युवती के रूप मे समान है, वह शुद्ध गुण युक्त होने पर रूचिकर तो होता ही है तथापि रत्न आभूषणो से सज्जित हो जाने पर रसिक जनो को अन्यन्त आकर्षण प्रतीत होती है। उसी प्रकार गुण–युक्त काव्य भी अलकारो से युक्त हो जाने पर काव्य मर्मज्ञो के चित्र को अत्यन्त आह्लाद प्रदान करता है। डॉ0 श्याम सुन्दर दास ने अलकार की परिभाषा करते हुए लिखा है कि भावो का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओ के रूप–गुण और किया का अधिक तीव्र अनुभव कराने मे कभी–कभी सहायक होने वाली युक्ति अलकार है।

कविवर ''सुमित्रानन्दन पन्त' ने अपने ग्रन्थ 'पल्लव की भूमिका' मे अलकार की परिभाषा मे दी है जो इस प्रकार है—

''अलकार केवल वाणी की सजावट नही वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार है भाषा की पुष्ठि के लिए राग की परिपूर्णता के लिए आवश्यक उपादान है। वे बागी के आचार व्यवहार और रीति—नीति है, पृथक स्थितियो के पृथक स्वरूप भिन्न अवस्थाओ के भिन्न—चित्र है जैसे वाणी की झकारे विशेष घटना से टकराकर जैसे फेनाकार ही गयी हो । विशेष भावो के झोके खाकर बाल लहरियॉ तरूण—तरगो मे फूट गयी हो। कल्पना के विशेष बहाव मे पड आवर्तो मे नृत्य करने लगी हो, वे वाणी के हास, अश्रु, स्पप्नपुलक हाव—भाव है जहॉ भाषा की जाली के बाल अलकारो के चौखटे मे फीट करने के लिए बुनी जाती है। वहॉ भावो की उदारता शब्दो की कृपण—जडता मे बॅधकर सेनापति के दाता और सूम की तरह इकसार हो जाती है।'' हिन्दी मे ही सस्कृत के अनुसरण पर कवि 'केशवदास' ने अलकार शब्द का प्रयोग अपनी 'कविप्रिया' मे इसी व्यापक अर्थ मे किया है 'सकीर्ण अर्थ मे काव्य शरीर अर्थात् भाषा को शब्दार्थ से सुसज्जित तथा सुन्दर बनाने वाले चमत्कार पूर्ण मनोरजन ढग को अलकार कहते है। काव्य मे अलकार की महत्ता सिद्ध करने वालो मे वामन के अतिरिक्त आचार्य भामह, उद्धट, दण्डी और रूद्रट के नाम विशेष प्रख्यात है इन आचार्यों के काव्य मे रस को प्रधानता न देकर अलकार को मान्यता दी है।

कहने का तात्पर्य यह है कि काव्य मे अलकार की महत्ता को प्राय सभी काव्य शास्त्रियो ने चाहे वह पाश्चात्य काव्यशास्त्रियो हो अथवा भारतीय कमोवेश सभी ने स्वीकार किया है। यहॉ अलकार को और स्पष्ट करते हुए केशवदास जी कहते है— अलकार कल्पना की चारूता है हमारी कल्पना जब अनेक प्रकार के चित्रो का निर्माण करती है तो वह निर्मित अलकार का पर्याय है। अलकारो की दृष्टि कल्पना से ही होती है यदि कल्पना कवि की अनुभूति व चित्र से परे है

तो वह कल्पना चमत्कार विधायिनी हो जाती है कल्पना चमत्कार विधायिनी न हो वह अनेक अर्थ विम्बो को हमारे सामने उपस्थित कर दे।

अलकारो के मुख्यत तीन वर्ग किए गए है –

<u>(1) शब्दालकार –</u> शब्द के दो रूप है– ध्वनि और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालकार की सृष्टि होती है। इस अलकार मे वर्ण–या–शब्दो की लयात्मकता या सगीतात्मकता होती है। अर्थ का चमत्कार नही। शब्दालकार कुछ शब्दगत्, कुछ वर्णगत्, कुछ वाक्यगत् लातानुप्रास होते है। अनुप्रास, यमक, आदि अलकार वर्णगत् और शब्दगत् है तो लाटानुप्रास वाक्यगत् प्रमुख शब्दालकार मे है। अनुप्रास, यमक, पुनरूक्ति, पुनरूक्त बदाभास, वीप्सा, वक्रोक्ति श्लेष आदि।

<u>(2) अर्थालकार·–</u> अर्थ को चमत्कृत या अलकृत करने वाले अलकार अर्थालकार है। जिस शब्द से जो अर्थालकार सधता है उस शब्द के स्थान पर दूसरा पर्याय रख देने पर भी वही अलकार सधेगा क्योकि इस जाति के अलकारो का सबध शब्द से न होकर अर्थ से होता है।

<u>(3) उभयालकार·–</u> जो अलकार शब्द और अर्थ दोनो पर आश्रित रहकर दोनो को चमत्कृत करते है वे उभयालकार कहलाते है।

अयत्नज अलकार काव्य के प्रभाव को बढाते है और ये अलकार एक प्रकार से काव्यात्मक है। प्राकृतिक अभिव्यजना मे अलकारो का महत्वपूर्ण स्थान है। अत उन्हे कृत्रिम मानना उचित नही है। इनका प्रयोग प्रासगिक तथा परिस्थिति एव उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए यदि ऐसा नही है तो भव्य से भव्य अलकार कविता कामिनी का श्रृगार न बनकर वे उसके लिए बोझ बन

जाएगे, ये साधन मात्र है। अत इन्हे काव्य का सहज अग बनकर आना चाहिए, लौजाइनस ने जिन अनेक अलकारो को महत्व दिया है, वे सभी निराला के काव्य–ससार मे उपलब्ध हो जाते है, कवि निराला अलकारो का प्रयोग भावो का अग बनाकर करता है वही उनके अलकारिक प्रयोग का औदात्य होता है। यहाँ उनका सोदाहरण नामोल्लेख किया जा रहा है।

<u>(1) अनुप्रास –</u> वर्णो की आवृत्ति मे अनुप्रास का पुट झलकता है आवृत्ति से तात्पर्य उने वर्णो से है जो एक से अधिक बार आते है। कवि निराला के काव्य मे यह अलकार पाठक या श्रोता की अर्न्तवेदना को छूने लगती है, सच तो यह है कि सम्पूर्ण काव्य मे कवि की वेदना और उसके नव–नव भावोन्मेष का सूचक या बोधक बनकर आया है। कवि निराला 'जूही की कली' के माध्यम से अनुप्रास अलकार का एक सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है, प्रकृति का आलम्बन रूप मे वर्णन है काव्य मे कवि निराला का प्रकुति प्रेम मुखर है–

> "विजन–वन–बल्लरी पर,
> सोती थी सुहाग–भरी–स्नेह–स्वप्न–मग्न–
> अमल–कोमल–तनु–तरूणी–'जूही की कली'
> दृग बन्द किए, शिथिल–पत्राङ्क मे।।"[1]

'विजन–बन–बल्लरी' मे जो ध्वनि निर्मित होती है वह वातावरण के सन्नाटेपन को उजागर करती है, कवि ने यहाँ अनुप्रास के लालित्य को लाने का प्रयास नही किया है। बल्कि बल्लरी (लता) यानी जिस वन की बल्लरी भी वह वन–विजन था जहाँ पर कवि ने इन शब्दो का प्रयोग किया है उस वातावरण की और गहराई प्रदान करने के लिए या उसका वास्तविक चित्र प्रस्तुत करने के

---

1 'जूही की कली' निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 41

लिए इस अलकार ने स्वय जगह बना ली, इस काव्य मे एक सुनसान वातावरण या निर्जन वन मे स्थित एक लता पर पतिव्रता नायिका अपनी पवन रूपी पति की गोद मे आखे बन्द किए मानो आलिगन बद्ध होकर निर्द्वन्द भाव से सो रही है।

यहॉ कवि निराला भारती–वन्दना के माध्यम से हमारे देश की सस्कृति का अद्भूत चित्र उद्घाटित करने का प्रयास किया है इस गीत के माध्यम से कवि ने राष्ट्रीय जागरण का प्रयास किया है–

> "भारति जय विजय करे
> कनक शस्य कमल धरे।
> लका पदतल शतदल,
> गर्णितोर्मि सागर जल।
> धोता शुचि चरण युगल
> स्तव कर बहु अर्थ भरे।"[1]

यहॉ कवि ने अपने देश (भारत माता) की तुलना सरस्वती से की है यह गीत–प्रार्थना–परक है इसमे राष्ट्रीयता का भाव मुखर है भारत माता सरस्वती के समान सुनहरे रग के पके हुए धान्य–रूपी कमल को धारण किए हुए है यहॉ कनक एव कमल धरे मे कवि ने अनुप्रास अलकार की झलक दर्शायी है।

कवि ने बडे ही चातुर्यपूर्ण ढग से बादल के प्रलयकारी रूप के माध्यम से भारतीय जन–मानस के जमीर को झकझोरते हुए क्रान्ति का आह्वान करता है –

> "तिरती है समीर–सागर पर
> अस्थिर सुख पर दु ख की छाया
> जग के दग्ध हृदय पर।

---

1 'भारति–वन्दना' अपरा पृष्ठ – 9

निर्दय विप्लव की प्लावित माया,

यह तेरी रण–तरी।

भरी आकाक्षाओ,

घन मेरी से सजग सुप्त अकुर।।"[1]

आलम्बन रूप मे प्रकृति–वर्णन छायावादी कवियो की प्रमुख विशेषता रही है। इस काव्य मे निराला ने प्रकृति के कोमल रूप के साथ–साथ उसकी कठोरता का भी वर्णन किया, यहॉ कवि भारतीय सस्कृति की सरलता एव साथ ही साथ कठोरता का भी उल्लेख किया है। यहॉ कवि ने 'समीर–सागर' यानी हवा रूपी समुद्र एव 'सजग सुप्त' यानी सोए हुए अविकसित मे अनुप्रास अलकार को बखूबी स्थान कवि ने दिया है। साथ ही साथ कवि की क्रान्तिकारी भावना समुद्र की लहरो की तरह हिलोरे मार रही है।

इसी प्रकार कवि 'निराला' ने अपने 'बादल राग 'कविता के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय–जनता को राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरने का आह्वान करता है –

"बार–बार गर्जन

वर्षण है मुसलाधार।

हृदय थाम लेता ससार।

सुन–सुन घोर वज्र हुकार।।"[2]

निराला ने देशवासियो का आह्वान करते हुए कहा है कि क्रान्ति का बिगुल बजा दो, क्योकि क्रान्ति की ऑधी के आगे बडे–बडे गर्वीले वृक्ष धराशायी हो जाते है। अर्थात् क्रान्ति की लहर जब हिलोरे मारने लगती है तो उससे कितना ही चतुर पतवार हो टिक नही पाता। यहॉ बार–बार गर्जन यानी जनता

---

1 बादल–राय–6 निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 135
2 बादल–राय–6 निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 135

का बार–बार आह्वान करता है क्रान्ति का। यहाँ 'बार–बार' की आवृत्ति एव 'सुन–सुन' की आवृत्ति दो बार हुई है, स्वाभाविक रूप से अनुप्रास ने अपनी जगह उपरोक्त काव्य मे बनायी है।

निराला जी देशवासियो को आत्म–जागरण की प्रेरणा देते है और उनको स्वय आत्मावलोकन करने की सलाह देते है–

"सहृदय–समीर जैसे
पोछो प्रिय, नयन–नीर
शयन शिथिल बॉहे,
भर स्वाप्निल आवेश मे,
आतुर उर वसन–मुक्त कर दो
सब सुप्ति सुखोन्माद हो,"[1]

कवि कहता है, हे देशवासियो तुम अपनी चेतना पर पडे हुए निकिव्यता के इस भार को दूर करके चैतन्य हो उठो। सहृदय समीर यानी शीतल और मन्द–वायु, शयन शिथिल यानी सोकर उठने से शिथिल पडी हुई है। सब सुरित सुखोन्माद आदि मे अनुप्रास का अभिनव प्रयोग कवि ने किया है।

इसी तरह 'पावन करो नयन' नामक काव्य से प्रकृति से उदात्त भाव प्रेरणा ग्रहण करते हुए कहते है कि –

"पावन करो नयन।
रश्मि, नभ–नील–पर
x x x
स्पप्न–जागृति सुघर
दु ख–निशि करो शयन।"[2]

---

1 जागो फिर एक बार भाग (1) अपरा पृष्ठ – 14
2 पावन करो नयन अपरा पृष्ठ – 19

उपर्युक्त काव्य मे कवि निराला का दार्शनिक अन्दाज झलकता है इस दु ख की रात्रि मे तुम स्वप्न जागृति का आनन्द लाभ करो अर्थात सोते हुए भी तुम जागृतिवस्था मे स्थिर रहो दु ख की घटा को निकल जाने दो। क्योकि उजाले के बाद अँधेरा और दु ख के बाद सुख का स्वाभाविक पदार्पण होगा। यहॉ नभ, नील, स्पप्न सुघर मे 'न' और 'रा' की आवृत्ति एक से अधिक बार ही हुई है। इस प्रकार काव्य मे अनुप्रास को अपना स्थान बनाए रखने मे सफलता प्राप्त हुई है।

छायावादी कवियो को प्रकृति ने अपनी ओर भरपूर आकर्षित किया है हलाकि 'सुमित्रानन्दन पन्त' को ही 'प्रकृति का चतुर चितेरा' कहा जाता है लेकिन कवि निराला ने भी अपने सम्पूर्ण काव्य मे प्रकृति का बखूवी दोहन किया है कवि ने इस कविता मे भी प्रकृति के माध्यम से एक सुन्दर रमणी का चित्र खीचने का प्रयास किया है–

> ''दिवावसान का समय,
> मेघमय आसमान से उतर रही है।
> वह सन्ध्या–सुन्दरी परी सी,
> धीरे–धीरे–धीरे–।।''[1]

निराला जी ने अपने उपर्युक्त काव्य मे धीरे–धीरे–धीरे का प्रयोग तीन बार किया है यहॉ कवि की स्वर्गीय नायिका यानी 'सन्ध्या–सुन्दरी' परी मन्द एव सूक्ष्म गति से वातावरण को अपने शान्तमयी आगोश मे लेने का प्रयास कर रही है। पूरा वातावरण शान्त है और इसी शान्त वातावरण मे सन्ध्या सुन्दरी परी नई नवेली दुल्हन की तरह उसी प्रकार धीरे–धीरे कदम बढाते हुए सम्पूर्ण वातावरण को अपने अगोश मे ले लेती है।

---

1 'सन्ध्या–सुन्दरी' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 77

महाकवि ने अपने काव्यो मे आध्यात्मिकता और प्रकृति के चैतन्यारोपण के भाव को क्रमवार देखते रहते है।

"हेर उर पट फेर मुख के बाल,
लख चतुर्दिक चली मन्द मराल।
गेह मे प्रिय–स्नेह की जय माल,
वासना की मुक्ति मुक्ता,
त्याग मे तागी।"[1]

उपर्युक्त पक्ति मे इस युग के कवि के द्वारा भक्तो की अवतारणा हुई है यहाँ भी निराला का नारी दृष्टिकोण स्वस्थ एव निर्लिप्त है ऐसे सूक्ष्म एव दिव्य चित्र निराला के एकाध है। शब्दो का ऐसा चित्र इस युग मे विरल है। मन्द मराल त्यागी मे म तथा त की आवृत्ति दो–दो बार हुई है स्वयमेव अनुप्रास झलकता है।

कवि निराला ने बसन्त–ऋतु की शीतलता एव उसी शीतलता को माध्यम बनाकर प्रेम–भावना एव सौन्दर्यानुभूति की सजीव अभिव्यक्ति की गई है–

"आवृत सरसी –उर–सरसिज उठे,
केशर के केश कली के छूटे।
स्वर्ण–शस्य–अचल
पृथ्वी का लहराया।।"[2]

प्रकृति के प्रत्येक रूप मे मानवीय सौन्दर्य का आरोप करके कवि ने एक सजीव–प्रकार और सशलिष्ट चित्र प्रस्तुत कर दिया है, निराला ने यहाँ प्रकृति मे नारी के अन्तरग का दर्शन पाठक को कराया है। चिर–नवयौवना के 'उरोज' यानी उभार को अचल के पीछे से प्रदर्शित करते है, यहाँ कवि केशव के केश

1 यामिनी–जागी अपरा पृष्ठ–21
2 सषि, बसन्त आया निराला रचनावली भागी (1) पृष्ठ – 254

कलि यानी नवयौवन नायिका के बाल का खुलकर विखरना 'क' की आवृत्ति का बार–बार प्रयोग अनुप्रास को स्वयमेव स्थान देता है।

छायावादी कविता की कोमलकान्त पदावली, वर्णन की सजीवता एव सगीतात्मकता द्रष्टव्य है, विप्रलम्भ–श्रृगार के अर्न्तगत नायिका की स्मरण दशा का सुन्दर चित्र निराला जी ने खीचा है।

''सुमन भर लिय
सखि बसन्त गया।
हर्ष–हरण–हृदय
नही निर्दय क्या?''[1]

कवि एक नायिका का दूसरी नायिका से उसकी विह्वल और पश्चाताप का वर्णन कराते हुए कहलवाता है कि वे सखि! बसन्त ऋतु तो बीत गयी पर तुमने फूल एकत्र नही किए अर्थात् प्रिय– मिलन के अवसर पर सकोचवश पूर्ण सभोग–सुख प्राप्त नही किया। हृदय की प्रसन्नता का हरण करने वाला वह स्मरण बडा ही कठोर है। यहाँ कवि हर्ष, हरण, हृदय (हृदय के हर्ष को हरने वाला) मे 'ह' की आवृति का कई बार प्रयोग कर कवि ने अनुप्रास को जगह दी है।

छायावादी काव्य की एक और विशेषता है कि वह प्रकृति को सिर्फ एक सुन्दर नायिका के रूप मे ही नही देखता अपितु उसे उपदेशिका के रूप मे ग्रहण करता है। साथ ही साथ भारतीय जन–मानस के कर्म के सद्मार्ग पर चलकर आगे बढने की प्रेरणा भी देता है–

''बहती इस विमल वायु मे,
वह चलने का बल तोलो–

---

1 'शेष'– निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 155

मुद्रित दृग खोलो।"[1]

यहॉ कवि ने मानव को प्रकृति के माध्यम से कर्मशील जीवन का सन्देश देते हुए कहता है कि मानव को अपने आलस्य तन्द्रा क्लान्ति एव अवसाद को त्यागकर अपने कर्मपथ मे जुट जाना चाहिए। बहती इस विमल वायु मे 'व' की आवृत्ति का बार–बार आना, अनुप्रास के समाहित होने का सूचक है।

कवि निराला ने शायद अपने काव्य–जीवन मे पहली बार एक शोषित, प्रताडित एव समाज मे अपमान का घूट पीकर रहने वाली शोषित नारी के जीवन का इतना करीब से देखा जॉचा और लेखनी के माध्यम से परखा भी है उसी शोषित एव विवशता से युक्त नारी का चित्र कवि ने काव्य मे उतारा है –

"देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा छिन्नतार,
x x x
जो मार खा रोई नही
सजा सहज सितार ।"[2]

महाकवि की यह रचना एक प्रगतिवादी काव्य की अभूतपूर्व रचना है यहॉ निराला सदृश्य विशालकाय एव स्वस्थ व्यक्ति को देखकर उसने सामने के भवन की ओर देखा उसने अपने फटे कपडो मे से झॉकते हुए शरीरागो की ओर दृष्टिपात् किया और यह सब किया एकान्त समझकर। साथ ही साथ वह कॉप भी उठी, उसके माथे से पसीने की बूँद नीचे गिर गयी। वह अपने पत्थर तोडने के बाद काम मे फिर पूर्ववत् लग गयी यहॉ सजा सहज सितार मे 'स' आवृत्ति बार बार हुई है अनुप्रास अलकार का पुट स्पष्ट झलक रहा है।

---

1 प्रभावी निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 196
2 तोडती पथ्थर. निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ–342

छायावादी कवियो मे राष्ट्र प्रेम कूट–कूटकर भरा हुआ था, उसमे से निराला जी का सारा जीवन कठिन परिस्थितियो मे होते हुए भी राष्ट्र के लिए ही समर्पित रहा करता था। यहॉ कवि निराला भारत–माता की बन्दना करते हुए कहते है कि–

''मूर्ति अश्रु जल धौत विमल
दृग जल से पा बलि–बलि कर दूॅ।''[1]

कवि निराला बडे ही बोझिल मन से कहते है हे! भारत–माता दुःख सहन करके मुझको जो शक्ति प्राप्त हो और उसके द्वारा मै इस जन्म मे कुछ कृत–कर्म करके उसके पूजा–फल को मै तेरे ऊपर न्योछावर कर दूॅ। दुःख और त्याग मे ही जीवन का प्रकाश निहित है। किसी ने ठीक ही कहा है कि ''रगलाती है हीना, पत्थर पर घिस जाने के बाद।'' बल–बलि (न्योछावर करना) मे 'ब' की आवृत्ति कई बार हुई है अनुप्रास की झलक स्पष्ट है।
कवि निराला ने भारतीय जनमानस मे मानो जनजागरण का कार्य किया–

''किरण–दृक्–पात, आरक्त किसलय सकल,
शक्त द्रुम, कमल–कलि –पवन–जल –स्पर्श–चल।''[2]

देश के जो लोग राष्ट्र की धारा मे नही शामिल हुए थे राष्ट्रीयता का भाव भरने के सफलता पायी। इस प्रकार स्वतन्त्रता की आवृति का कई बार आना अनुप्रास का द्वैतक है।

अस्त होते हुए सूर्य तथा उस समय के वातावरण आसमान मे छाई लालिमा आदि के सौन्दर्य का चित्र कवि ने अपने काव्य में उतारा है–

''अस्ताचल रवि, जल छल–छल–छवि

---

1 मातृ–बन्दना अपरा पृष्ठ – 28
2 जगा दिशा का ज्ञान अपरा पृष्ठ – 29

स्तब्ध, विश्वकवि, जीवन उन्मन।।"[1]

कवि ने इस कविता मे प्रकृति का वर्णन आलम्बन के रूप मे किया है सम्पूर्ण वातावरण शान्त है मानो सम्पूर्ण राष्ट्र चिरनिद्रा मे सो रहा है ऐसे मे छल–छल–छवि के ध्वन्यात्मकता के कारण प्रकृति बहुत ही हृदयग्राही बन गयी है। छल–छल–छवि की ध्वनि की आवाज मानो कोई सगीतमय धुन हो, और रात के शान्तिमय वातावरण को मधुर ध्वनि के माध्यम से एक अलग मादकता प्रदान करती है। इसमे अनुप्रास अलकार की उपस्थिति है।

कवि निराला देशवासियो को अग्रेजियत से दूर होकर, लोगो को राष्ट्र–भाषा एव भारतीय सस्कृति से जोडने का प्रयास करते है। कवि यहॉ राष्ट्रभाषा की वन्दना करते हए कहता है कि–

"बन्दूॅ पद सुन्दर तव,
छन्द नवल स्वर गौरव।
जननि–जनक–जननि–जननि,
जन्म भूमि–भाषे ।।"[2]

कवि निराला ने हिन्दी साहित्य मे पहली बार मुक्त छन्द का प्रयोग कर छन्द एव सगीत का समन्वय किया था, वह सगीतात्मक लय को काव्य के लिए अनिवार्य मानते थे, कवि का स्पष्ट मत था कि कविता यदि लयवद्ध हो तो पाठक या श्रोता स्वयमेव काव्य की तरफ आकर्षित होते चले आएगे। इस प्रकार कविता का अर्थ पाठक के मस्तिष्क मे रच–बस जाएगा। जननि, जनक, जननि–जननि यानि (पिता, माता की माता) मे 'ज' की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है अनुप्रास का पुट झलकता है।

1 अस्ताचल रवि निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 246
2 'बन्दूॅ पद, सुन्दर तब' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 247

छायावादी कवियो मे अन्य गुणो के साथ ही साथ एक गुण और परिलक्षित होता है–वह है ज्ञानदयी मॉ सरस्वती की वन्दना। हालाकि सम्पूर्ण काव्य मे प्रकृति एव सुन्दर नायिका का उल्लेख बार–बार प्रस्फुटित हुआ है लेकिन मॉ सरस्वती की उपासना कवि निराला के काव्य का एक महत्वपूर्ण अग है।

"जागो, जीवन धनिके।
विश्व–पण्य–प्रिय वणिके।
x x x
खोलो उषा–पटल निज कर आयि,
ज्ञान–विपणि–खनिके।"[1]

कवि निराला यहॉ यह स्पष्ट करना चाहते है कि ज्ञान और सम्पत्ति के समन्वय द्वारा ही देश की प्रगति सभव है। और जहॉ देश प्रगति और ज्ञान के विकास की बात हो तो हमारा ध्यान महाज्ञानी, वाक्पटु विवेकानन्द की तरफ जाना स्वाभाविक है निराला जी पर विवेकानन्द का प्रभाव कलकत्ता प्रवास के समय से ही हो गया था, जो उनके काव्य मे रह–रहकर स्वय आ जाया करते है। पण्य–प्रिय मे 'प' की आवृत्ति आने से अनुप्रास का प्रभाव काव्य पर झलकता है।

कवि निराला के काव्य लिखने का एक अलग अन्दाज था वे जिस तरह सामाजिक जीवन मे परम्पराओ, रूढियो का परित्याग कर स्वतन्त्र रूप से जीने के आदि थे उसी प्रकार काव्य मे भी वे बन्धन–मुक्त होकर कविता–पाठ करते देखे गये है। तभी तो वही पहले कवि हुए जिन्होने अपने सम्पूर्ण काव्य को छन्दो के बन्धन से मुक्त कर सम्पूर्ण काव्य जगत को एक नई दिशा देने की कोशिश

1 जागो जीवन धनिके। निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ–256

की। कवि निराला अपने सम्पूर्ण जीवन मे परम्पराओ रूढियो को बार–बार तोडा हालाकि उनके इस कार्य से लोगो ने उन्हे तिरष्कृत एव बहिष्कृत भी किया लेकिन यह मनमौजी कवि बिना किसी की परवाह किए इन रूढिवादी समाज से अकेले लडने का वीणा उठाया। हलाकि इस विद्रोह की कीमत भी कवि को बहुत चुकानी पडी। इसीलिए इनके काव्य मे भी छन्दो से बन्धन–मुक्त होकर रचना की है

"उतरी नभ से निर्मल राका,
पहले जब तुमने हँस ताका,
बहुविध प्राणो को झकृत कर,
बजे छन्द जो बन्द रहे।"[1]

निराला जी ने यहाँ यह दर्शाने का प्रयास किया है कि नायिका के हास्य–दर्शन प्राप्त करते ही मेरे कण्ठ से कविता फूट पडी थी। अर्न्तरात्मा से अनेक भाव भी परिलक्षित होते है। और कोई भी काव्य यदि अर्न्तरात्मा की आवाज से निकला हो तो कविता मे वेदात्मक भाव स्वयमेव परिलक्षित हो उठेगे। नभ से निर्मल मे 'न' की आवृत्ति कई बार हुई अनुप्रास अलकार स्वयमेय झलकता है।

कवि निराला अपने सम्पूर्ण काव्य मे चाहे व प्रकृति रूपी नायिका हो या अध्यात्म से जुडे राम हो सबका मानवीकरण करते हुए काव्य जगत को एक नया आयाम दिया है। यहाँ कवि सामान्य मानवरूपी 'राम' एवं अन्याय का पर्याय बन चुका रावण के सग्राम की चर्चा को बडे ही सजीव ढग से चित्रित करने का प्रयास किया है–

"रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा अमर,
रह गया राम, रावण का अपराजेय समर।

---

1 नुपुर के स्वार मन्द रहे अपरा पृष्ठ–39

आज का तीक्ष्ण–शर–विघृत–क्षिप्र–कर वेग–प्रखर,

शत–शेल सम्वरण–शील–नील–नभ– गर्जित–स्वर।"[1]

काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से यह कविता आधुनिक हिन्दी काव्य के प्रगति की सीमा मानी जा सकती है। इसमे राम–रावण के युद्ध का वर्णन है। महाशक्ति रावण को सरक्षण प्रदान करती है, राम के सभी वार (तीर से छोडे गए) खाली जाते है । 'शत–शेल सम्बन्ध शील मे अनुप्रास अलकार है।

कवि निराला विभीषण की शकाओ को निर्मूल बताते हुए तथा उन्हे सान्त्वना देते हुए राम के उत्तर का वर्णन करते हुए कहते है–

"रावण का अधर्मरत भी अपना, मै हुआ अपर

यह रहा शक्ति का खेल समर शकर–शकर।

करता मै योजित बार–बार शर–निकर निसित,

हो सकती जिनसे यह सस्कृति सम्पूर्ण विजित।।"[2]

बगाल मे दीपावली के समय काली–पूजा का प्रभाव स्पष्ट है निराला के कवि हृदय ने सदैव शक्ति की पूजा की है यह सम्पूर्ण काव्य मानो महाशक्ति का खेल हो गया है कवि कहता है, हे शकर रक्षा करो! मै शान पर चढाए हुए उन तीक्ष्ण वाणो का बार–बार सधान करता हूॅ यहॉ 'शक्ति शकर–शकर मे अनुप्रास की झलक स्पष्ट है, कवि कहता है कि कोई अदृश्य शक्ति अन्याय का प्रतीक रावण की सहायता कर रही है। रावण का अट्टहास एवं गर्जन–युक्त स्वर राम को आहत कर रहा था 'राम' के सारे अस्त्र रावण के ऊपर निष्प्रभावी हो गए थे।

डाली पर पार्वती का आरोप करते हुए कवि निराला कहते है –

रूखी री यह डाल,

---

1 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ–239

2 'राम की शक्ति–पूजा' निराला की रचनावली भाग(1) पृष्ठ–334

बसन बासन्ती लेगी ।

x x x

शैल–सुता अर्पण–अशना ।"[1]

यहॉ कवि शिव को पति के रूप मे प्राप्त करने के लिए तपस्या करती हुई पार्वती ने पत्तो तक का आहार करना त्याग दिया था। जिस प्रकार रीति परिपाटी मे कवि नारी मे प्रकृति का दर्शन पाते थे, उसी प्रकार यहॉ भी नारी मे प्रकृति का समावेश परिलक्षित है, कवि निराला के काव्य मे नारी की रूप–रेखा को प्रकृति से जोडकर दिखाने पर अनेक आलोचको ने निराला के काव्य मे रीति कालीन कवियो का प्रभाव मे आने की बात कही है जबकि यह सही नही है। 'ब'और 'अ' की आवृत्ति से अनुप्रास का प्रभाव झलकता है।

छायावादी कवि प्रकृति के बसन्त–रूपी पतझड एव नई कोपलो का ही वर्णन नही करते है। अपितु ग्रीष्मकालीन प्रकृति–रूपी नायिका का अतरग एव बहिरग चित्र खीचने का प्रयास किया है.–

"वर्ष का प्रथम,

पृथ्वी के उठे उरोज मजु पर्वत निरूपम।

किसलयो बॅधे,

पिक–भ्रमर–गुज मुखर प्राण रच रहे सधे।"[2]

यहॉ कवि पृथ्वी पर जगह–जगह उठे पर्वत की तुलना नायिका के उरोज से की है। यहॉ कवि ने प्रकृति का वर्णन आलम्बन रूप मे किया है। मानवीकरण की सरल पद्धति अपनायी गयी है। यहॉ निराला ग्रीष्म की तपन के माध्यम से ओज की मधुर व्यजना की है। उपर्युक्त काव्य लय एव संगीत युक्त है,

---

1 बसन्त बासन्ती लेगी अपरा पृष्ठ–58

2 वन–बेला निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 345

'पिक–प्राक' मे 'प' की आवृत्ति का बार–बार होना अनुप्रास को परिलक्षित करता है।

कवि निराला ने रीतिकालीन कवियो की तरह नख–सिख वर्णन तो नही किया है। लेकिन ये भी रीतिकालीन काव्य लहरियो के हिचकोलो से सरावोर नही तो अछूते नही थे। इस काव्य मे भी कवि ने नेत्रो का अन्य कोणो से काव्यात्मक चित्र खीचने का एक सफल प्रयास किया है–

"प्रेम–पाठ के पृष्ठ उभय ज्यो,
खुले भी न अब तलक खुले हो,
नित्य अनित्य हो रहे है, यो
विविध विश्व दर्शन प्रणयन ये।।"[1]

रीतिकालीन शैली का यह शब्द चमत्कार ही है। कवि ने नायिका के सुन्दर नयन को इस प्रकार वर्णन किया है मानो उसके दोनो नयन प्रेम–पाठ के दो पृष्ठ है, जो नित्य और अनित्य रूप मे मानो ससार के समस्त दार्शनिक सिद्धान्तो को रचने वाले है। प्रेम पाठ के पृष्ठ एव विविध विश्व मे 'प' और 'ब' की आवृत्ति का पुट अनुप्रास अलकार को दर्शाता है।

छायावादी काल की कविताओ मे ओजपूर्ण एव देश भक्ति से युक्त कविताओ का सुन्दर समावेश किया गया है, इसी कम को आगे बढाते हुए निराला जी ने भी महाराज जयसिह के नाम छत्रपति शिवाजी को पत्र का काव्यमयअकन किया है। शिवाजी अपने पत्र के माध्यम से जयसिह को सबोधित करते हुए कहते है कि–

"दुर्गद् ज्यो सिन्धुनद,
और तुम उसके साथ
वर्षा की बाढ ज्यो

---

1 फुल्ल नयन ये अपरा पृष्ठ – 75

भरते हो प्रबल वेग प्लावन का,

बहता है देश निज।।"[1]

निराला के उपर्युक्त काव्य मे देश–भक्ति, राष्ट्रप्रेम का स्वर मुखर है, कवि देशवासियो को चेतावनी एव भविष्य का मार्गदर्शन भरे लहजे मे सम्बोधित करते हुए अतीत के कुछ दृष्टातो को उदाहरण स्वरूप दर्शाते हुए कहता है कि हे देशवासियो! आपसी फूट से दुश्मन सदा मजबूत होता है। हमारे देश पर जब जब विदेशी ताकते हावी हुई है तब तब हम हिन्दुस्तानियो के सहयोग से ही हाबी हुई है। वर्तमान विदेशी ताकत भी उपरोक्त सिद्धान्तो का वखूबी पालन करते हुए हमे गुलामी की दासता रूपी जजीरो से जकड रखे है। उनकी यह नीति 'फूट डालो और राज करो' की सफल मत होने दो और राष्ट्र–निर्माण मे मिलजुलकर हिस्सा लो, और इन फिरगियो को देश से बाहर करने मे सहयोग दो। प्रबल, प्लावन मे 'प' की आवृत्ति से अनुप्रास की झलक स्पष्ट है।

यमुना को देखकर कवि निराला के मन मे यमुना से सबधित समस्त अतीत जागृत हो उठता है, वह अनेक प्रकार की कथाओ का सार लेकर इस कविता की सृष्टि करते है कवि अपने सखि! यमुना को सबोधित करते हुए कहता है कि –

"अलि अलको के तरल तिमिर मे,

किसकी लोल लहर अज्ञात।"[2]

कवि के उपुर्यक्त काव्य मे रहस्यवाद की मार्मिक व्यंजना की गयी है कवि काव्य मे कल्पनाओ की उडान भरता है। यहॉ कवि की रहस्यवादी जिज्ञासा देखते ही बनती है। 'अ' और 'ल' की आवृत्ति बार–बार होने से अनुप्रास दृष्टव्य है।

---

1 महाराज शिवाजी का पत्र निराला रचनावली (1) पृष्ठ–157

2 यमुना के प्रति   निराला रचनावली भाग (1)   पृष्ठ – 118

कवि निराला 'स्मृति' के भावो का मानवीकरण करते हुए मन के भावो का सजीव चित्रण करने का प्रयास करते है कवि यहॉ अपने पूवजो के अतीत की स्मृति करते हुए कहता है कि–

> "विजन–मन–मुदित सहेलरियॉ
> स्नेह उपवन की सुख, श्रृगार,
> आज खुल खुल गिरती असहाय,
> विटप वक्ष स्थल से निरूपाय।"[1]

कवि निराला यहॉ प्रकृति के माध्यम से पूर्वजो एव बुर्जुगो की मनोदशा का चित्रण करते हए कहते है कि जो लोग अब तक हमारे देश की राष्ट्र की या परिवार की शोभा बढाते थे, मेरे परिवार के आवश्यक अग थे। वही अब असहाय एव अनाथ से दिखते है। कवि का इशारा साफ है कि भारतीय सस्कृति कभी पूर्वजो एव बुजुर्गों को अपमान करने की इजाजत नही देती है, अपितु हमारी सस्कृति का मूल–मत्र ही है कि पूर्वजो एव बुजुर्गो की सेवा तथा उनके द्वारा प्राप्त आर्शीवाद ईश्वर के प्रसाद सदृश्य है। 'म' 'ब' 'स' की आवृत्ति बार–बार होने से अनुप्रास स्पष्ट झलकता है।

कवि निराला ने गरीबी को बहुत करीब से देखा जॉचा और परखा था। आर्थिक विपन्नता से वे अति त्रस्त थे, फिर भी किसी भी कठिन परिस्थिति से उबरने का हुनर अगर किसी कवि मे था तो वे महाकवि ही थे कवि विपरीत परिस्थितियो के होते हुए भी जीवन के प्रति आस्था एव दृढ विश्वास दिखाता है। और कह उठता है–

> "द्वार दिखा दूँगा फिर उनको,
> है मेरे वे जहॉ अनन्त–

---

1 स्मृति – निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 140

अभी न होगा मेरा अन्त।"[1]

कवि निराला अपने आर्दश के अनुरूप आचरण करके, समाज के समस्त दु खो को दूर करके, सुख का वातावरण उत्पन्न करना चाहते है वह चाहते है कि समाज कष्ट एव क्लेष से निजात पा ले। 'द' की आवृत्ति अनुप्रास को परिलक्षित करती है।

कवि की अर्तरात्मा उसे झकझोरते हुए कहती है कि हे! परमात्मा हम असहाय के लिए अपने स्नेहमयी द्वार खोल दे और उसको अपने शरण मे ले लो, या यो कहे की कवि निराला आत्मा का परमात्मा से मिलन करवाना चाहते है –

"स्नेह रत्न, मै बडे यत्न से आज

कुसुमित कुज– द्रुमो से सौरभ साज।"[2]

निराला के इस काव्य मे रहस्यमयी काव्य–भावना मुखर है। आत्मा परमात्मा मे लीन होना चाहती है यानी अहकार का उन्मूलन ही मानव को परमात्मा से मिलवा सकती है। कवि यहॉ स्पष्ट करना चाहता है कि अगर समाज का, राष्ट्र का, सच्चा प्रेम तुझे चाहिए तो सबसे पहले आप अहकार का परित्याग करो फिर स्नेहमयी वर्षा से आप स्वयमेव सराबोर हो जाएगे। कुसुमित कुज मे 'क' की आवृत्ति का बार–बार आना अनुप्रास अलकार की उपस्थिति दर्ज कराता है।

कवि निराला का काव्य अनेक सभानाओ से परिपूर्ण है। कवि जहॉ रहस्मययी भावना से ओत–प्रोत है तो वही अदृश्य शक्ति का आह्वान करते हुए कहता है कि–

---

1 ध्वनि निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 126
2 अजलि अपरा पृष्ठ–112

"एक बार बस और नाच तू श्यामा।
सामान सभी तैयार,
कितने ही है असुर, चाहिए कितने तुमको हार?
कर–मेखला, मुण्ड–मालाओ से बन मन अभिरामा–
एक बार बस और नाच तू श्यामा।"[1]

कवि यहॉ महाशक्ति से प्रलय अर्थात् जन–कान्ति का आह्वान करता हुआ कहता है कि हे अदृश्य शक्ति एक बार भारतीय जन–मानस को अन्दर तक ऐसा झकझोर दे कि समूचा समाज राष्ट्रीय–भावना से ओत–प्रोत होकर तात्कालिक व्यवस्था के खिलाफ उठ खडा हो, कवि का इशरा साफ था कि एक बार अगर समूचा राष्ट्र इन फिरगियो के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजा दे तो ये फिरगी इग्लैड का रास्ता पकड लेगे और हम देश–वासी गुलामी की दासता से मुक्ति प्राप्त कर लेगे बस आवश्यकता है तो एक जन–कान्ति की । उपर्युक्त कविता मे 'म' की आवृत्ति का बार–बार का आना अनुप्रास की झलक दिखाता है।

छायावादी कवियो मे निराला ही ऐसे कवि है जो अपनी विफलता को भी काव्य मे स्थान देते है। अपनी कमियो को स्वय दर्शाना कोई सामान्य कवि के बस की बात नही –

"प्रेम हाय आशा का वह भी स्वप्न एक था।
विफल हृदय तो आज दु ख ही दु ख देखता।।"[2]

कवि एक विरहिणी को माध्यम बनाते हुए अपनी हृदय की विफलता का चित्र सजीव तरीके से खीचा है। यहॉ कवि के काव्य मे अभिव्यक्ति लौकिक होते हुए भी रहस्यात्मक बन गयी है। कवि प्राचीन स्मृतियो को अपने हृदय मे समेटे

---

1 आवाहन निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 85
2 विफल वासना निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ – 77

हुए कहता है कि मेरा विरह–दग्ध ह्रदय का ताप ही सूर्य की इन प्रवल किरणों में समा गया है जो अपने स्पर्श से ही प्राणियों को झुलसाती है। 'द' की आवृत्ति अनुप्रास की झलक दिखाता है।

निराला जी अपनी प्रेयसी के माध्यम से लौकिक श्रृंगार संबंधी भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं, साथ ही साथ एक चिर नव –यौवना नायिका के चित्र को उकेरा है:–

"गर्वित, गरीयसी अपने में आज मैं।
रूप के द्वार पर;
मोह की माधुरी।"[1]

कवि ने अपने सम्पूर्ण कविता मे मनौवैज्ञानिक दृष्टिकोण को उद्घाटिक करता है कवि की नायिका कहती है कि शरीर रूपी वृक्ष के तारूण्य द्वारा घिर जाने पर मैं सुन्दरता से भरी हुई पल्लवित लता के समान हो गयी हूँ नायिका जीवन के तारूण्य के प्रथम पायदान पर पुण्य की तरह खिल गयी है उसी तरह जिस तरह बसन्तागमन के समय वृक्ष फूलों से लद जाते हैं; लेकिन इतना सब के होते हुए भी प्रेम के प्रवाह में निराला की नायिका अपना संयम बनाए रखती है। जब कि पुरूष उस सुन्दरता से वेसुध होकर बह जाते हैं। अर्थात् निराला की नायिका संयमशील, धैर्यशील एवं लज्जाशील है। तो नायक अपनी भावनाओं पर काबू पाने में असमर्थ। उपर्युक्त काव्य में 'ग' और 'म' की आवृत्ति का बार–बार होना अनुप्रास का दर्शन कराता है।

छायावादी कवियों ने काव्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अपेक्षा मानवीय दृष्टिकोण को अधिक महत्व दिया है कवि निराला स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि हालांकि विज्ञान ने चहुमुँखी विकास किया है। परन्तु मानव–मन का उत्तरोत्तर

---

1. 'प्रेयसी' निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ–328।।

ह्रास हुआ है। निराला जी समाज के तथा कथित –शिक्षित वर्ग की ओर इशारा करते हुए कहते है कि–

"हॅसते है जडवाद ग्रस्त प्रेत ज्यो परस्पर
विकृत–नयन मुख कहते हुए अतीत मयकर।"

कवि भारतीय शिक्षित समाज पर जो अपने पूर्वजो की जगली कहने तक का दुस्साहस करते है उन्हे कवि सासारिक भौतिकवाद मे फॅसी हुई विकृति मानसिकता का प्रतीक बताता है। निराला जी डार्विन के विकासवाद पर तीखा व्यग करते हुए कहते है कि इस चिन्तन के अनुसार मनुष्य बन्दर का बशज है हमारे पूर्वज सर्वथा जगली थे और हम क्रमश अधिकाधिक सभ्य होते जा रहे है। निराला जी सम्भवत. यह कहना चाहते है कि–

"We call our forefather's fools,
wise as we grow,
no double our children
will callus so"

'सम्बोधन' –

सम्बोधन अलकार अर्न्तमन् को उद्‌घाटित करता है। इस अलकार मे कभी अमर्ष भाव, कभी आह्लाद, कभी आत्मग्लानि, कभी शका, कभी लज्जा स्पष्ट होती है।

कवि निराला सरस्वती –स्वरूपा भारत–माता की अपने अतर्मन् मे वन्दना करते हुए कहते है कि–

भारति जय–विजय करे।
कनक शस्य कमल धरे।[1]

---

1 भारती – वन्दना अपरा पृष्ठ – 9

महाकवि निराला के यह गीत राष्ट्रीय जन–जागरण के लिए लिखा है। कवि ने माँ सरस्वती के रूप मे भारत–माता की कल्पना की है, सच तो यह है कि यह गीत प्रार्थना–परक है परन्तु इसमे राष्ट्रीयता का भाव मुखर है देश का प्रत्येक पदार्थ कवि के लिए प्ररणापद है, यहाँ भारतीय सस्कृति के चिह्न कमल का वर्णन भारतीय सस्कृति के प्रेम का द्योतक है। कवि ने बन्दना करता है कि राष्ट्र अन्न–जल से परिपूर्ण हो। यहाँ कवि ने अपने अतर्मन् मे सबोधन अलकार को पिरोने का एक सफल प्रयास किया है।

महाकवि निराला देशवासियो का आह्वान करते हुए कहते है कि हे राष्ट्र के सपूतो भारत माँ तुम्हे पुकार रही है, आवाज दे रही है कि कम से कम एक बार राष्ट्र–निर्माण मे अपना योगदान दो–

"जागो फिर एक बार।
प्यारे जगाते हुए सब तारे तुम्हे,
x x x
खडी खोलती है द्वार–
जागो फिर एक बार।"[1]

इसमे कवि बताता है कि सकल प्रकृति मे जागरण की लहरे तरगायित है। ऐसी स्थिति मे भारतवासियो को कर्तव्य से विमुख होकर सोते रहना ठीक नही है। चूकि यह काव्य 1918 के आसपास का है जब तिलक, और लाला जी जैसे गरमदल के नेताओ का उभार था। यह सम्पूर्ण काव्य राष्ट्र को सम्बोधन है।

कवि निराला निष्क्रिय पडे भारतीय जन–मानस का आह्वान करते हुए उन्हे राष्ट्र निर्माण मे बढ चढकर हिस्सा लेने का मानो निमत्रण देता है। कवि

---

1 जागो फिर एक बार (1) निराला रचनावली भाग (1) · पृष्ठ – 148

अपने इस कविता के माध्यम से जागृति एव कर्मशीलता की प्रेरणा देते हुए आह्वान करता है कि –

"प्रिय मुद्रित दृग खोलो।
गत स्वप्न–निशा का तिमिर–जाल,
नव किरणो से धो लो–
मुद्रित दृग खोलो।"[1]

कवि प्रकृति मे अज्ञात शक्ति का दर्शन कर जीवन की प्रेरणा ग्रहण करता है। निराला राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए आह्वान करते है कि हे राष्ट्रवासियो अँधेरा छँट गया है। सूर्योदय हो रहा है उठो और नई ऊर्जा, के साथ नई शक्ति के साथ राष्ट्र निर्माण मे तन–मन–धन से लग जाओ और देश विकास के पथ पर ले जाओ। कवि यहाँ भी राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए जन आह्वान कर रहा है।

छायावादी कविओ ने वैसे मातृ–भाषा को महत्पूर्ण स्थान दिया है। लेकिन इसमे निराला जी का मातृ–भाषा प्रेम सर्वविदित है। ऐसा मालूम पडता है कि राष्ट्रीयता एव मातृ–भाषा प्रेम इस महामानव के रग मे कूट–कूट कर भरी हुई है–

"दृग–दृग को रचित कर
अजन भर दो भर–
दृग–दृग की बँधी सुछवि,
बाँधे सचराचर भाव।"[2]

निराला ने हिन्दी साहित्य मे पहली बार मुक्त छन्द का प्रयोग कर छन्द एव सगीत का समन्वय किया था। वह सगीतात्मक लय को काव्य के लिए

---

1 प्रभाती निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ–196
2 बन्दूँ पद सुन्दर तव निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 247

अनिवार्य मानते थे यहॉ सम्भवत उन्होने इसी अभिनव साधना की ओर सकेत किया है। कवि के सम्पूर्ण काव्य मे मातृ–भाषा प्रेम मुखर हुआ है। निराला जी कहते है, हे! माता तुम प्रत्येक पाठक को प्रसन्न करके उसको नवीन ज्योति प्रदान कर दो।

कवि कहना चाहता है कि ज्ञान और सम्पत्ति के समन्वय द्वारा ही देश की प्रगति सम्भव है। स्वामी विवेकानन्द के व्यवहारवादी पाश्चात्य जीवन–दर्शन का प्रभाव कवि पर स्पष्ट परिलक्षित होता है क्योकि महाकवि जीवन को जीना पश्चिम–बगाल मे सीखा था तथा विवेकानन्द को काफी करीब से जॉचा परखा है –

> ''जागो, जीवन–धनिके!
> विश्व–पण्य–प्रिय वणिके!
> x x x
> खोलो उषा–पटल निज कर अयि,
> छविमयि, दिन–मणिके!''[1]

कवि निराला सरस्वती की वदना करते हुए कहता है कि, हे मॉ तुम अपने ज्ञान–रूपी प्रकाश से सम्पूर्ण राष्ट्र का आलोकित कर दो जिससे अन्धकार रूपी अज्ञान की कालिमा छट जाए। वह आह्वान करते हुए कहता है, हे मॉ जागो! भारत दुख के भार से दब रहा है इसको सहारा दो। यहॉ महाकवि विनयावत होकर मॉ सरस्वती को सम्बोधित करते है।

महाकवि निराला 'राम की शक्ति पूजा' नामक काव्य मे हीनभावना से ग्रस्त है जब कोई भी मानव हीन भावना से ग्रस्त होता है। तो उसे अपने जीवन का अर्थ ही समझ मे नही आता एवं अन्दर ही अन्दर आत्मग्लानि महसूस करने लगता है और कवि के राम स्वय अपने आप से कह उठते है कि–

---

1 'जागो जीवन धनिके' निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ–256।।

"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।
जानकी ! हाय उद्धार प्रिया का न हो सका।
वह एक मन और रहा राम का जो न थका,"[1]

साधना की समाप्ति के समय दुर्गा (महाशक्ति) राम की पूजा का कमल रूपी पुष्प चुरा ले जाती है। जब राम को एक सौ आठवॉ कमल नही प्राप्त हुआ तो वे विचलित हो उठे, फिर उन्हे तुरन्त याद आया कि मॉ मुझे सदा राजीवनयन कहती थी फिर क्या था राम अपनी ऑख चढाकर अनुष्ठान पूरा करना चाहते थे। तब तक महाशक्ति उनका हाथ पकड लेती है, और राम को सहयोग का वचन देती है। लेकिन एक सौ आठवॉ कमल गायब हो जाता है तो निराला के राम अपने को धिक्कारते हुए आत्मग्लानि महसूस करते है। यहॉ कवि निराला ने आत्मग्लानि एव सशय का अद्भुत समावेश किया है।

छायावादी कवियो द्वारा पूर्वजो एव बुजुर्गो का सम्मान कोई नयी बात नही है। वैसे भी हमारी सस्कृति मे बुजुर्गो को अनुभव एव सलाह के सर्वोत्तम स्थान दिया गया है, कवि निराला ने बुजुर्ग जाम्बवान से राम को सलाह देते हुए रूपायित किया गया है–

"हे पुरूष सिह। तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ आराधन से दो उत्तर,
x x x
शक्ति की करो मौलिक कल्पना करो पूजन,
छोड दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनन्दन।"[2]

---

1 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) · पृष्ठ – 337
2 राम की शक्ति पूजा निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ–335

कवि निराला अपने राम को पुरूषो मे सिह के समान सम्बोधित करते हुए कहते है कि आप भी शक्ति की उपासना करो। वे अपने राम को उलझन से उबारते हुए कहते है कि जब अन्याय का प्रतीक रावण अपने तप के बल से महाशक्ति का सहयोग प्राप्त कर सकता है तो आप तो सदैव न्याय के सद्मार्ग पर चलते है। स्वाभाविक है कि तामसी शक्ति की अपेक्षा सात्विक शक्तियॉ कही अधिक प्रभावशाली है। यहॉ निराला जी अमर्ष भाव के माध्यम से राष्ट्र को सम्बोधित करते है।

महाकवि निराला अपने काव्य मे अतीत का समावेश करते हुए उसे वर्तमान से जोडने का सफल प्रयास किया है। इसी प्रकार महाराज जयसिह के नाम 'शिवाजी का पत्र' का काव्यमय अकन है। यहॉ छत्रपति शिवाजी महाराज जयसिह को सबोधित करते हुए कहते है—

'वीर। सर्दारो के सर्दार । —महाराज।
वहु—जाति, क्यारियो के पुण्य—पत्र दल भरे
x x x
बशज हो—चेतन अमल अश,
हृदयाधिकारी रवि—कुल—मणि रघुनाथ के।।"[1]

यहॉ महाराजा जयसिह के व्यक्तित्व को निखरते हुए, अपने कुल के गौरव का वास्ता दिलाते हुए अपने राष्ट्र के विकास और उन्नति साथ ही साथ एकता को सुदृढ करने के लिए कवि निराला द्वारा भटके भारतीयों के लिए जन आह्वान भी है।

कवि निराला पूर्व मे लोगो द्वारा किए गए अच्छे कार्यों को अपने 'स्मृति' मे सजोने एव आज के जनमानस के मन मे एक नयी चेतना का आह्वान करते हुए कहते है कि—

---

1 'छत्रपति महाराज शिवाजी का पत्र' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ — 156

"वायु–व्याकुल शतदल–सा हाय,

विफल रह जाता है निरूपाय।"[1]

कवि निराल 'स्मृति' का मानवीकरण करके मन के भावो का सजीव चित्रण करते है। यहॉ कवि सोये हुए अतीत के गीतो को सुनाकर मेरा ध्यान अपनी ओर खीच लेती हो। अर्थात् तुम्हारे आते ही मुझको सब पुरानी बाते याद आ जाती है। कवि उस समय के तेज वायु के द्वारा झकझोरे हुए कमल पुष्पो से भरे हुए तालाब की भॉति असहाय होने के कारण केवल व्याकुल होकर रह जाता है। इस प्रकार कवि के उपरोक्त काव्य मे सम्बोधन का भाव स्पष्ट है।

छायावदी कवि अगर अपने काव्य मे प्रकृति को अधिक स्थान दिया है तो साथ ही अतीत का उदाहरण देकर वर्तमान मे जीने की कला भी बतलाई, यहॉ भी 'खॅडहर के प्रति' नामक कविता के माध्यम से भारत के अतीत गौरव का वर्णन करते है –

"खॅडहर! खडे हो तुम आज भी?

अद्‌भुद अज्ञान उस पुरातन के मलिन साज!"[2]

किसी ने ठीक ही कहा है कि खॅडहर बता रहे है कि इमारत अजीम थी। उपरोक्त पक्ति के माध्यम से कवि भारतवासियो को अतीत की गौरवगाथा सुनाकर भारतीयो मे नव–उत्साह भर कर देश की मुख्य–धारा के जुडने का आह्वान करता है। कवि की यह कविता खॅडहर के प्रति देश–भक्ति की भावना से ओत–प्रोत है। यहॉ कवि अतीत के खॅडहर के धूल को माथे पर उसी प्रकार लगाने का आह्वान करता है कि जिस प्रकार किसी पूर्वज के आर्शीवाद को अपने माथे पर लगाकर एक अलग सुकून प्राप्त होता है।

---

1 'स्मृति' निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ–81
2 खॅडहर के प्रति निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ–81

निराला के काव्य मे कभी–कभी दार्शनिक दृष्टिकोण दिखाई पडता है, कवि यहॉ किसी अलौकिक प्रिया को सम्बोधित करते हुए कहता है कि–

"कहा जो न, कहो।
x x x
नित्य–नूतन प्राण अपने
बॉधती जाती मुझे कर–कर
व्यथा से दीन।।"[1]

कवि निराला मृत्यु के सबध मे दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाते है। कवि का कहना है कि मृत्यु भी वस्तुत एक प्रकार की मुक्ति है क्योकि वह सासारिकता से छुटकारा देती है। कवि की यहॉ अलौकिक प्रिया एकनिष्ट होकर प्रेम करना चाहती है इसी मे इसको सर्वस्व मिल जाएगा। वैसे यह ससार अनन्त है यानी सीमाहीन है। कवि यहॉ जन–मानस को मरने से न डरने की चेतावनी देता है।

पुनरूक्ति प्रकाश

जहॉ पर भावो मे बल देने के लिए एक शब्द की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो या किसी कथन को रमणीक बनाने या एक शब्द के बलाघात को प्रदर्शित करना पुनरूक्ति अलकार की श्रेणी मे आता है। जैसे–

कवि निराला ने प्रकृति का वर्णन आलम्बन के रूप मे बार–बार किया है, कवि ने प्रकृति के उतार–चढाव, पतझड एव बसन्त बहार का सुन्दर समावेश इस कविता मे भी देखने को ये मिलती है।

"तिरती है समीर–सागर पर,
अस्थिर सुख पर दुख की छाया
ताक रहे है, ऐ विप्लव के बादल।

---

1 मरण – दृश्य निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–359

फिर–फिर।"[1]

उपरोक्त काव्य मे प्रकृति का कोमल रूप के साथ–साथ कठोर रूप का भी वर्णन किया गया है यहॉ फिर–फिर का भाव गुडगुडकर मे पुनरूक्ति प्रकाश झलक रहा है।

निराला जी कहते है कि वे भारतवासियो। युगो की निद्रा त्यागकर अब भी तो जाग जाओ यानी कवि यहॉ जागरण का सन्देश देते हुए कहता है कि–

"उगे अरूणाचल मे रवि

आयी भारती–रति कवि–कण्ठ मे,

x x x

ऐसे ही ससार के बीते दिन, पक्ष मास

वर्ष कितने ही हजार–

जागो फिर एक बार।"[2]

कवि का इशारा स्पष्ट है कि यदि सकल प्रकृति मे जागरण ही लहरे तरगायित है, ऐसी स्थिति मे भारतवासियो को कर्तव्य से विमुख होकर सोते रहना ठीक नही है इसमे कवि आत्मानुभूति की जागरा का कारण बताता है और वासना के पथ मे लिप्त भारतवासियों को जगाता है। सच तो ये है कि इस काव्य मे कवि ने प्रकृति मे नित नए परिर्वतन का आभास दिलवाया है। क्षण–क्षण यानी (जल्दी–जल्दी) मे पुनरूक्ति प्रकाश दिखाता है।

सन्ध्या–कालीन निस्तब्ध वातावरण का सजीव चित्र कवि ने अपनी कविता मे उकेरा है। प्रकृति मे नारी का दर्शन छायाकारी काव्य शैली की विशेषता यहॉ दृष्टव्य है। सन्ध्या–सुन्दरी का स्वरूप वर्णन रीतिकाल की

---

1 बादल–राग भाग–6 निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ–135
2 जागो फिर एक बार भाग 1) – निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 77

नख–शिख शैली पर किया गया है। अधरो एव कुचित केशो का सुन्दर वर्णन है –

> तिमिराचल मे चचलता का नही कही आभास,
>
> मधुर मधुर है दोनो उसके अधर–
>
> x x x
>
> गुॅथा हुआ उन घुधराले काले बालो से
>
> हृदय–राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।"[1]

सन्ध्या का समय है चारो ओर अधकार एव गभीरता का साम्राज्य है उस गम्भीर वातवरण मे केवल एक तारा ही चमक रहा है प्रत्यक्षत यह किसी शहर की सन्ध्या नही है यह किसी गॉव की सन्ध्या है जहॉ सूर्यास्त के साथ सब काम काज बन्द हो जाते है। मधुर–मधुर और काले–काले मे पुनरूक्ति प्रकाश झलकता है।

कवि निराला बादल से विनयावत् हो कर निवेदन करता है कि नव–जीवन निर्माण के लिए राग–रग का वातावरण हितकर नहीं है इसी कारण कवि मेघ से गर्जन की प्रार्थना करता है वह उसके प्रलयकारी रूप मे नवीन सृष्टि के निर्माण का दर्शन करता है –

> "घन,गर्जन से भर दो वन
>
> तरू–तरू पादप पादप–तन।
>
> x x x
>
> भौरो ने मधु पी–पीकर
>
> माना, स्थिर–मधु ऋतु कानन।।"[2]

---

1 सन्ध्या–सुन्दरी निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 77
2 गर्जन भर दो वन निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ– 245

कवि निराला बादल से प्रार्थना करते है कि ऐसी वर्षा करो की समूचा वातारण हरियाली से परिपूर्ण हो जाए। तरू–तरू, पादप–पादप एव गुजन–गुजन मे पुनरूक्ति अलकार का समावेश है।

कवि राम–रावण के युद्ध का वर्णन करता है राम की सेना युद्ध से बिरत होकर अपने शिविर की ओर गमन कर रही है, एक तरफ अन्याय का प्रतीक रावण के खेमे मे उल्लास का वातारण है दूसरी तरफ राम की सेना भारी मन से अपने शिविर की ओर आ रही है –

"लौटे युग–दल, राक्षस पद–तल पृथ्वी तलमल
विध महोल्लास से बार–बार आकाश विकल
x x x
उतरा ज्यो दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार
चमकती दूर ताराएँ ज्यो हो कही पार ।।"[1]

सन्ध्या के वातावरण की पृष्ठभूमि मे राम ने मन का अतर्द्वद चित्रित है। यह छायावादी कविता के अमूर्त विधान की विशेषता है। साकेतिक शैली द्वारा प्रकृति का रूपायन किया गया है । राक्षसो के अट्टास की गर्जना से गुँथकर आकाश बार–बार विकल हो रहा है बार–बार मे पुर्नरूक्ति अलकार है।

कवि निराला ग्रीष्मकालीन प्रकृति का चित्र खीचते हुए उसका मानवीकरण करने का सफल प्रयास किया है।

"पुलकित शत शत व्याकुल कर भर
चूमता रसा को बार–बार चुम्बित दिनकर
x x x
सर्वस्व दान,

1 राम की शक्ति पूजा निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 329

देकर, लेकर सर्वस्व प्रिया का सुकृत मान।।"[1]

कवि निराला यमुना को देखकर उससे अतीत से सबधित समस्त भाव जागृत हो उठते है। कवि यमुना को सम्बोधित करते हुए कहता है कि

"जागृति के इस नव जीवन मे
किस छाया का माया–मन्त्र
गूँज–गूँज मृदु खीच रहा है
अति दुर्बल जन का मन–यन्त्र?"[2]

उपर्युक्त काव्य मे प्रकृति के माध्यम से रहस्य भावना की अभिव्यक्ति है गूँज–गूँज मे पुर्नरूक्ति प्रकाश झलकता है।

कवि निराला 'स्मृति' का मानवीकरण करके मन के भावो का सजीव चित्रण करते है मानव अपने अतीत की बाते याद कर उसकी 'स्मृति' मे ऐसा खो जाता है मानो सारे वातावरण मे एक नदीरूपी झरना कल–कल ध्वनि से बहता हुआ कोई सगीत की धुन निकाल रहा हो और वह उसी मे खोया हुआ हो।

"जटिल जीवन–नद मे तिर–तिर,
डूब जाती हो तुम चुप चाप।
x x x
सुप्त मेरे अतीत के गान,
सुना, प्रिय हर लेती हो ध्यान।"[3]

कवि निराला ने 'स्मृति' का अर्थ समझाते हुए कहते हैं कि तुम मेरे सोये हुए अतीत के गीतो को सुनकर मेरा ध्यान अपनी ओर खीच लेती हो अर्थात् 'स्मृति' का आगमन होते ही मुझे सब पुरानी बाते याद हो जाती है। यहॉ 'तिर–तिर' व 'फिर–फिर' मे पुनरूक्ति अलकार है।

---

1 वन–वेला–निराला रचावली भाग एक पृष्ठ–346
2 यमुना के प्रति निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 115
3 स्मृति निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ 140

कवि निराला छायावादी शैली पर अपनी पुत्री के सौन्दर्य का रहस्यात्मक वर्णन किया है, कवि ने पुत्री 'सरोज' के यौवनागम का भाव–पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है–

"धीरे–धीरे फिर बढा चरण
बाल्य की केलियो का प्राङ्गण।
x x x
परिचय–परिचय पर खिला सकल–
नभ पृथ्वी, द्रुम कलि, किसलय–दल।।"[1]

महाकवि 'प्रेयसी' के माध्यम से लौकिक श्रृगार सबधी भावनाओ की अभिव्यक्ति करते है।, तथा साथ ही पूर्वराग का वर्णन करते है–

"तब तुम लघुपद–विहार,
अनिल ज्यो बार–बार।
x x x
श्लथ गात तुममे ज्यो,
रही मै बद्ध हो।"[2]

कवि निराला के प्रेयसी की मनोदशा ऐसी जैसे मानो हवा वीणा के तारो को बार–बार झनझना देती है अपने इस गीत पर सुखद तथा मनोहर दान के उस आकर्षण मे हृदय की लहरो से मै ससार के दु:ख तथा क्लेशो को भूल गई और शिथिल गात हो कर मै तुमसे बॅधी सी रह गई। 'बार–बार' पुर्नरूक्ति प्रकाश अलकार है।

छायावादी कवियो मे निराला रहस्यवाद एव दार्शनिक चीजो मे अति विश्वास करते थे, कवि का मानना है कि कोई अदृश्य शक्ति है जो सारे ससार

---

1 सरोज स्मृति निराला रचनावली भाग(1) पृष्ठ 319
2 'प्रेयसी' निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ–327

का सचालन करती है तभी तो निराला जी अदृश्य शक्ति यानी भगवान से वरदान मॉगते है कि वह मुझे इस बात की अनुमति दे कि वह उनके चरणो मे सर्वस्व समर्पण कर सके।

''दाग दगा की
आग लगा दी
तुमने जो जन–जन की, भडकी,
करूँ आरती मै जल–जल कर।।''[1]

कवि वियोग्नि के वशीभूत जीव–प्रभु–दर्शन के लिए निरन्तर व्याकुल रहता है, यानी हे प्रभु आपने जो आग की चिनगारी प्रत्येक जन के हृदय मे डाली वह अब प्रज्जवलित हो गयी है यानी पूरी तरह धधक रही है। मुझे प्रभु ऐसा वरदान (शक्ति) दो कि मै उस आग मे जल–जलकर आपकी आरती उतारूँ। 'जन–जन' और 'जल–जल' पुनिरूक्ति प्रकाश का पुट दृष्टिगोचर होता है।

'प्रश्नालंकार' :–

कवि निराला के काव्य म प्रश्न कभी स्वगत् कथन मे होता है, कभी सीधा होता है, इस प्रकार के अलंकार मे भावोद्वेलन की प्रधानता है। जैसे–

महाराज जयसिह के नाम 'छत्रपति शिवाजी का पत्र' में काव्यमय अकन है। लेकिन कविता मे ऐसा मालूम पडता है कि कवि अपने आप से प्रश्न करता है, छत्रपति शिवाजी महाराज जयसिह को पत्र के माध्यम से सोचने की सलाह देते है –

''करो तुम विचार,
तुम देखो वस्त्रो की ओर।

x x x

सौपता तुम्हे मै–

स्मृति सी निज प्रेम की।"[2]

यहॉ पर कवि निराला अतीत के माध्यम से भारत–वासियो को यह सोचने को कहते है कि अपसी फूट से लाभ हमेशा विदेशियो का हुआ है वह आह्वान करते है कि आओ हम एकता की डोर को और मजबूत करे, जयसिह के माध्यम से कवि उन अग्रेजी हुक्मरानो के इशारे पर निरीह भारतवासियो को खून बहाने वालो से प्रश्न करता है कि जरा सोचो वह खून किसका बहा है। प्रश्नालकार स्वय मे स्पष्ट है।

छायावादी शैली की यह एक विशेषता ही कही जाएगी कि वह काव्य को स्वर–लहरी लालसा प्रभृति अमूर्त वस्तुओ और भावनाओ का मानवीकरण देखते ही बनता है। रहस्यवाद की व्यजना एव कवि की जिज्ञासा देखते ही बनती है–

"किस समीर से कॉप रही वह

वशी की स्वर–सरित–हिलोर–?

किस बितान से तनी प्राण तक

छू जाती वह करूण मरोर?"[3]

कवि प्रकृति मे किसी अज्ञात सत्ता का दर्शन करता है इस शक्ति का प्रेयसी के रूप दर्शन किया गया यहॉ कवि कहता है यमुने! वह बशी की स्वर रूपी सरिता की लहर किस वायु का स्पर्श पाकर कॉप रही है? प्रश्नालकार का समुचित समावेश दृष्टव्य है।

---

1 जन–जन के जीवन के सुन्दर अपरा पृष्ठ 161
2 छत्रपति महाराज शिवाजी का पत्र निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 158
3 यमुना के प्रति निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ–118

प्रलय एव क्रान्ति का आह्वान करना छायावादी कवियो की एक प्रमुख प्रवृत्ति रही है। सच तो ये है कि छायावादी कवि तात्कालिक व्यवस्था से ऊब चुके थे। वे चाहते थे कि परिवर्तन–अविलम्ब हो यही आह्वान कवि अपनी इस कविता मे करता है–

"एक बार बस और नाच तू श्यामा।
सामान सभी तैयार,
कितने ही है असुर, चाहिए कितने तुमको हार?"[1]

कवि का आह्वान उस अदृश्य शक्ति से है कि हे मॉ एक बार तू अपने शक्ति का प्रयोग कर जन–जन मे क्रान्ति करने की प्रेरणा भर दो चाहे इसके लिए हमारे राष्ट्र के लोगो का कुछ कुर्बानियॉ ही क्यो न देनी पडे क्योकि कोई भी बडी क्रान्ति होती है तो जन–धन की हानि होना स्वाभाविक है। कवि स्वय से प्रश्न करता है कि आखिर कितना अत्याचार और हम सहे ? यहॉ प्रश्नालकार दृष्टव्य है।

कवि निराला 'स्मृति' का मानवीकरण करके मन के भावो का सजीव चित्रण करते है साथ ही साथ अतीत के भूले–बिछडे पलो को भी चित्रित करने का सफल प्रयास करते है :–

"जगाने मे है क्या आनन्द?
श्रृखलित गाने मे क्या छन्द "[2]

कवि निराला 'स्मृति' कविता के माध्यम से प्रश्न करते है कि ससार के व्यक्तियो के हृदय की पिछली कामनाओ को किसी बन्द वाणी मे सोती हुई तान को, अतीत काल की किसी मातृ–भाषा को तथा मृत्यु की अटलता के स्मरण को जगाने मे तुझे क्या आनन्द मिलता है।? जरा बता कि अस्त व्यस्त या

---

1 आवाहन निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 85
2 स्मृति लिराला रचनावली भाग एक पृष्ठ–192

इधर–उधर से जोडे गए गीत मे क्या कोई छन्द होता है यह प्रश्न कवि अपने अतीत की स्मृतियो के माध्यम से वर्तमान से करता है, उपरोक्त काव्य मे कवि की आत्माभिव्यक्ति स्वयमेव परिलक्षित होती है। वह तात्कालिक व्यवस्था से ऊबकर 'स्मृति' के माध्यम से वर्तमान को आवाज देता है। प्रश्नालकार का पुट स्पष्ट है।

छायावादी कविता मे शक्ति का आह्वान बार–बार किया गया। कारण था तात्कालिक चरमराती व्यवस्था से उबे कवियो का हार मानकर अदृश्य शक्ति पर अटूट विश्वास। तभी तो निराला ने 'राम की शक्ति–पूजा' के माध्यम से हनुमान की मॉ अजना द्वारा भारतीय जनमानस के बौखलाहट का कारण पूछती है?

"क्या नही कर रहे हो तुम अनर्थ?
सोचो मन मे,
क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ रघुन्नदन ने?
तुम सेवक हो छोडकर धर्म कर रहे कार्य–
क्या असम्भव यह राघव के लिए धार्य?"[1]

यहॉ कवि हनुमान के अन्तर्द्वन्द का मानवीकरण करते हुए भारतीय जन–मानस के कष्ट का मार्मिक चित्र खीचा है। हलाकि अभी भी भारतीय जनमानस हिसा का रास्ता न अपनाकर अहिसक तरीके से ही अपनी बात कहे। कवि यहॉ मॉ अन्जना के माध्यम से हनुमान को समझाता है कि क्या भगवान राम ने तुमको यह अनर्थ करने की अनुमति दी है अर्थात् क्या हिसा का रास्ता अपनाने की इजाजत भारतीय सस्कृति कभी देगी? कदापि नही, यहॉ प्रश्नालंकार का समुचित समावेश द्रष्टव्य है।

---

1 राम की शक्ति पूजा निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ 333

छायावादी कवियो की एक और विशेषता थी कि वे नायिका के अन्तरग एव बहिरग दोनो प्रकार के चित्र खीचे है। महाकवि निराला इस काव्य मे विप्रलम्भ श्रृगार के अर्न्तगत् नायिका के स्मरण दशा का वर्णन किया है–

"सुमन भर न लिए,
सखि! बसन्त गया।
हर्ष–हरण–हृदय,
नही निर्दय क्यो?"[1]

कवि निराला ने एक सखि कैसे अपनी सणि से अतर्मन् की बात करती है उसे दर्शाने का सफल प्रयास किया है, हे सखि! बसन्त ऋतु व्यतित भी हो गयी मैने फूलो के अपनी झोली मे भर कर इकट्टा नही किया मन के हर्ष को हरण करने वाली वियोगावस्था निर्दयी है क्या ? प्रश्नालकार का पुट स्पष्ट झलक रहा है।

'विरोधाभास' :–

आर्चाय केशव के अनुसार "जहॉ वास्तविकता में विरोध न हो फिर भी वर्णन से विरोध का आभास मिले वहॉ विरोधाभास अलकार होता है।

छायावादी कवियो ने प्रकृति को अपने काव्य की जीवन–सगिनी की तरह अपनाया है। उसी तरह यहॉ निराला ने भी 'स्मृति' संचारी के रूप मे 'जूही की कली' की रति–कीडा का काल्पनिक चित्र अकित करते हुए कहता है कि–

"आयी याद बिछुडन से मिलन की वह मधुर बात,
आयी याद चॉदनी की धुली हुई आधी रात,
आयी याद कान्ता की कम्पित कमनीय गात
फिर क्या? पवन।"[2]

---

1 शेष निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 155
2 जूही की कली निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 41

यहॉ 'जूही की कली' का चित्रण स्वकीया नायिका की है कवि निराला प्रकृति का आलम्बन रूप मे वर्णन करते है, नायक के मन मे इच्छा हुई कि वह किसी तरह इसी समय अपनी प्रियतमा के पास पहुॅच जाए । विछुडन मे भी मिलन का एहसास विरोधाभास का लक्षण है।

यहॉ भी छायावादी कवियो की तरह निराला ने प्रकृति को अपने काव्य मे भरपूर दोहन किया है यहॉ कवि सन्ध्या का वर्णन एक सुन्दरी रमणी के रूप मे किया है।

> "तिमिराचल मे चचलता का नही कही आभास,
> मधुर–मधुर है दोनो उसके अधर,
> किन्तु गम्भीर नही है उसके ह्रास –विलास।।"[1]

सच तो यह है कि सन्ध्या को सुन्दरी बताना ही काव्य –परम्परा के प्रति निराला जी के विद्रोह का घोतक है। जैसे सन्ध्या के आगमन के साथ भू–तल पर अन्धकार फैलने लगता है। अन्धकार से भरा हुआ अचल एक दम शान्त है क्योकि सायकाल के समय वातावरण शान्त हो जाता है। उस सुन्दरी की मुख–मुद्रा कुछ गम्भीरता लिए हुए है और उसमे हास–विलास को व्यक्त करने वाली चेष्टाओ का अभाव है। यहॉ मिलन एव बिछुडन का विरोधाभास मुखर है।

यहॉ कवि एक भक्त के माध्यम से साधना–पथ– की तरफ अग्रसर होते हुए दिखाया गया है भक्त देवी की प्रार्थना करते हुए कहता है कि–

> "प्रात तव द्वार पर,
> आया, जननि, नैश अन्ध, पथ पार कर
> लगे जो उपल पद हुए उत्पल ज्ञात,
> x x x

---

1 सन्ध्या–सुन्दरी निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 77

अवसन्न भी हूँ प्रसन्न मै प्राप्तवर,

प्रात तव द्वार पर।"[1]

यहॉ साधक की साधनावस्था का काव्यमय वर्णन है भगवान के ध्यान मे मग्न साधक प्रत्येक बाधा को अपना शिक्षक मानता है और उसको अपना हितैषी समझता है। वैसे ही जैसे विष का प्याला मीरा के लिए अमृत का प्याला बन गया था और सॉप के स्थान पर शालग्राम के दर्शन हुए थे। इसी तरह ईशा और मसूर के लिए शूली फूलो की सेज बन गयी थी। उसी प्रकार यहॉ भक्त के रास्ते मे सारे पत्थर फूल से लगने लगे उनके द्वारा पैरो मे ठोकर शीतल सुख का अहसास कराने लगी यहॉ पत्थर का फूल बनना विरोधाभास का प्रतीक है।

महाकवि यहॉ ऐसी नागरी–नायिका के सौन्दर्य का चित्रण करते है नायिका जो रात की केलि–कीडा के उपरान्त नीद की खुमारी मे क्लान्त लेटी हुई है–

"लाज से सुहाग का

मान से प्रगल्भ प्रिय प्रणय निवेदन का

जागृति मे सुप्ति थी–

जागरण क्लान्ति थी।"[2]

यहॉ कवि ने रीतिकालीन शैली से नायिका का वर्णन किया है। प्रलय कालीन वातावरण है और नायिका के रग–बिरगे स्वप्न और अपनी प्रिया के निश्चल ओठो मे शराब की मादकता का एहसास तथा उस मादकता का दिखाई न पडना इस प्रकार नायिका की अनेकानेक विरोधाभासी चेष्टाएँ, ये सब सोचकर ओठो मे आए कम्पन विरोधाभास अलकार का द्वैतक है।

---

1 'प्रात तव द्वार पर' अपरा पृष्ठ – 31

2 'जागृति मे सुप्ति थी' निराला रचनावली भाग (1) . पृष्ठ – 144

कवि निराला यहाँ बडा ही कारूणिक चित्र प्रस्तुत करते है साथ ही अपने राम का मानवीकरण करते हुए अश्रु–पुरित नेत्रो से विभीषण को कहलवाते है कि हे मित्र विभीषण मै अपने बचन को पूरा करने मे असमर्थ हूँ स्वाभाविक रूप से महाशक्ति अन्याय के प्रतीक रावण का साथ दे रही है।

कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर

बोले रघुमणि–मित्रवर विजय होगी न समर

x x x

उतरी पा महाशक्ति रावण से आमत्रण।

अन्याय जिधर है उधर शक्ति कहते छल छल।"[1]

यहाँ कवि निराला ने पात्रो के मानसिक अर्न्तद्वन्द का बडा ही सजीव एव प्रभावशाली वर्णन किया है, इसमे कवि ने सामान्य मानव के मानसिक दुर्बलता को भी चित्रित किया है साथ ही साथ दिए गए वचन को न निभा पाने की असमर्थता स्पष्ट परिलक्षित होती है। इधर कवि राम के प्रति पाठको की सहानुभूति बटोरने मे सफलता भी प्राप्त की है। अन्याय जिधर है उधर शक्ति मे विरोधाभास है।

कवि निराला अपने देश की विधवाओ के अन्तर्मन को छूने और उसके कष्ट को करीब से देखने का सफल प्रयास किया है यहाँ कवि भारतीय समाज द्वारा विधवाओ के लिए बनायी गई बन्दिशो की गहराई मे जाकर समीक्षा की है साथ ही साथ हमारे देश की विधवाओ का लेखा–जोखा बडे ही सजीव तरीके से अपने काव्य मे उतारा है

"षड्–ऋतुओ का श्रृगार,

कुसुमित कानन मे नीरव–पद –सचार,

व्यथा की भूली कथा है,

---

1 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 334

उसका एक स्वप्न अथवा है।"[1]

विधवा को फ्लैश–बैक मे ले जाकर ऋतु के माध्यम से प्रिय–मिलन का सुन्दर वर्णन करना कवि निराला की काव्यमयी कला का सुन्दर नमूना है। नीरव पद मे सचार मे विरोधाभास झलक रहा है।

छायावादी कवियो के मन मे उतार–चढाव के अनुरूप ही कविता की व्यक्त शैली मे भिन्नता आयी है कवि निराला का अन्दाज भी इसी प्रकार कभी दार्शनिक कभी गम्भीर, कभी विद्रोही तो कभी मनोहारी हो जाता है। कवि यहॉ मनोहर वातावरण का चित्र प्रस्तुत कर रहा है –

"कू–ऊ,कू–ऊ बोली कोमल अन्तिम सुख–स्वर,
पी–कहॉ पपीहा–प्रिया मधुर विष गयी छहर,
x x x
छवि बेला की नभ की ताराऍ निरूपनिता,
शत–नयन–दृष्टि
विस्मय से भरकर रही विविध–आलोक सृष्टि।।"[2]

निराला के उपर्युक्त कविता मे शब्द–विन्यास प्रवाहपूर्ण एव कोमल–कान्त है यहॉ कवि मिलन एवं बिछुडन का अद्‌भुद् चित्र प्रस्तुत किया है साथ ही साथ इस बीच मे आने वाली बॉधाओ को हटाने का भी प्रयास कवि करता है। यहॉ प्रकृति का वर्णन उद्‌दीपन रूप में हुआ है 'पी कहॉ मधुर विष गई छहर' मे विरोधाभास स्पष्ट झलक रहा है।

कवि निराला 'छत्रपति शिवाजी के पत्र' मे जयसिह को सबोधित एक पत्र लिख रहे है। साथ ही साथ उस अतीत मे वर्तमान ढूँढ रहे है। निराला जी भारत के बिछडे या भटके वीर सपूतो को वापस अपने घर आने का निमत्रण देते

---

1 'विधवा' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 72
2 'बनवेला' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 349

है। साथ ही साथ यह कहते है कि हमे आपकी वीरता, आपकी निष्ठा पर कोई शक नही, लेकिन भला बताओ कि क्या तुम उन फिरगियो के इशारे पर भारत मॉ के वीर सपूतो की लाशे बिछाओगे। यदि नही तो अब भी कुछ बिगडा नही तुम घर वापस आ जाओ।

"वीरता की गोद
मोद भरने वाले शूर तुम
x x x
मोगलो को तुम जीव दान।।"[1]

कवि निराला के इस पूरे काव्य मे देश–भक्ति मुखर है, कलक कालिमा का भय दिखाकर जयसिह को अपने घर वापस लौट आने की प्रेरणा महाकवि की काव्य कुशलता का एक सुन्दर नमूना है यहॉ पैरो के प्राण एव जीवन दान एक दूसरे के विरोधाभाषी है।

महाकवि निराला के मन मे यमुना को देखकर यमुना के समस्त अतीत एव उसकी गौरव–गाथा जागृत हो उठती है वह कथाओ का सार लेकर इस कविता की सृष्टि करते है यहॉ कवि यमुना को सम्बोधित करता है–

"आघ आ गये प्रिय के कर मे,
कह किसका वह कर सुकुमार,
x x x
कहॉ आज तक चितवन चेतन,
श्याम –मोह–कज्जल अभियुक्त?"[2]

कवि की नायिका अतीत को याद कर रही है कवि भी नायिका के माध्यम से अतीत पर अपनी मजबूत पकड रखने के साथ ही वर्तमान मे नई

---

1 शिवाजी का पत्र निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 157
2 'यमुना के प्रति' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 329

पीढी को साथ लेकर चलने का एक सुन्दर प्रयास किया है, नायिका अतीत के माध्यम से अथवा वह जीवन मॉग रही है एव पूछ रही ही कि वह मेरा अलसाया जीवन कहॉ है। जो प्रियतम् की कॉटो मे बॅधा रहकर भी स्वछन्द बना रहता था यहॉ 'बॅधा बाहुओ से भी युक्त मे' विरोधाभास का पुट स्पष्ट झलकता है।

रूपक :—

प्रस्तुत का अप्रस्तुत मे एक प्रकार का अभेद रूप से आरोप रूपक होता है। या जहॉ उपमान का सारा रूप उपमेय मे चित्रित हो और केवल सादृश्य ही का भाव न हो वरन् एक रूपता के साथ ही अभेद का भाव भी हो, वहॉ रूपक होता है।

महाकवि निराला की यह कविता आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रगति की सीमा मानी जा सकती है। 'राम की शक्तिपूजा' काव्य मे राम—रावण के युद्व का वर्णन है। महाशक्ति रावण को सरक्षण प्रदान करती है। फलस्वरूप राम के समस्त शस्त्र विफल होते है — कवि राम—रावण के अनिर्णीत सग्राम का वर्णन करती हैं —

"रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम—रावण का अपराजेय समर,
x x x
उद्गीरित—वह्नि—भीम—पर्वत—कपि—चतु प्रहर—
जानकी—भीरू—उर—आशाभर—रावण—सम्बर।।"[1]

राम—रावण के युद्व का सजीव एव चित्रात्मक वर्णन है यह वर्णन वीरगाथा काव्य के वीर रसात्मक वर्णनो का स्मरण कराता है भाषा विषयानुकूल है और

1 राम की शक्ति—पूजा निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ — 329

सस्कृत–निष्ठ होने पर भी अर्थ प्रतीति बाधित नही होती है। ज्योति के पत्र एव राजीवनयन मे रूपक स्पष्ट परिलक्षित होता है।

कवि निराला ग्रीष्म की तपन के माध्यम से ओज की मधुर व्यजना की है यहॉ कवि निराला ग्रीष्मकालीन प्रकृति का वर्णन करता है –

"वर्ष का प्रथम,
पृथ्वी के उठे उरोज मजू पर्वत निरूपम।
x x x
सर्वस्व दान,
देकर लेकर सर्वस्व प्रिया का सुकृत मान।।"[1]

प्रकृति के सौन्दर्य मे नारी सौन्दर्य का दर्शन छायावादी कवियो की विशेषता है। यहॉ कवि निराला ने अपनी नायिका के अन्त प्रकृति और बाह्य–प्रकृति का सुन्दर समन्वय किया है तपन–यौवन मे रूपक का सुन्दर समावेश है

इसी प्रकार कवि यमुना को देखकर पिछली बातो की याद करता है, याद करने के साथ वह वेसुध सा हो जाता है कवि यमुना को सम्बोधित करते हुए कहता है कि –

"स्वप्नो–सी उन किन ऑखो की,
पल्लव–छाया में अम्लान।
x x x
तेरे दृग कुसुमो की सुषमा,
जॉच रहा है बारम्बार?"[2]

---

1 वन–बेला निराला रचनावली भाग (1) . पृष्ठ – 114
2 यमुना के प्रति निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 114

यहॉ कवि अतीत के माध्यम से वर्तमान राष्ट्रप्रेमियो को अपनी सास्कृतिक विरासत का वास्ता दिलाकर राष्ट्र के नव–निर्माण के लिए एकजुट होकर नई दिशा देने का आह्वान करता है निराला की यह कविता राष्ट्रप्रेम एव सास्कृतिक प्रेम का द्योतक है पल्लवछाया दृग–कुसुम मे रूपक अलकार दृष्टव्य है।

कवि निराला यहॉ 'स्मृति' का मानवीकरण करके मन के भावो का सजीव चित्रण करते है–

> "जटिल जीवन मे नद तिर–तिर,
> डूब जाती हो तुम चुपचाप।
> x x x
> सुप्त मेरे अतीत के ज्ञान,
> सुना, प्रिय हर लेती हो ध्यान।"[1]

यहॉ कवि 'स्मृति' का आह्वान करते हुए कहता है कि जब तुम मेरे पास आती हो तो हमे सब पुरानी बाते याद हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम फ्लैश–बैक मे वापस अतीत मे चले गए हो और उसको अपनी स्मृतियो के द्वारा लेखनी के माध्यम से सजो रहे है। यहॉ कवि जीवन –गद्य मे रूपक का प्रयोग हुआ है। कवि निराला यौवन के वेग की अबाध प्रवलता का उल्लेख करता हुआ कहता है कि नव जीवन के प्रवल उमग के साथ ससार के सीमा को पार करके परमात्मा से मिलने चली आर रही हूँ –

> "बडे दम्भ से खडे हुए थे भूधर
> समझे थे जिसे बालिका
> x x x
> एक पर दृष्टि जरा अटकी है

---

1 स्मृति निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 84

देखा एक कली चटकी है।"[1]

यहॉ निराला जी कहते है कि मनुष्य को दम्भ एव अहकार छोडकर सरल तथा शीतल शब्द का प्रयोग करना चाहिए। क्योकि यह मानवीय गुण है कि अगर जिस व्यक्ति मे दम्भ अहकार हाबी हो गया हो ऐसे लोगो को के मन मे अज्ञानता घर कर जाएगी इसीलिए कोई भी सफल व्यक्ति अहकारी एव दम्भी नही हो सकता। इस काव्य मे पहाड अपनी गुरूता के घमण्ड मे खडे हुए थे वे नदी को नन्ही–मुन्नी बच्ची की तरह समझते थे तथा इधर शिलाखण्डो को देख थर–थर कॉप रहे है। यहॉ शिलाखण्ड एव नरमुण्ड् मे रूपक अलकार दृष्टव्य है।

कवि निराला 'प्रेयसी' के माध्यम से लौकिक श्रृगार सबधी भावनाओ की अभिव्यक्ति करते है –

"घेर अग–अग को

लहरी तरग वह प्रथम तारूण्य की,

x x x

शिशिर ज्यो पत्र पर कनक प्रभात के,

किरण सम्पात से।"[2]

कवि नवयौवना नायिका का वर्णन प्रकृति के उद्दीपन रूप मे ग्रहण करता है नायिका का यौवन जल की लहरो की तरह हिचकोले ले रहा है, निराला ने प्रकृति के मानवीकरण के माध्यम से नौयवना नायिका के अर्तमन् का सरल चित्र खीचा है। यहॉ तरू–तन में रूपक अलकार झलक रहा है।

इसी प्रकार कवि निराला बसन्त ऋतु मे गोमती नदी के तट को प्रात कालीन छटा का वर्णन कवि निराला करते है।

---

1 'धारा' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 84
2 'प्रेयसी' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 324

"बसन्ती की गोद मे तरूण
सोहता स्वस्थ मुख वाला सा।

X X X

गोमती क्षीण कटि नटि नवल,
नृत्य पर मधुर आवेग चपल।"[1]

यहॉ कवि प्रकृति मे नारी का दर्शन एक प्रेयसी के रूप मे करता है यहॉ 'किसलयो' के अधर एव 'सौरभ वासना गोमती नही' नवल मे रूपक अलकार का पुट झलकता है। बसन्त ऋतु को नायिका रूपी प्रकृति का बालक कवि निराला ने बताया है। लज्जा शील एव कोमलागी युवतियो के कोपक रूपी यौवन के मद से भरे हुए लाल–लाल ओठ सुशोभित थे। यहॉ कवि प्रात कालीन प्रकृति की शोभा देखते हुए प्रकृति रहस्यपूर्ण नियमो पर विचार करते है। महाकवि निराला सरोज–स्मृति सिर्फ एक शोख–गीत नही है यह पुत्री की मृत्यु के बाद एक पिता का दार्शनिक अन्दाज भी है। यहॉ निराला अपनी स्वर्गीय पुत्री सरोज को सम्बोधित करते हुए कहते है कि–

"ऊनविश पर जो प्रथम चरण,
तेरा वह जीवन–सिन्धु–तरण,

X X X

करती हूॅ मै यह नही मरण,
सरोज का ज्योति, शरण–तरण"[2]

अपनी ही जवान पुत्री की अर्थी को अपने कन्धो पर ले जाकर घाट पर पहुॅचाना फिर उसे काव्यमय रूप देना निराला जैसे महाकवि के ही वश की बात है। यहॉ महाकवि का अपनी पुत्री से यह कहलवाना कि पिता जी आज मैं पूर्ण

---

1 'दान' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 307
2 'सरोज–स्मृति' निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 315

प्रकाश का वरण कर रही हूँ यह मेरा मरण नही है, अपितु आज आप की पुत्री ज्योति के शरण मे जा रही है। यहॉ कवि निराला सरोज की मृत्यु के प्रति एक दार्शनिक दृष्टिकोण दर्शाते है। साथ ही कवि की अर्न्तरात्मा की वेदना स्वत परिलक्षित होती है। यहॉ जीवन–सिन्धु तथा मृत्यु तरूणी मे रूपक अलकार दृष्टिगोचर होता है।

कवि निराला जहॉ अधिक या कुछ पेचीले अर्थ रखने का प्रयास किया है वहॉ पद–योजना उस अर्थ को दूसरो तक पहुँचाने मे प्राय अशक्त या उदासीन पायी जाती है। 'गीतिका' की यह पक्ति–

कौन तम मे पार? (रे–कह)

x x x

सार या कि असार (रे–कह)।।"[1]

यहॉ कवि रूप के बाण (यानी सौन्दर्य बाण को निकालना) को निकालने मे एक अजीब प्रकार का सुख प्राप्त करता है। साहित्यकार 'रामचन्द्र शुक्ल' के अनुसार तीर के निकलने मे सुखानुभूति निराला जैसा कवि ही कर सकता है।

'उपमा' :–

जब दो भिन्न वस्तुओ मे एक ही साधारण धर्म का होना बताया जाए अर्थात् सामानता बताई जाए, तब उपमा अलंकार होता है। "उपमेय अरू उपमान जह एक रूप होई जाए"।

कवि निराला का सम्पूर्ण काव्य राष्ट्र–भावना से ओत–प्रोत था उसी कम मे उनकी कविता 'छत्रपति शिवाजी महाराज का जयसिंह के नाम पत्र' के माध्यम से भारतीयों के वर्तमान को कुरेदने का सफल प्रयास किया है। कवि

1 कौन तम के पार गीतिका हिन्दी साहित्य का इतिहास

कहता है कि आपसी फूट ही हमारी सबसे बडी कमजोरी और दुश्मन की सबसे बडी ताकत है। कवि कहता है –

"किन्तु हाय! वीर राजपूतो की,
गौरव–प्रलम्ब ग्रीवा,
x x x
अपने सहोदर–मित्र,
निस्सहाय त्रस्त भी उपाय शून्य।।"[1]

कवि निराला अपने देश के भटके हुए भाईयो को उस अतीत की गाथा सुनाकर और उसका परिणाम बताकर, साथ ही साथ कुल गौरव की मान–मर्यादा और पुरूषत्व को जगाकर भटके हुए भाईयो को एक प्लेटफार्म पर लाने का सफल प्रयास किया था। कवि एकता का विगुल अपने काव्य के माध्यम से फूँकने का प्रयास करता है और कहता है कि हमारी एकता फिरगियो को वापसी की बुनियाद रखेगी। यहाँ 'धूप सी' और 'सिन्धु ज्यो' मे उपमा अलकार झलकता है। कवि निराला विभिन्न कथाओ का सार लेकर यमुना को माध्यम बनाकर, अतीत का गुणगान–कर, जन–मानस मे नव–चेतना का सचार करते है –

"अलि–अलको के तरल तिमिर मे,
किसकी लोल लहर अज्ञात।
x x x
बजते है अब उन चरणो मे,
अब अधीर नूपुर–मजीर?"[2]

---

1 छत्रपति शिवाजी का पत्र निराला रचनावली भाग (1) –पृष्ठ – 157
2 यमुना के प्रति निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ – 118

कवि निराला 'यमुना के प्रति पूरे कविता मे रहस्यवाद' की मार्मिक व्यजना की है। साथ ही साथ दार्शनिक दृष्टिकोण को माध्यम बनाया गया, सोए जन–मानस को जगाने के लिए। शशि–सा, मुख, ज्योत्सना सी गात मे उपमा अलकार का अद्भुत समावेश है।

'प्रेयसी' काव्य के माध्यम से कवि निराला लौकिक श्रृगार सबधी भावनाओ की अभिव्यक्ति करते है। नायिका का यौवन उभार पर है, शारीरिक परिवर्तन से खुद नायिका के मन मे कौतुहल व्याप्त है, वह अदृश्य ससार मे गोते लगाना चाहती है–

"घेर अंग अग को,
लहरी तरग वह प्रथम तारूण्य की ।
x x x
शिशिर ज्यो पत्र पर कनक प्रभात के,
किरण–सम्पात से।"[1]

कवि की नायिका युवावस्था के आगमन के साथ ही चंचलता ने मेरे अंग–प्रत्यग को घेर लिया है। प्रकृति को उद्दीपन के रूप मे ग्रहण किया गया है। प्रकृति मे नवयौवन नायिका को चित्राकित किया गया है। यहॉ 'लता–सी' एव 'शिविर ज्यो' मे उपमा अलकार परिलक्षित होता है।

छायावादी कवियो की एक प्रमुख विशेषता रही है कि वे काव्य लिखते समय रिश्ते नाते या सगे सबधो को बीच मे आने ही नही देते थे। तभी तो महाकवि निराला अपनी ही पुत्री 'सरोज' के यौवनावस्था का भावपूर्ण चित्रण किया है –

"धीरे–धीरे फिर बढा चरण,
बाल्य की केलियो का प्राड्गण,

---

1 'प्रेयसी' निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ – 324

x x x

परिचय–परिचय पर खिला सकल–,

नभ, पुथ्वी, द्रम, कलि , किसलय –दल।।"[1]

महाकवि निराला जैसा व्यक्तित्व ही अपनी पुत्री की यौनोचित चचलता का चित्र खीच सकता है। सच्चाई ये है कि यहाॅ कवि पिता कम कवि ज्यादा ही दिखाई देता है। स्वाभाविक रूप से कोई कवि कविता लिखते समय अगर रिश्ते–नाते को महत्व देता है। तो वह कविता कविता हो ही नही सकती क्योंकि कोई कविता, कविता तभी बन सकती है जब वह अर्तरात्मा की आवाज से निकलती है। कवि जब कविता लिखने बैठता है तो उसका सारा ध्यान उस कविता पर होता है, रिश्ते गौड हो जाते है। यहाॅ कवि 'ज्यो मालकौश।' 'नैश स्वप्न ज्यो' मे उपमा का प्रयोग किया है।

महाकवि निराला 'जूही की कली' कविता के माध्यम से रति–कीडा का काल्पनिक चित्र प्रस्तुत करते समय नायिका के भावनाओ के अर्तमन् को उद्घाटित करता है, नायिका रूपी कली को पवन पहुॅच कर चूमता है। मगर वह जगती नही है। कवि यहाॅ प्रकृति का मानवीकरण कर एक दूसरे को आलिगन रूप मे प्रदर्शित करने का सफल प्रयास किया है।

"सोती थी,

जाने कहो कैसे प्रिय–आगमन वह?

किवा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिये,

कौन कहे?"[2]

---

1 'सरोज–स्मृति' निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ – 319

2 जूही की कली निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ – 41

यहॉ कवि जूही की कली का वर्णन प्रेम–गर्विता–स्वकीया मध्य नायिका के रूप मे किया गया है। वह आगत–पतिका नायिका है। यहॉ हिडोल मे उपमालकार का सुन्दर समावेश है।

महाकवि निराला भारतवासियो को जागरण का सदेश देते हुए राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरने का सदेश देते है। साथ ही साथ अपने जीवन की उपयोगिता को सिद्ध करने का सन्देश देते है –

"ऑखे आलियो सी
किस मधु की गलियो मे फॅसी,
x x x
या सोयी कमल–कोरको मे–,
बन्द हो रहा गुजार।।"[1]

यहॉ महाकवि निराला का यह कथन कि जिस प्रकार भौरा मधुपान मे मग्न होकर अथवा कमल–कली मे बन्द होकर अपनी गुजार को भूल जाता है। उसी प्रकार तुम भी स्वार्थमय होकर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को भूल जाते हो 'अलियों' की उपमा 'भौंरो' से दी गयी है।

महाकवि निराला सन्ध्या सुन्दरी का वर्णन एक सुन्दरी रमणी के रूप मे चित्रित करते हुए कहा है कि–

"दिवावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है।
x x x
वह सन्ध्या सुन्दरी परी–सी,
धीरे–धीरे–धीरे।"[2]

---

1 जागो फिर एक बार (1) निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–148
2 सन्ध्या–सुन्दरी निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–77

यहाँ कवि निराला का प्रकृति–प्रेम मुखर है, यहाँ सन्ध्या–सुन्दरी एक नई नवेली दुल्हन की तरह सज धज कर आसमान से मानो धीरे–धीरे उतर रही हो। यानी कवि की नायिका नई नवेली दुल्हन की तरह धीरे–धीरे कदम आग बढ़ा रही है। यहाँ 'सन्ध्या सुन्दरी' की 'परी–सी' उपमा द्रष्टव्य है।

इसी प्रकार कवि ने इलाहाबाद प्रवास के दौरान पत्थर तोडती एक मजदूर महिला के मर्म को नजदीक से जाँचा–परखा। तो यह है कि कवि उस महिला के अर्न्तमन् को वाणी प्रदान की है–

> "चढ रही थी धूप,
> गर्मियो के दिन।
> x x x
> प्राय· हुई दुपहर,–
> वह तोडती पत्थर।"[1]

यहाँ कवि का एक मजदूरनी नारी का पत्थर तोडकर गिट्टी बनाना वह भी चिलचिलाती दोपहरी मे। यहाँ गरीब भारतीय नारी के बेवसी का चित्रण स्पष्ट झलकता है। 'रूई ज्यो' मे उपमालकार का समावेश है।

महाकवि निराला राम के मनोवैज्ञानिक स्थिति का सहज चित्र खीचते है, सीता की कुमारिका छवि की झाँकी पाते ही राम को अपने पराक्रम का स्मरण हो आता है। स्वाभाविक है कि ऐसे मे राम के मन मे उठे अर्न्तद्वन्द का चित्र कवि ने खीचा है–

> "सिहरा तन क्षण–भर भूला मन, लहरा समस्त,,
> हर धर्नुभग को पुनर्वार ज्यो उठा हस्त,।
> x x x
> फिर सुना–हँस रहा अट्टाहास रावण खल–खल

1 वह तोडती पत्थर निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–343

भावित नयनो से सजल गिरे दो मुक्ता–छल ।"[1]

यहॉ कवि निराला द्वारा शक्तिशाली राम को सामान्य मानव की तरह मनोवैज्ञानिक उलझन मे फॅसाना, फिर पत्नी सीता से अपनी बेबसी का इजहार करना, मानवीकरण का सुन्दर चित्र कवि ने खीचा है। उडे ज्यो देवदूत, ज्यो पतक मे उपमालकार है।

'मानवीकरण' :–

जहॉ किसी उपमा या प्रकृति एव रूपक का सहारा लेकर अप्रत्यक्ष रूप से मानव–समाज की तरफ इगित की जाए वही मानवीकरण है।

महाकवि निराला प्रकृति के कोमल रूप के साथ–साथ उसकी कठोरता को उदघाटित किया है।

"तिरती है समीर–सागर पर,
अस्थिर सुख पर दु ख की छाया।
x x x
ताक रहे हैं ऐ विप्लव के बादल।
फिर–फिर।"[2]

यहॉ कवि बादल के प्रलयकारी रूप का वर्णन करता है कवि यहॉ प्रलयकारी बादल से जन–जागरण का आह्वान करता है सच तो यह है कि उपरोक्त पूरे छन्द मे महाकवि ने प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है।

महाकवि निराला ने 'जूही की कली' नामक कविता मे सिर्फ नायिका के ही अन्तर्मन व बहिर्मन का चित्र नही खींचा है, अपितु वह नायक के मन स्थिति को भॉपने मे भी सफलता पायी है तभी तो निराला का नायक बिना समय का

---

1 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–331
2 बादल–राग भाग –6 निराला रचनावली भाग एक – पृष्ठ – 77

या लोक–लज्जा का ख्याल किए सारे बधनो को तोडकर अपने प्रियतमा के पास पहुॅचना चाहता है –

"आयी याद विछुडन से मिलन की वह मधुर बात
आयी याद चॉदनी की धुली हुई आधी रात
x x x
पहुॅचा जहॉ उसनसे की केलि।
कली–खिली साथ।।"[1]

जब कवि नायक–नायिका के पास पहुॅचता है तो नायिका को अतीत की सारी बाते याद आ जाती है वह पवन के सयोग सुख से कम्पायमान सुन्दर देह–लता की याद आ गयी। इसी का सुन्दर तरीके से कवि ने मानवीकरण करते हुए नायिका अपने मिलन की प्रथम रात को सोच–सोच कर रोमाचित हो उठती है। तथा एक अजीब तरह का कौतूहल जो मादकतायुक्त है उसके मन मे जागृत हो उठा है। यहॉ मिलन की याद का मानवीकरण सुन्दर तरीके से किया गया है।

कवि यहॉ सन्ध्या–सुन्दरी कविता को माध्यम बनाते हुए सन्ध्या कालीन वातावरण को उकेरा है। तथा साथ ही साथ प्रकृति का उस समय का सुन्दर नजारा मन मे उभारने में सफलता पायी है।

"दिवावसान का समय,
मेघमन आसमान से उतर रही ।
x x x
वह सन्ध्या सुन्दरी परी सी,
धीरे–धीरे–धीरे ।।"[2]

---

1 जूही की कली निराला रचनावली भाग एक – पृष्ठ – 41
2 सन्ध्या–सुन्दरी निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–77

यहॉ 'सन्ध्या–सुन्दरी' रूपी नायिका दुल्हन की तरफ अपना कदम धीरे–धीरे आगे बढा रही है, यहॉ सन्ध्या–सुन्दरी का मानवीकरण किया है ।

कवि–निराला भगवान राम के अनन्य भक्त हुनमान को अपने आराध्य को कष्ट मे देखकर चीत्कार उठने तथा साथ ही साथ अपने आराध्य राम के प्रति सर्वस्व न्योछावर करने का सफल काव्यमय चित्रण 'राम की शक्ति–पूजा' नामक कविता मे देखने को मिलती है –

"ये अश्रु राम के आते ही मन मे विचार,
उद्वेल हो उठा शक्ति–खेल–सागर–अपार।

x x x

वज्राग तेजधन वना पवन को महाकाश,
पहुँचा एकादश रूद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।।"[1]

कवि निराला द्वारा यहॉ प्रकृति के भयंकरता का सुन्दर तरीके से वर्णन किया है। हनुमान और क्रुद्ध सागर के प्रयलकर रूप का सशलिष्ट चित्र अकित किया गया है। जलराशि का मानवीकरण स्पष्ट है।

महाकवि निराला भारतीय जन–मानस का विधवा नारी के प्रति बनी मानसिकता से काफी आहत महसूस करते थे तभी तो महाकवि ने भारतीय विधवा नारी के अन्त मनोदश का चित्र काव्य मे उतारा है :–

"दूर हुआ वह वहा रहा है,
उस अनन्त पथ से करूणा की धारा।।"[2]

एक विधवा नारी दुनिया वालो की बुरी नजरो से अपने को सफेद ऑचल मे सजोए हुए अपने स्वत्व ही रक्षा करती है, भारतीय विधवा की अर्तवेदना उसके जमीर को बार–बार झकझोरती है कभी–कभी वह अर्तवेदना विद्रोह करने की

---

1 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–332
2 'विधवा' निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–73

हद तक जाने का प्रयास करती है लेकिन समाज की व्यवस्था समाज का तिरस्कार उसको अन्दर से झकझोरता है। भारतीय समाज यदि किसी विधवा के प्रति संवेदना भी व्यक्त करता है तो मात्र उसे बेचारी कहकर अपनी जिम्मेदारियों से मुक्ति पाना चाहता है। सम्पूर्ण छन्द का कवि ने मानवीकरण किया है।

महाकवि निराला प्रकृति को माध्यम बनाकर अपने भाव, अपनी वेदना को जनता तक पहुँचाने का माध्यम बनाते थे। यहाँ कवि प्रकृति में अपने भावों की प्रतिच्छाया देखते हुए सान्ध्य कालीन वातावरण का वर्णन करते हैं –

"तप तप मस्तक

हो गया सान्ध्य नभ का रक्ताभ दिगन्त–फलक;

x x x

सिक्त–तन–केश शत लहरों पर

काँपती विश्व के चकित–दृश्य के दर्शनशर।।"[1]

यहाँ प्रकृति के माध्यम से कवि ने अपनी भावों की अभिव्यक्ति की है उपवन–बेला का मानवीकरण किया गया है। अन्यथा सम्पूर्ण प्रकृति वर्णन उद्दीपन विभवान्तरगत् है। हँसती उपवन बेला में मानवीकरण का पुट झलकता है।

इन अलंकारों के अतिरिक्त शब्द विचारों के कम में उलटफेर, छिन्न, वाक्य, वचन, कारक, पुरूष, एवं लिंग परिवर्तन आदि के द्वारा भी निराला ने अपने काव्य में अभिनय उत्कर्ष लाने की सर्जनात्मक कोशिश की है, भावयित्री और कारयित्री प्रतिभा से आद्य कुशल शिल्पी ने अपने रचना संसार में समुचित अलंकार योजना का विधान करके औदात्य सृजन में पूर्ण सफलता पायी है। ऐसा अप्रतिम शब्द–विधान देखकर कोई भी सहृदय पाठक चमत्कृत हुए बिना नहीं रह पाता है।

---

1. वन–बेला : निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ–348

"उत्कृष्ट– भाषा का प्रयोग" :–

इसके अन्तर्गत वर्ण्य–विन्यास, शब्द–चयन तथा रूपकादि का प्रयोग आता है। लौजाइस ने विचार एव पद–विन्यास को इस प्रकार अन्योन्याश्रित माना है। जैसे– आत्मा एव शरीर। उदात्त–विचारो की सर्जना मे साधारण शब्द अनुपयोगी हो जाते है, अत गरिमामयी भाषा आवश्यक हो जाती है। शब्दो के सौन्दर्य से ही शैली गरिमामयी बनती है। सुन्दर शब्द ही विचारो को अभिनव आलोक प्रदान करते है, इसी प्रकार साधारण भावो की अभिव्यक्ति के लिए गरिमामयी भाषा अनुचित लगने लगती है अनुकूल ध्वन्यात्मक शब्दो के प्रयोग तथा शब्दयोजना मे सगीतात्मकता का कमिक नियोजन भी भाषिक–गरिमा मे वृद्धि करता है और लौजाइनस के अनुसार भाषा का वैशिण्टय एव चरमोत्कर्ष ही उदात्त है। यही एक मात्र स्रोत है जिससे महान कवियो एव इतिहासकारो को जीवन मे प्रतिष्ठा और अमर यश मिलता है। निराला जी का कथन है कि प्रकृति की स्वाभाविक चाल से भाषा जिस तरफ भी जाए शक्ति सामर्थ्य और मुक्ति की तरफ या सुखानुशयता, मृदुलता और छन्द लालित्य की तरफ, यदि उसके साथ जातीय जीवन का भी सबध है तो यह निश्चित रूप से कहा जाएगा कि प्राण–शक्ति उस भाषा मे है।[1] वास्तव में जातीय जीवन का यह उन्मेष निराला की भाषा को प्राणवान बनाता है।

उत्कृष्ट भाषा प्रयोग के अन्तर्गत् शब्द–चयन बिम्ब–विधान तथा शैलीगत् परिष्कार अर्न्तभूत है। यह स्पष्ट है कि उपयुक्त एवं प्रभावोत्पादक शब्दावली श्रोता को आकर्षित करती हुई उसे भावाविभूत कर लेती है। ऐसी शब्दावली जिसमे भव्यता–सौन्दर्य ओज आदि श्रेष्ठ गुणों की अभिव्यक्ति हो प्रत्येक वक्ता या लेखक के लिए स्पृहणीय है। सुन्दर शब्द ही वास्तव में विचारो को विशेष

---

1 निराला सस्करण इन्द्रनाथ मदान पृष्ठ–127

प्रकार का आलोक प्रदान करते है। उत्कृष्ट भाषा की विभिन्न विशेषताओ के अन्तर्गत् सुन्दर शब्दावली के अतिरिक्त ओज प्रवाह– पूर्णता, रूपको का सीमित प्रयोग, उपमानो एव अति–युक्तियो का उचित प्रयोग आदि को स्थान दिया गया है। वस्तुत भाषा के विभिन्न गुणो की उपयोगिता औदात्य की सृष्टि मे है यदि उसके ये गुण इस लक्ष्य की पूर्ति करते है तो स्वीकार्य है अन्यथा नही।

निराला ने जीवन–साहित्य एव समाज की ही भॉति कला के क्षेत्र मे भी रूढियो एव परम्पराओ को स्वीकार नही किया, उन्होने भाषा छन्द शैली प्रत्येक क्षेत्र मे मौलिकता, नवीनता का समावेश करने का प्रयत्न किया है। चाहे वह भावपक्ष हो या कला पक्ष दोनो ही क्षेत्रो मे हिन्दी साहित्य को छायावाद ने महत्वपूर्ण योगदान किया है कला–पक्ष के क्षेत्र मे निराला ने नवीन भाषा शक्ति, मौलिक छन्द–विधान एव नवीन अलकार शैली को जन्म दिया, यह कहा जा सकता है कि निराला साधनावस्था के कवि है। निराला की प्रकृति शक्ति–सामर्थ्य और मुक्ति के अनुकूल है, "प्रकृति के अनुसार भाषा–भिन्न होगी लेकिन उसे प्रत्येक दशा मे जातीय–जीवन से सम्बद्ध होना जरूरी है। जातीय जीवन का अर्थ अतीतोत्मुखता नही है बल्कि इसके जीवन के अन्तर्गत् विकासोन्मुख राष्ट्र की वे समस्त आकाक्षाऐं समाहित है जो उसकी सस्कृति को अलग रूप देती है जातीय जीवन से अनुप्राणित भाषा के अनेकानिक सबधो को व्यक्त करने मे अधिक अर्थ–पूर्ण हो जाती है।"[1] 'राम की शक्ति पूजा' 'सरोज–स्मृति', 'तुलसीदास', 'जागो फिर एक बार', आदि की तो बात ही और है, कही से कोई कविता उठा लीजिए उसकी शब्दावली जातीय जीवन का समग्र बोध कराती है।

---

1 क्रान्तिकारी कवि निराला डॉ0 बच्चन सिह पृष्ठ – 145

निराला काव्य मे ओज की प्रवाह–पूर्णता. –

निराला की भाषा का प्रवाह उसका आवेग– आवेश, चाहे वह लेखन का हो या वाचन का, वह एक अनुभव की वस्तु है। एक जगह 'रघुवीर सहाय' ने लिखा है–" मेरे मन मे पानी के कई सस्मरण है निराला के काव्य को अजस्र निर्भर मानकर मै भी कह समता हूँ कि मेरे मन मे पानी के कई सस्मरण है– अजस्र बहते पानी के, फिर वह बहना चाहे मुसलाधार वृष्टि का हो, चाहे धुँआधार जलप्रपात का, चाहे पहाडी नदी का, क्योकि जब निराला कविता पढते थे तब ऐसी ही वेगवती धारा सी बहती थी, किसी रोक की कल्पना भी तब नही की जा सकती थी– सरोवर सा ठहराव भी उनके वाचन मे अकल्पनीय था।"[1]

'राम की शक्ति–पूजा' मे ओज की प्रवाह–पूर्णता देखते ही बनती है–

"रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र पर लिखा अमर,
रह गया राम–रावण का अपराजेय समार।

x x x

उद्गीरित–बहिन–भी–पर्वत–कपि–चतु प्रहर
जानकी–भीरू– उर–आशाभर–, रावण–सम्बर।।"[2]

निराला ने यहॉ राम–रावण के अनिर्णीत युद्ध का वर्णन किया है। यहॉ शब्दो का प्रयोग इतनी कुशलता के साथ किया गया है कि इनको पढने पर ऐसा लगता है जैसे पाठक के सामने ही कोई युद्ध छिडा हुआ हो और व्यूह–समूह–प्रत्युय–हूह आदि ध्वनि–प्रधान शब्दो से मानो युद्ध की भयावहता प्रत्यक्ष हो रही है। यहॉ युद्ध के वातावरण को सजीव बनाने के लिए 'ट' वर्ग के अक्षरो, महाप्राण ध्वनियो, सत्यानुप्रासो का सुन्दर प्रयोग किया गया है भाषा मे ओज–गुण की दीप्ति दृष्टव्य है ।

---

1 नाम–पथ निराला जन्मशताब्दी अक 1996 पृष्ठ – 152
2 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 1329

महाकवि निराला की 'यमुना के प्रति कविता' भाषा प्रवाहता का उदाहरण प्रस्तुत करती है।–

"यमुने तेरी इन लहरो मे,
किन अधरो की आकुल तान,
पथिक– प्रिया –सी जगा रही है,
उस अतीत के नीरव–गान?
बता कहॉ अब वह बशीवट?
कहॉ गये नटनागर श्याम?
चल चरणो का व्याकुल पनघट,
कहॉ आज वह वृन्दाधाम?।।"[1]

यमुना का देखकर कवि के मन मे उससे सबधित समस्त अतीत जागृत हो उठता है, यहॉ अतीत के प्रेम कवि के राष्ट्र–प्रेम एव सास्कृतिक प्रेम का द्वैतक है। कवि को यमुना की लहरो मे पथिक प्रिया की भॉति कवि के अतीत की स्मृतियो का मादक कौन रूप द्रष्टव्य है। साथ ही साथ निराला की भाषा का प्रवाह देखते ही बनता है।

निराला की तुलसीदास कविता नारी के विद्रोहात्मक रूप के उदात्त–स्वरूप का तथा भाषा–प्रवाह और वाक्य विन्यास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण कविता है–

"बिखरी छूटी शफरी–अलके,
निण्यात नयन–नयन नीरज पलके।
भावातुर पृथु उर की छलके उपशमिता,
नि सम्बल केवल ध्यान मग्न।

1 'यमुना के प्रति' निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ – 115

जागी योगिनी अरूप लग्न,

वह खडी शीर्ण प्रिय–भाव–मग्न निरूपमिता।।"[1]

यहाँ कवि निराला ने कामाविभूति तुलसीदास के आगमन से क्रुद्ध एव दुषित रत्नावली की रोषपूर्ण मूर्ति का चित्रण करते है। यहाँ उनके विचारो एव पद–विन्यास मे अद्‌भुद सामजस्य दिखायी देता है। साथ ही भाषा प्रवाह एव कथन की भगिमा को एक उदात्त–स्वरूप भी प्रदान करता है।

निराला काव्य मे रूपक–योजना :–

भारतीय साहित्य मे रूपको का प्रयोग यद्यपि नया नही है, किन्तु निराला के यहाँ इनका प्रयोग बिल्कुल नए सन्दर्भ के साथ प्रस्तुत हुए है। प्राय सभी कवियो ने रूपको के माध्यम से अपनी कल्पना को सर्जनात्मक आयाम दिया है भारतीय साहित्य में प्रकृति और रूपक का गहरा सबध रहा है। अप्रस्तुत कल्पना और बिम्ब प्रकृति के माध्यम से सर्जनात्मक अभिव्यक्ति पाते रहते है, उदाहरण के लिए निराला की 'यामिनी जागी' शीर्षक कविता को ले सकते है –

(प्रिय) 'यामिनी जागी।

असल पकज–दृग अरूण–मुख,

तरूण–अनुरागी।

खुले केश अशेष शोभा भर रहे,

पृष्ठ –ग्रीवा– बाहु–उर पर तर रहे,

बादलो मे घिर अपर दिनकर रहे,

---

1. 'तुलसीदास' निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 302

ज्योति की तन्वी, तडित–

द्युति से क्षमा माँगी।

हेर उर–पट, फेर मुख के बाल

लख चतुर्दिक चाली मन्द–मराल

गेह मे प्रिय–स्नेह की जयमाल

वासना की मुक्ति–मुक्ता

त्याग मे तागी।"[1]

यहाँ हम अप्रस्तुत कल्पना और बिम्ब का एक असाधारण मिलन पाते है। 'अलस पकज दृग–अरूण–मुख तरूण अनुरागी' एक रूपक है। इसी प्रकार 'बादलो' मे फिर अपर दिनकर रहे' भी अप्रस्तुत योजना है। परन्तु शेष सारी कविता बिम्बात्मक है। केवल अतिम दो पक्तियाँ 'वासना की मुक्ति', 'मुक्ता त्याग मे तागी' बिम्ब की सीमा के बाहर है। इस प्रकार वर्ण्य वस्तु बिम्ब के रूप मे प्रस्तुत हुई है, उस बिम्ब को अलकृत करने के लिए अप्रस्तुत का प्रयोग हुआ है। निराला की 'भिक्षुक', 'विधवा', 'सन्ध्या–सुन्दरी' जैसी रचनाओ मे वर्ण्य–वस्तु बिम्ब के रूप मे प्रस्तुत की गयी है। चित्रण प्रधान कवि होने के कारण निराला मे बिम्बो के निर्माण की सशक्त प्रवृत्ति देखी जाती है। निराला की 'भिक्षुक' कविता मे कवि ने एक भिखारी का सहानुभूतिपूर्ण चित्र खीचा है–

"पेट पीठ दोनो मिलकर हैं एक,

चल रहा है लकुटिया टेक,

मुट्टी भर दाने को–भूख मिटाने को

मुँह फटी–पुरानी झोली को फेलाता–

दो टुक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।"[2]

---

1 (प्रिय) यामिनी जागी निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 253
2 'भिक्षुक' निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 76

कवि निराला ने गरीबी को नजदीक से देख था। कवि ने यहाँ पर एक भूखे प्यासे भिक्षुक का मार्मिक चित्र खीचा है। कवि निराला का 'भिक्षुक' मुट्ठी–भर अनाज की प्राप्ति के लिए किस प्रकार की दर–दर की ठोकरे खाता है एव जन–मानस का अपमान सहता है, साथ ही साथ वह अपने पूर्वजन्म को कोसता भी है। यहाँ भिक्षुक रूपक के रूप मे प्रस्तुत हुआ है वह एक पात्र ही नही बल्कि पूरे आर्थिक–परिवेश से उपजा हुआ चरित्र भी है। जो कि समस्त सामाजिक एव आर्थिक व्यवस्था पर चोट करता है।

निराला की 'विधवा' कविता भी कुछ इसतरह सामाजिक व्यवस्था पर चोट करती हुई दिखाई देती है। भारतीय विधवा का यह रूप अन्यत्र शायद ही दिखाई दे –

> "वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा–सी
> व दीप–शिखा सी शान्त भाव मे लीन
> वह क्रूर–काल ताण्डव की स्मृति–रेखा–सी
> वह टूटे तरू की छटी लता सी दीन–
> दलित भारत की ही विधवा है।"[1]

निराला जी ने भारतीय विधवा को 'पूजा–सी' 'दीप–शिखा सी', 'स्मृति रेखा–सी' कहकर रूपक का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

भारतीय विधवा अपने आराध्यदेव पति के नाम पर इस प्रकार अपनापन छोडे हुए पडी है। जैसे मन्दिर मे देवता के सम्मुख पूजा की सामग्री पडी रहती है।

'सरोज–स्मृति' निराला के अप्रस्तुत की उदात्तता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

> "धीरे–धीरे फिर बढा चरण,

---

1 विधवा निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 72

बाल्य की केलियो का प्राङ्गण।
कर–पार कुज–तारूण्य सुघर,
आयी, लावण्य भार थर–थर
कॉपा कोमलता पर सस्वर,
ज्यो मालकौश नव वीणा पर।"[1]

यहॉ ज्यो मालकौश नव–वीणा पर यौवन के प्रथमागमन का बिम्ब है, नव–वीणा स्वय युवती है जो स्पर्श भाव से झकृत हो सकती है। मालकौश की तरह यौवन अनुभूतियात्मक है।

'नूपुर के सूर मन्द रहे' शीर्षक कविता मानवीकरण और पद–मैत्री का सुन्दर उदाहरण है।

"नूपुर के सुर मन्द रहे
जब न चरण स्वछन्द रहे।
x x x
नयनो के ही साथ फिरे वे,
मेरे घेरे नही घिरे वे,
तुमसे चल तुममे ही पहुँचे,
जितने रस आनन्द रहे।"[2]

यहॉ नूपुर की स्वछन्दता से छन्द की स्वछन्दता को बॉधा गया है, यहॉ नूपुर का मानवीकरण है नूपुर–सुर, छन्द बन्द मे पद–मैत्री है। जिस प्रकार पैरो के न चलने पर पैजनी की ध्वनि बन्द हो जाती है उसी प्रकार छन्दो से कविता को बॅध जाने पर कविता की स्वाभाविकता समाप्त हो जाती है। यहा नायिका की नायक के प्रति प्रथम हॅसी को पूर्णमासी के निर्मल रात्रि के बिम्ब से बॉधा

---

1 सरोज–स्मृति निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 319
2 नूपुर के सुर मन्द रहे निराला रचनावली भाग दो पृष्ठ – 67

गया है। इस कविता मे भाषा प्रवाह देखते ही बनता है।

'वनबेला' निराला जी की एक बहुत ही महत्वपूर्ण कविता है जिसमे मानवीकरण तथा उपमा का उत्कृष्ट उदाहरण है–

"वर्ष का प्रथम
पृथ्वी के उठ उरोज मजू पर्वत निरूपम
x x x
क्षोभ से, लोभ से, ममता से,
उत्कठा से प्रणय के नयन की समता से
सर्वस्व दान
देकर, लेकर सर्वस्व प्रिया का सुकृत मान।"[1]

यहॉ प्रकृति का मानवीकरण किया गया तपन–यौवन–क्षोभ लोभ–ममता–समता मे पद–मैत्री है, तपन–यौवन मे रूपक भी है, प्रकृति का आलम्बन रूप मे वर्णन है ग्रीष्म की तपन के माध्यम से निराला ने ओज की मधुर व्यजना की है, कोमलकान्त पदावली में निहित सगीतात्मकता दृष्टव्य है।

'धारा' शीर्षक कविता मे कवि निराला यौवन के वेग की अबाध प्रवलता की चर्चा करते है,–

"सुना, रोकने उसे कभी कुजर आया था,
दशा हुई फिर क्या उसकी ?
फल क्या पाया था?
तिनका जैसा–मारा–मारा
फिरा तरगो मे बेचारा
गर्व गॅवाया–हारा,
अगर हठ–वश आओगे

---

1 बनवेला निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 345

दुर्दशा करवाओगे–वह जाओगे।"[1]

यहॉ 'तिनका–सा' मे उपमा है, यहॉ कवि ने यह बताया है कि प्रबल धारा को रोकने का हठ करोगे तो तुम भी बह जाओगे। कहने का तात्पर्य यह है कि कविता के प्रवाह को छन्दो मे नही बॉधा जा सकता अर्थात् कविता स्वछन्द ही रहनी चाहिए। क्योकि वह अर्न्तरात्मा की अर्न्तवेदना से निकलती है।

उपमाओ एव अति–युक्तियो का उचित–प्रयोग:–

निराला काव्य मे उपमा अपना विशिष्ठ महत्व रखता है 'जागो फिर एक बार' (भाग दो) शीर्षक कविता उपमा को दर्शाने का एक सशक्त उदाहरण है

"सत् श्री अकाल
भाल–अनल धक–धक कर जला
भस्म हो गया था काल
भेद कर सप्तावरण–मरण–लोक,
शोकहारी। पहुॅचे थे वहॉ
जहॉ आसन है सहसार–।"[2]

यहॉ कवि मातृ–भूमि के हित मे बलिदान होने वाले सिख वीरो के बलिदान का प्रशस्ति करता है। व्योमकेश के समान मे उपमा है। यहॉ योग–शास्त्र और काव्य–शास्त्र का सफल सामजस्य है। अतीत के गौरव–गान द्वारा देश प्रेम का स्वर व्यजित है। सप्तावरण–चेतना के सातस्वर इन्हे विभिन्न प्रकार से अभिहित किया जाता है। हठयोग मे इन्हे सात–चक्र, राज–योग मे सात शरीर कहते है। ये सप्तावरण मूल प्रवृत्ति या पदार्थ के सात स्वरो के

1 धारा निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 84
2 जागो फिर एक बार भाग (2) निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 153

समकक्ष माने गये है। ठोस, द्रव, गैस, ईथर, सुपर ईथर निम्न आणविक और आणविक।

'दान' शीर्षक कविता ने न केवल उपमा बल्कि मानवीकरण पद–मैत्री रूपक आदि का सशक्त उदाहरण है–

"बासन्ती की गोद मे तरूण
सोहता स्वस्थ–मुख बालारूण,
चुम्बित, सस्मित, कुचित, कोमल
तरूणियो सदृश किरणे चचल"
x x x
सौरभ वसना समीर बहती
कानो मे प्राणाो की कहती,
गोमती क्षीण–कटि नटी नवल,
नृत्यपर मधुर–आवेश चपल।।"[1]

यहॉ बसन्त–ऋतु सूर्य, पवन, मल्लिका, पलास गोमती आदि समस्त वर्ण–पदार्थों का मानवीकरण किया, भाव तरूणियो सदृश्य मे उपमा है। चुम्बित, सस्मित, कुचित, बन बन उपवन आदि मे पद–मैत्री है। यहॉ प्रकृति का वर्णन मानवीकरण की पद्धति पर है शैली मे लाक्षणिकता है।

काव्य–भाषा का आदर्श स्वरूप वही है जो कवि के वक्तव्य को उत्कृष्ट रूप मे अभिव्यक्त कर सके। यह सामान्य भाषा से अधिक व्यापक व्यजक, विशिष्ठ और परिष्कृत होती है और सदैव विषय एवं भाषा का अनुसरण करती है। विषय यदि महान और असाधारण है तो उसे व्यक्ति करने के लिए भाषा भी उदात्त और असाधारण होगी, निराला का काव्य भाषा की दृष्टि से नये प्रयोगो नये विस्तार और नमोन्मेष का प्रतिनिधि है। उनका भाषा आदर्श सस्कृति के

---

1 दान निराला रचनावली भाग एक पृष्ठ – 307

कवि जगदेव, तुलसीदास और रवीन्द्रनाथ टैगोर से पूर्णत प्रेरित और प्रभावित है। छन्दानुरूप भाषा –विन्यास उनमे प्राय सर्वत्र दिखायी देता है। किन्तु निराला की कविताओ मे विशेषकर दीर्घ–छन्दो के प्रयोग से उनकी भाषा महाकाव्योचित औदात्य का स्पर्श करती है। नई चेतना भूमियो की अभिव्यक्ति के लिए जिस गभीरता से उन्होने भाषा निर्माण का प्रयत्न किया वह सराहनीय है। उनकी समास–बहुला, पदावली भावानुकूल शब्द–योजना, अनेकानेक छन्द–प्रयोग नाद–वैशिष्ट्य उनके अपने है, निराले है। इतना अधिक विस्तार और गहराई अपने सास्कृतिक परम्पराओ को इतने नवीन, पर काव्योचित ढग से प्रस्तुत करने की अप्रतिम क्षमता किसी अन्य कवि मे नही पायी जाती ।[1]

गरिमामय रचना–विधान :–

यदि किसी कृति मे शब्द, विचार, घटना, कार्य सौन्दर्य एव राग आदि के विविध रूपो का सामजस्य दिखायी दे तो उसका औदात्य अक्षुण बना रहता है। जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अगो की सुडौलता समानुपात एव सन्तुलन मे समाहित रहता है, उसी प्रकार काव्य के विविध अगो मे औचित्य निर्वाह से वह हृदय मनोहर बन जाता है। अन्यथा उसमे शैलीगत् दोष आ जाता है। कवि को चाहिए वह स्थान रीति अवसर आदि के प्रति पूर्ण सतर्क हो। गरिमा के सम्पूर्ण तत्वो की सयुति से ही कृति महनीय उदात्त बनती है। लौजाइनस ने बिम्बो के निर्मात्री शक्ति के रूप मे कल्पना तत्व की चर्चा की है। अनुभूति के क्षणो मे कल्पना के सहयोग से कवि के मानस पटल पर जिस प्रकार के बिम्बो या चित्रो का निर्माण होता है। लौंजाइनस इसे 'ईपैथी' (सह–अनुभूति) कहता है, और उसे काव्य का एक आवश्यक गुण मानता है। किसी कवि की शक्तिमत्ता उसके अर्थ–गर्भ मार्मिक बिम्बों के सृजन मे निहित होती है, निराला ऐसे ही प्रतिभा

---

1 निराला – सस्करण इन्द्रनाथ मदान पृष्ठ–182, 170

सम्पन्न कलाकार है जिसमे ऐसे सूक्ष्म अर्थ–व्यजक बिम्बो की कमी नही है जो अपनी सहजता मे अनुपम है।

निराला का बिम्बगत् वैशिष्ट्य–

तुलसी कविता मे रत्नावली का भाई जब उसे लिवाने आता है तब वह अपनी ओर से पितृ–गृह के सभी जनो का सन्देश कहता है। पिता और भाभी का सदेश यो है –

"बोले बापू योगी रमता मै अब तो,
कुछ ही दिन को हूँ कूलद्रूम।
छूँ लो पद फिर, कह देना तुम,
बोली भाभी लाना, कुकुम शोभा को।"[1]

इन पक्तियो मे कुलद्रुम से वृद्धावस्था का वह जर्जर रूप सामने आ जाता है जो नदी तट के वृक्ष समान चाहे जब काल की धारा का ग्रास हो सकता है तो 'कुकुम शोभा' मे रत्नावली की चारित्रिक निष्कलकता और नारी सुलभ गरिमा की व्यजना होती है।[2]

निराला की छन्दगत् मौलिकता :–

निराला छन्दो के गुरू थे। उन्होने छन्दो के जो बहुविध प्रयोग अपने काव्य मे किए है, वे उन्हे शत–प्रतिशत मौलिक सिद्ध करते है। गीतो मे काव्य और सगीत का समन्वय करके उन्होने एक अभिनव परम्परा का सूत्रपात किया तो प्रगीतो मे उन्होने रसानुकूल छन्दो को ग्रहण किया और स्वछन्द छन्द का आविष्कार किया। 'तुलसीदास' मे चौपाई छन्द को आधार बनाकर एक नये छन्द

---

1 तुलसीदास निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 284
2 उपरिवत् ।

का निर्माण किया गया है, जिसके प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ एव पचम् चरणो मे 16–16 मात्राएँ है और तृतीय एव षष्ठ चरणो मे 22–22 मात्राएँ, अन्त्यानुप्रास का कम यह है कि वह और द्वितीय चतुर्थ और पचम् तथा तृतीय और षण्ठ को मिलता है ।[1]

"चल गन्द चरण आये बाहर
उर मे परिचित वह मूर्ति सुघर
जागी विश्वाश्रय महिमाधर, फिर देखा
सकुचित, खोलती श्वेत पटल
बदली, कमला तिरती सुख–जल,
प्राची –दिगन्त–उर मे पुष्कल रविरेखा।।"[2]

महाकवि निराला का व्यक्तित्व उदारता, सरलता, स्पष्टवादिता, निष्कपटता और सदाशयता की प्रतिमूर्ति था। वे भीतर से जितना ही निष्कपट और सरल थे बाहर से उतना ही मृदुल। उनके यहाँ कृत्रिमता का कोई स्थान नही था स्वभाव से वे विनोदप्रिय थे। संक्षेप मे कहा जा सकता है कि नाम के अनुरूप ही उनका व्यक्तित्व भी निराला था। कहने का तात्पर्य यह है कि निराला का पूरा का पूरा सर्जनात्मक व्यक्तित्व उनके खुद के व्यक्तित्व से काफी कुछ मिलता–जुलता है। 'राम की शक्ति–पूजा' की निम्नलिखित पक्तियाँ उनके शब्द–योजना को उद्धृत करती है–

"बिच्छुरित वह्नि–राजीव–नयन–हत–लक्ष्य–वाण,
लोहित–लोचन–रावण–मदमोचन–महीयान,
राघव–लाघव–रावण वारण गत युग्म प्रहर

---

1 निराला सस्करण इन्द्रनाथ मदान पृष्ठ–170
2 तुलसीदास निराला रचनावली भागएक पृष्ठ–307

उद्धृत–लकापति–मूर्च्छित–कपिदल–छल–बल–बिस्तर।"[1]

'राम की शक्ति–पूजा' की इन पक्तियो मे राम की क्रोधित ऑखो की लालिमा के लिए बिच्छुरित–बह्नि शब्द का प्रयोग किया गया है। जब की वही रावण की क्रोधित ऑखो की लालिमा को लोहित शब्द का प्रयोग किया गया है। आगे इसी कविता मे राम के मन मे सीता की कोमल स्मृतियॉ जागृत होती है, उसको कवि ने कुछ इस तरह दिखाया है –

"देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,–प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन।
नयनो का नयनो से गोपन–प्रिय सभाषण
पलको का नव पलको पर प्रथमोत्थान पतन
कॉपते हुए किसलय झरते पराग समुदय –
गाते खग नव–जीवन परिचय, तरू–मलय–बलय
जानकी नयन कमनीय प्रथम कम्पनतुरीय।।"[2]

'राम की शक्ति–पूजा' की पक्तियो मे भावानुरूप शब्द–योजना द्रष्टव्य है। विदेह–बाटिका में सीता के प्रथम दर्शन, नयनो का नयनों से गोपन प्रिय सभाषण', याद आते ही उस समय के विराट् अनुभूत्यात्मक प्रतिकिया भी स्मृति–पटल पर उभर आती है। पलकों का प्रथमोत्थान पतन, क्या हुआ कि किसलय कॉप उठे, चतुर्दिक पराग प्रसवित होने लगा, तरूदल, मलय, बयलित हो उठे। मानो प्रात कालीन स्वर्गीय ज्योति प्रपात चारो ओर झर रहा हो। निराला की यह विशेषता रही है, जिसे समीक्षको ने विरोधो का सामजस्य कहा है। एक तरफ युद्ध की भयावहता दूसरी तरफ प्रिया से मिलन की पहली

---

1 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 329
2 राम की शक्ति–पूजा निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 331

कोमलानुभूति दोनो अनुभूतियॉ निराला काव्य को औदात्य की ऊॅचाई पर पहुॅचाते है।

'सरोज–स्मृति' हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ शोक–गीत है। यद्यपि इसका कथानक पुत्री के निधन के प्रसग को लेकर है। किन्तु बीच–बीच मे आयी हुई अनेक स्मृतियॉ इस शोक को और बढा देती है। निराला को 'सरोज' और उसके भाई की मार–पीट का चुभता हुआ दृश्य याद आ जाता है –

"खाई भाई की मार, विकल
रोई, उत्पल–दल–दृग–छलछल,
चुमकारा फिर उसने निहार,
फिर गगा तट–सैकत विहार।
करने को लेकर साथ चला,
तू गहकर चली हाथ चपला।"[1]

'सरोज–स्मृति' की इन पक्तियो मे सरोज के बाल्यकाल की स्मृति निराला को गहरे शोक मे डूबो देती है। शोक के अनुरूप ही भाषा प्रयोग कुछ इस तरह हुआ है मानो छोटी सी बच्ची के रूप मे सरोज पाठक के सामने उपस्थित हो जाती है। आगे इसी कविता मे विनोद–व्यग्य का पुट विवाह पद्धति को लेकर है–

"ये कान्य–कुब्ज कुल कुलागर
खाकर पत्तल मे करे छेद
इनके कर कन्या, अर्थ खेद
इस विषय बेलि मे विष ही फल
है दग्ध मरूस्थल नही सुजल।"[2]

---

1 सरोज–स्मृति निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 317
2 सरोज–स्मृति निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 321

यहॉ कन्नौजियो की सकीर्ण विवाह पद्धति पर गहरा व्यंग्य करके उनकी कुरीति दहेज की दूषित प्रथा, कुल के छोटे बडे होने के छिद्रान्वेषण आदि की खूब खिल्ली उडायी गयी है, व्यग के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया गया है। 'खाकर पत्तल मे करे छेद जैसे मुहावरो के द्वारा व्यग्य की धार को तीव्र किया गया है। विषम् बेलि मे विष ही फल, जैसे व्यगात्मक मुहावरो का प्रयोग दृष्टव्य है।

कवि निराला की 'तोडती पत्थर' कलात्मक सौन्दर्य एव कथ्य की दृष्टि से अप्रतिम रचना है, इस कविता का दूसरा बन्ध है –

"कोई न छायादार
पेड वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बॅधा यौवन,
नत नयन, प्रिय–कर्म–रत् मन,
गुरू हथौडा हाथ,
करती बार–बार प्रहार–
सामने तरू–मलिका, अट्टालिका प्राकार।।"[1]

इस कविता का एक–एक शब्द और वाक्य इस्पात की तरह ढला हुआ है। इलाहाबाद के पथ पर पूरी रचना सगुम्फित है। इसके अभाव मे 'तरू–मलिका अट्टालिका' की व्यजना अधूरी रह जाएगी, कोई ने छायादार कहने से छाया–हीनता का बोध स्वत हो जाता है। विरूद्धो का यह सामजस्य कवि की अर्थवत्ता को सघन बना देता है। 'करती बार –बार प्रहार', की चोट सिर्फ पत्थर पर ही नही पडती अपितु तरू–मलिका अट्टालिका पर भी पडती है। जो शोषण की सम्पूर्ण व्यवस्था पर धक्का तो है ही, साथ ही उस धक्का को

---

1 तोडती पत्थर निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 342

मारने के लिए जिस आत्मबल की जरूरत होती है या यो कहे कि धक्के देने के लिए जिस मजबूज हाथ की जरूरत होती है वह 'गुरू हथौडा' के रूप मे उसके पास है।

'कुकुरमुत्ता' निराला का एक अभिनव प्रयोग है इसमे एक ओर भाषागत् अभिजात्य है तो दूसरी ओर उसका विरोधी स्वर भी है। कही कही दोनो का मिला जुला रूप भी है। 'अभिप्रेत' अर्थवत्ता के लिए वे किसी भी प्रकार की भाषा का प्रयोग कर सकते थे –

"अबे! सुन बे! गुलाब,
भूल मत पायी खूशबू रगोआब।
खून चूस खाद का तूने अशिष्ठ,
डाल पर इतरा रहा है कैपटिलिस।
कितनो को तूने बनाया है गुलाम
मालिक कर रखा सहाया जाडा घाम
हाथ जिसके तू लगा
पैर सर पर रख कर वह पीछे को भगा
जानिब औरत की मैदाने जंग छोड
तबेले को टटट् जैसे तग तोड
x x x
रोज पडता रहा पानी,
तू हरामी खानदानी"।"[1]

इन पक्तियो मे जो तेवर दिखायी पडता है, उसके लिए खाद, अशिष्ठ, जानिब और तबेले का टट्टू आदि शब्द और मुहावरे अर्थ की भगिमा के लिए जरूरी थे, तू हरामी खानदानी उसके परम्परागत् हरामीपन को पीढी–दर–पीढी

---

1 कुकुरमुत्ता निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 50

के हरामीपन को सवेदनात्मक स्तर पर उजागर करता है। भाषा का ऐसा अभिजात्य प्रयोग स्वय निराला के यहाँ ही विरल है।

प्रकृति मे नारी का आरोपण :–

प्रकृति पर अपनी भावनाओ का आरोपण प्राय सभी कवियो ने किया है। मनुष्य के लिए मनोवैज्ञानिको ने सिद्ध कर दिया है कि नारी सुन्दरतम् पदार्थ है। प्रकृति के ऊपर नारीत्व की भावना का आरोप करके उसकी कोमलता और सुष्टता का परिचय प्राय सभी कवियो ने दिया है। निराला ने तो मानो शब्द–चित्र ही लिख दिया है। 'सन्ध्या–सुन्दरी' इस खण्ड की सर्वश्रेष्ठ चित्र है–भाषा और भाव दोनो दृष्टियो से –

"दिवावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है।
वह सन्ध्या सुन्दरी परी –सी,
धीरे–धीरे–धीरे।
x x x
अलसता की सी लता,
किन्तु कोमलता की वह कली।
सखी नीरवता के कन्धे पर डाले बॉह,
छॉह–सी अन्दर पथ से चली।"[1]

कवि निराला ने 'सन्ध्या–सुन्दरी' की इन पक्तियो मे सन्ध्या अपनी मथरता, गभीरता, नीरवता अलसता मे निराले ढग से चित्रित हो उठी है फिर उसकी यह निरवता धीरे – धीरे, जगती तल मे अमल कमलिनी दल मे,

---

1 सन्ध्या–सुन्दरी निराला रचनावली भाग (1) – पृष्ठ – 77

सौन्दर्यगर्विता सरिता के वक्ष स्थल मे, हिमगिरि अटल–अचल मे, क्षिति मे, जल मे, नभ मे, अनिल, अनल मे फैल जाती है। सारा छन्द उसकी नीरवता, आदि गुणो को अपनी लय मे इस तरह बॉध लेता है कि सम्पूर्ण अकन अभूतपूर्व बन जाता है।

निराला की कविताओ मे सौन्दर्य एव राग का अद्भुद सामजस्य दिखायी देता है। उनके अधिकाश प्रगीतो मे राग तो है ही साथ ही साथ सौन्दर्य भी है–

"(प्रिय) यामिनी जागी
असल पकज–दृग अरूण–मुख
तश्रण अनुरागी।
खुल केश अशेष शोभा भर रहे
पृष्ठ–ग्रीवा–वाहु–उर पर तर रहे
बादलो मे घिर अपर दिनकर रहे
ज्योति की तन्वी तडित–
द्युति ने क्षमा मॉगी।।"[1]

'यामिनी जागी' शीर्षक कविता की पक्तियो मे राग और सौन्दर्य का अद्भुत सामजस्य है, सौन्दर्य–वर्णन रीति–कालीन काव्य शैली पर है। सस्कृतनिष्ठ कोमलकान्त पदावली के समास पद्धति का सुन्दर प्रयोग है। पूरे छन्द मे मानवीकरण का आरोप है, मानवीकृत प्रकृति पर नारी का यह आरोप एक अतिन्द्रियता का आभास होता है।

1 (प्रिय) यामिनी जागी निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 253

प्रकृति का मानवीकरण :–

'बसन्त आया' शीर्षक कविता मे कवि निराला ने बसन्त ऋतु का मानवीकरण किया है जिसके कारण राग और सौन्दर्य का अदभुद सामजस्य पैदा हो गया है–

"किसलय–बसना नव–वय–ललिता
मिली मधुर प्रिय–उर तरू पतिका
मधुप–वृन्द बन्दी
पिक–स्वर नभ सरसाया।"[1]

इन पक्तियो मे कवि का प्रकृति–प्रेम अभिव्यक्त है। प्रकृति पर चैतन्यारोपण करके प्रकृति का आलम्बन रूप मे सजीव–वर्णन है। प्रकृति मे नारी का दर्शन करके सयोग श्रृगार की व्यजना की गयी है कोमलकान्त पदावली का माधूर्य द्रष्टव्य है।

निराला का मन कभी–कभी समाजवादी विचार धारा मे रमा है 'बेला' और 'नये पत्ते' की कविताओ मे इनकी ध्वनि बराबर निकलती रही है। कवि निराला ने व्यक्तिगत् सम्पत्ति का निषेध करते हुए उस पर देश के नियत्रण का निवेदन किया है –

"सारी सम्पत्ति देश की हो,
सारी आपत्ति देश की बने
जनता जातीय वेश की हो
x x x
भेद कुल खुल जाय वह
सूरत हमारे दिल मे है

---

1 (प्रिय) यामिनी जागी निराला रचनावली भाग (1) पृष्ठ – 253

देश को मिल जाय जो

पूँजी हमारी मिल मे है।।"

समाजवाद की अर्थ–पद्धति मे विश्वास करते हुए कवि निराला का मानना है कि पूँजी केवल देश की होनी चाहिए, व्यक्ति की नही, 'देश को मिल जाय जो पूँजी तुम्हारे मिल मे है' को कहने का तात्पर्य यह है कि पूँजीवादी व्यवस्था देश के लिए हानिकारक है। इससे गरीबी और अमीरी के बीच की खॉई बढती है पूँजीपतियो द्वारा गरीबो का शोषण न हो इसके लिए कवि ने अपनी सर्जनात्मक अभिव्यक्ति दी है।

अतीत का वर्तमान से सामन्जस्य :–

निराला ने भारत की प्राचीन सास्कृतिक पक्ष का उद्घाटन 'अनामिका' की कुछ कविताओ मे बडे ही सुन्दर ढग से किया है। 'यमुना के प्रति', 'दिल्ली' खण्डहर के प्रति और 'यही' मे कवि ने अपने अतीत के वैभव को देखा है कवि खण्डहर से पूछता है कि अपने अतीत के वैभव को देखा है कवि खॅडहर से पूछता है कि तुम्हारा उद्देश्य क्या है? –

"आर्त भारत! जनक हूँ मैं,

जैमिनि–पतजलि–व्यास–ऋषियो का।

मेरी ही गोद पर शैशव–विनोद कर,

तेरा है बढाया मान।

राम–कृष्ण–भीमार्जुन–भीष्म नर देवो ने,

x x x

भूले वे मुक्त प्रान, साम–गान–सुधापान।"

कवि निराला ने खण्डहर के माध्यम से भारत के अतीत गौरव का वर्णन किया है। यहाँ खण्डहर उस ध्वस्त गौरव का प्रतीक है जो किसी समय अद्‌भुत था किन्तु जिसको हम लोग भूल गए। इस कविता के माध्यम से कवि की देश–भक्ति मुखर हुई है। कविता के अन्त मे कवि भारत के उज्जवल भविष्य की मगल कामना भी करता है।

निराला अपने कवि–कर्म के प्रति पूर्ण सजग एव चैतन्य है। भाषा गरिमा–वैचारिक–भव्यता और आवेग जैसे कवि के नैसर्गिक गुण इसमे दिखाई देते है। बिम्ब, प्रतीक, अलकार एव शब्द–विन्यास आदि की निपुणता निराला के सर्जनात्मक वैशिष्ट्य् को प्रमाणित करती है। इसके प्रकृति चित्रण का कहना ही क्या? उस पर मुग्ध होकर विश्वम्भर मानव लिखते है प्रकृति का जैसा उद्‌घोष निराला जी ने यहाँ किया है वैसा कम कवि कर पाते है। प्रारम्भ से ही इनकी प्रकृति सकेतमयी रही है। उसी के माध्यम से कवि ने दो संस्कृतियो के वैषम्य की कथा समझायी है, उसी के आधार पर तुलसी के अर्न्तद्वन्द को चित्रित किया गया है और वही उन्हे मोह के परदे को सरकाकर सत्य के दर्शन कराती है। इस रचना मे प्रकृति के कई विराट चित्र अकित हुए है। उसकी जडता और चेतना दोनो को ठीक से पहचानकर कवि ने उसके माया–मय माध्यम और चिन्मय दोनो स्परूपो को अच्छा उद्‌घाटित किया है।

एटकिन्सन ने लौजाइनस के सर्जनात्मक वैभव की प्रशसा करते हुए लिखा है कि– "There are, things in its that can, be never grow old, while its freshness and light will contine to charm all ages."

उनके इन विचारो को हम नि सन्देह निराला की इस दिव्य सर्जना के सर्न्दभ मे अक्षरश सत्य मान सकते है। निराला की इस अनूँठी रचना को पढकर भाषा–मर्मी एव शब्द–शिल्पी अज्ञेय जी को उसके सन्दर्भ मे नये ढग से सोचने को बाध्य होना पडा था। वे लिखते है कि इसके बाद की जिस भेट का उल्लेख

करना चाहता हूँ, उससे पहले निराला जी के काव्य के विषय मे मेरा मन पूरी तरह बदल चुका था। वह परिवर्तन कुछ नाटकीय ढग से ही हुआ शायद कुछ पाठको के लिए आश्चर्य की बात होगी कि वह उनकी 'जूही की कली' व 'राम की शक्ति–पूजा' पढकर नही हुआ उनका 'तुलसीदास पढकर हुआ। अब भी उस अनुभव को याद करता हूँ तो मानो एक गहराई मे खो जाता हूँ। अब भी 'राम की शक्ति–पूजा' अथवा निराला के अनेक गीत बार–बार पढता हूँ, लेकिन निराला के काव्य जब–जब पढने बैठता हूँ तो इतना ही नही कि एक नया ससार मेरे सामने खुलता है उससे भी विलक्षण बात यह है कि वह ससार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम मे घटित होता हुआ दिखता है। मै मानो ससार का एक स्थिर चित्र नही बल्कि एक जीवित चल–चित्र देख रहा होता हूँ। ऐसी रचनाए तो कई होती है जिनमे एक रसिक ह्रदय बोलता है। बिरली ही रचना ऐसी होती है जिनमे एक सास्कृतिक चेतना सर्जनात्मक रूप मे अवतरित हुई हो। कवि निराला के काव्य मे ऐसी कई रचना है जो एक बार पढने के बाद बार–बार पढने की इच्छा जागृत होती है। मेरी बात में जो विरोधाभास है वह बात को स्पष्ट ही करता है, 'राम की शक्ति पूजा' हो, या 'यमुना के प्रति' हो, 'सरोज–स्मृति' हो या 'तुलसीदास' इन सबके साथ ही साथ उनकी अन्य कविताए अपनी ओर आकर्षित करती है। स्पष्टत वह उदात्त रचना का ही प्रभाव हो सकता है जिस भी पाठक को ऐसी गभीर साहित्यिक सस्कार और सोच समझ होगी उसके लिए यह बोधगम्य बनेगी।

निराला की काव्य–भाषा की प्रमुख विशेषताए रही है– कोमलता, शब्दो की मधरु–योजना, भाषा का लाक्षणिक प्रयोग, सगीतात्मकता, चित्रात्मकता, प्रकृतिगत् प्रतीको की प्रचुरता तथा रूढियो का विरोध। भाषा को कोमलता प्रदान करने के लिए निराला ने अग्रेजी और बाग्ला की पद्धति को अपनाया है। स्वर्णमय, स्वप्निल, छल–छल, कल–कल, छलना, कुहकिनी, आदिक शब्दो की

मधुर–योजना की है तो वही दूसरी ओर भाषा मे लाक्षणिक प्रयोग भी खूब किया है। निराला की कविता लय, सगीत–मय भाषा का अप्रतिम उदाहरण है। निराला ने कहीं–कही शब्दो के बल पर ऐसा भाव चित्र प्रस्तुत किया है कि वर्णनात्मक वस्तु मानो उपस्थित हो गयी हो। कुल मिलाकर हम कह सकते है कि भाषा पर निराला का पूर्ण अधिकार था। चाहे वह सामासिक प्रधान 'राम की शक्ति–पूजा' हो 'तुलसीदास' हो या 'बुद्ध के प्रति' आदि पर लिख रहे हो या सरल व्यवहारिक भाषा मे 'वह तोडती पत्थर', 'भिक्षुक' इत्यादि कविताए लिख रहे हो या अलकृत भाषा के रूप मे 'यमुना के प्रति', 'प्रेयसी' जैसी कविताओ को उद्धृत कर रहे हो। भाषा एव शब्दो की प्रवाहपूर्णता मे कही कोई अवरोध नही दिखता, कही–कही तो मानो भाषा इनकी चेरी सदृश्य दिखती है।

अध्याय-4

उपसंहार

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध मे निराला के काव्य मे उदात्त– तत्व की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति, विशेषकर लौजाइनस के उदात्त–तत्व सिद्धान्त के आधार पर, को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। यह विश्वास है कि इस दृष्टि से निराला काव्य का अध्ययन करने का यह प्रथम प्रयास है। इस शोध–प्रबन्ध मे कुल चार अध्याय है, प्रथम अध्याय मे उदात्त–प्रकृति और पाश्चात्य विद्वानो के मतो, विशेषकर लौजाइनस के उदात्त–सिद्धान्त का आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है। दूसरे अध्याय मे निराला की काव्य–विकास की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को कमवार प्रस्तुत किया गया है। तीसरे अध्याय मे निराला काव्य मे उदात्त–तत्व को लौजाइनस के उदात्त–सिद्धान्त के पॉचो प्रतिमानो पर कमवार साधने का प्रयास किया गया है, और इस चौथे अध्याय में पिछले तीनो अध्यायो का समाहार प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रथम अध्याय मे उदात्त–शब्द की व्युत्ति उसका स्वरूप और कोश ग्रन्थो के आधार पर 'उदात्त' शब्द का सामान्य अर्थ तथा उसके अग्रेजी पर्याय 'सब्लाइम' के अर्थ की विस्तृत विवेचना की गयी है। लौंजाइनस के नाम से जो ग्रन्थ सम्बद्ध है उसका नाम है 'पेरिहुप्सुस' जो 1954 मे प्रकाशित हुआ था। यह मूल रूप से यूनानी मे लिखी गयी है, उसका अग्रेजी अनुवाद 'सब्लाइम' के नाम से जाना जाता है तथा जिसका शाब्दिक अर्थ है–'उदात्त'। लौजाइनस के पहले जिन लोगो ने उदात्त का निरूपण किया था उनमे एक नाम 'केकिलियुस' था किन्तु उनमे लौजाइनस को अनेक त्रुटियॉ परिलक्षित हुई। किन्तु यह भी सच है कि 'पेरिहुप्सुस' की रचना मे केकिलियुस का बहुत बडा योगदान है 'पेरिहुप्सुस' लगभग साठ पृष्ठो की लघुकृति है जिसमे कुल छोटे–बडे 44 अध्याय है।

लौजाइनस से पूर्व कवि का मुख्य–कर्म पाठक या श्रोता को आनन्द तथा शिक्षा प्रदान करना तथा गद्य लेखक या वक्ता का मुख्य–कर्म अनुनयन समझा

जाता था। यदि 'होमर' काव्य की सफलता श्रोताओ को मुग्ध करने मे मानता था तो एरिस्थोफेनीस कवि का कर्तव्य पाठको को सुधारना मानता था। इसी प्रकार वक्ता या RHATONICIAN का गुण समझ जाता था– सतुलित भाषा सुव्यवस्थित तर्क द्वारा श्रोता के मस्तिष्क पर इस तरह छा जाना कि वह वक्ता की बात मान ले। इस प्रकार लौजाइनस से पूर्व साहित्यकार का कर्तव्य–कर्म समझा जाता था शिक्षा देना आह्लाद प्रदान करना और प्रत्यय उत्पन्न करना। लौजाइनस ने अनुभव किया कि इस सूत्र मे कुछ कमी है। क्योकि काव्य मे इन तीनो बातो के अलावा भी कुछ होता है। लौजाइनस काव्य के लिए भावोत्कर्ष को मूल तत्व, अति आवश्यक तत्व मानता था। उसने निर्णायक रूप से यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि काव्य या साहित्य का परम उद्देश्य चरर्मोल्लास प्रदान करना है। पाठक या श्रोता को वेदान्तर–शून्य बनाना है।

यद्यपि लौजाइनस ने उदात्त की कोई निश्चित परिभाषा नही दी थी लेकिन उसका मानना था कि 'उदात्तता' साहित्य के हर गुण मे महान है उसके अनुसार यही वह गुण है जो अन्य छोटी–छोटी त्रुटियो के बावजूद साहित्य को सच्चे अर्थों मे प्रवाहपूर्ण बना देता है। उसने व्यवहारिक और मनौवैज्ञानिक दोनो दृष्टियो से 'उदात्तता' को जॉचा परखा। उसने एक ओर जहॉ उदात्त के बहिरग तत्व की चर्चा की वही दूसरी ओर उसके अन्तरग तत्वो की ओर भी सकेत किया। उदात्ता के इस विवेचन मे उसने पॉच तत्वो को आवश्यक बताया, (1) महान धारणाओ या विचारो की क्षमता (2) भावावेग की तीव्रता (3) समुचित अलकार योजना (4) उत्कृष्ट भाषा (5) गरिमामय रचना–विधान।

महान धारणाओ या विचारो की क्षमता के सबध मे लौंजाइनस ने कहा कि उस कवि की कृति महान नहीं हो सकती जिसमे धारणाओ की क्षमता नही है, उदात्त गुण महान आत्माओ मे आश्रय पाता है क्षुद्र विचार वालो मे नही। धीर–गुरू गभीर प्रतिभावान व्यक्ति की वाणी से भव्यता का स्फुरण हो सकता है

कवि को महान बनने के लिए अपनी आत्मा मे उदात्त विचारो का पोषण करना चाहिए। क्योकि उदात्त महान आत्माओ की सच्ची प्रतिध्वनि है। जो आजीवन सकीर्ण–विचारो एव उद्देश्यो से घिरा रहता है, वह स्तुत्य एव अमर रचना नही कर सकता गभीर विचार वालो के शब्द भी महान होते है। विषय के महत्व तथा अनुक्रम की श्रेष्ठता से काव्य मे आनन्दातिरेक का तत्व आता है। जिसका तत्काल स्थायी प्रभाव होता है। महान कवियो की कृतियो के परायण से जो सस्कार प्राप्त होते है वे निश्चय ही श्रेष्ठ रचना के प्रणयन मे सहायक होते है।

भावावेग की तीव्रता के सबध मे लौजाइनस का मत है कि आवेग–उन्माद, उत्साह के उद्दाम वेग से फूट पडता है और एक प्रकार से वक्ता के शब्दो को विस्मय से भर देता है उसके यथास्थान व्यक्त होने से स्वर्ण जैसा औदात्य आता है वह अत्यन्त दुर्लभ है। भव्य आवेग के परिणामस्वरूप हमारी आत्मा स्वत उठकर मानो गर्व से उच्च अकाश मे विचरण करने लगती है तथा हर्ष और उल्लास से भर जाती है। वज्रपात का पलक झपकाये बिना सामना सभव है, पर भावावेग के प्रभाव से अविचल–अछूता बना रह पाना सम्भव नही। हमारा स्वभाव है कि हम छोटी–छोटी धाराओ की अपेक्षा महासागर से अधिक प्रभावित होते हैं। औदात्य मनुष्य को ईश्वर के ऐश्वर्य के समीप तक ले आता है। उल्लास–आनद देश–काल–निरपेक्ष होता है जो सदा सबको आनन्दित करता है वही औदात्य आवेग है। विस्मय–विमुग्ध करने वाला चमत्कारी भाव–परिवेश मानव में गरिमा को जन्म देता है। उदात्त उत्कृष्ट वही है, जो पाठक या श्रोता की चेतना को विमुग्ध या अभिभूत करे। आवेग दो प्रकार का बताया गया है– भव्य और निम्न। एक से आत्मा का उत्कर्ष होता है तो दूसरे से अपकर्ष। निम्न आवेग मे दया, शोक, भय आदि के भाव आते है। उदात्त सृजन मे वस्तुत. भव्य आवेग सहायक होता है।

समुचित अलकार योजना मे लौजाइनस ने मात्र चमत्कार प्रर्दशन के लिए अलकारो के प्रयोग को सही नही माना। उसके अनुसार यह अधिक उपयोगी तब होगा जब अर्थ को उत्कर्ष प्रदान करे और मात्र चमत्कृत न करके पाठक को आनन्द प्रदान करे। अलकार सर्वाधिक प्रभावशाली तब होता है जब इस बात पर ध्यान ही न जाय कि वह अलकार है। अयत्नज अलकार काव्य के प्रभाव को बढाते है और ये अलकार एक प्रकार से काव्यात्मा है। प्राकृतिक अभिव्यजना मे अलकारो का महत्वपूर्ण स्थान है, अत उन्हे कृत्रिम मानना उचित नही है। इनका प्रयोग प्रासगिक तथा परिस्थिति एव उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए यदि ऐसा नही है तो भव्य से भव्य अलकार भी कविता–कामिनी का श्रृगार न बनकर वे उसके लिए बोझ बन जाएगे।

उत्कृष्ट भाषा–प्रयोग के अन्तर्गत् लौजाइनस ने वर्ण विन्यास–शब्द चयन तथा रूपक आदि के प्रयोग पर बल दिया है उसके अनुसार उदात्त–विचारो की सर्जना मे साधारण शब्द–अनुपयोगी हो जाते है अत गरिमामयी भाषा आवश्यक हो जाती है। शब्दों के सौन्दर्य से ही शैली गरिमामयी बनती है। सुन्दर शब्द ही विचारो को अभिनव आलोक प्रदान करती है लौंजानइस के अनुसार भाषा का वैशिष्ट्य और चरमोत्कर्ष ही उदात्त है यही एक मात्र स्रोत है जिससे महान कवियो और इतिहासकारो को जीवन मे यश और प्रतिष्ठा मिलती है।

गरिमामयी रचना–विधान में लौजाइनस ने शब्द–विचार, घटना, कार्य, सौन्दर्य एव राग आदि के विविध रूपों के सामजस्य पर बल दिया और उसके अनुसार जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अगों की सुडौलता समानुपात एव सतुलन मे सौन्दर्य समाहित रहता है उसी प्रकार काव्य के विभिन्न अगो के औचित्य निर्वाह से वह हृदय मनोरम बन पाता है। कवि को चाहिए कि वह स्थान, रीति, अवसर, एव उदेश्य के प्रति पूर्ण स्वतन्त्र रहे। गरिमा के सम्पूर्ण तत्वो की सयुति से ही कृति महनीय उदात्त बनती है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के दूसरे अध्याय मे निराला के काव्य विकास की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को उनके प्रकाशन वर्ष के कम मे रखते हुए उनकी मूल सवेदना पर प्रकाश डाला गया है। निराला की सर्जना का प्रथम सोपान 'अनामिका' से शुरू होता है यद्यपि यह कवि का प्रथम काव्य सकलन था फिर भी अपने समकालीन कवियो की आरम्भिक कविताओ के कच्चेपन की तुलना मे 'अनामिका' के कवि की भाषिक सर्जनात्मकता स्पृहणीय है। 'परिमल' कवि की सर्जना का दूसरा सोपान है, जिसमें 'यमुना के प्रति' जैसी लक्षण प्रधान आलकारकि कविता के साथ–साथ स्वर–विस्तार एव नाद योजना से युक्त कविताएँ भी है। इसी सग्रह मे मुक्त–छन्द का उद्घोष करने वाली 'जूही की कली' जैसी कविताऐ भी है। कवि का अगला काव्य–संग्रह 'गीतिका' जो 1936 मे प्रकाशित हुआ था जिसे हम कविता के औदात्य और सगीत की माधुरी का समन्वय कह सकते है। यहा कविता को सगीत से जोडने का सफल प्रयास निराला जी ने किया है। सगीत और माधुरी तथा कविता का औदात्य मिलकर यहाँ एक अपूर्व रागात्मकता का सृजन करती है, कवि ने 'गीतिका' के गीतो मे गभीर चिन्तन, सास्कृतिक सन्दर्भो, विविध प्रणय–स्थितियो को अनुस्यूत करने की सफल चेष्टा की है। सगीतात्मकता को केन्द्र मे रखकर रचे गए इन गीतो मे कविता के अनुभव को और कविता के रचना–प्रकिया को आश्रत रखने की सजगता है।

अनामिका के द्वितीय संस्करण मे कवि के परिवर्तित मन स्थिति का पता चलता है इस संकलन में तत्सम् शब्दावली पर आधारित भाषिक सर्जनात्मकता के प्रति कवि का झुकाव और आत्म–विश्वास अधिक मुखारित हुआ है। 'प्रेयसी' और 'रेखा' जैसी लम्बी प्रणय कविताओ के साथ–साथ 'राम की शक्ति पूजा' और 'सरोज–स्मृति' जैसी क्लैसिकल और यथार्थ–परक शिल्प की दोहरे रचना–विधान की भाषिक सरचना से युक्त कविता भी है। 'राम की शक्ति–पूजा'

न केवल छायावादी रचनाओ मे बल्कि पूरे हिन्दी साहित्य मे एक मील का पत्थर साबित हुई। 'राम की शक्ति पूजा' जिसका लम्बा सुगठित रचना–विधान खडी बोली पर आधारित काव्य भाषा की अभूतपूर्ण–व्यजना क्षमता का उद्घाटन करती है, यह शुद्ध सामासिक शैली मे लिखी गयी है। इसी सकलन मे 'ठूॅठ' जैसी कविता भी है जो अपने रचना विधान मे बेजोड है। कवि ने 'ठूॅठ' जैसी मामूली वस्तु को प्रतीक के रूप मे ग्रहण करके उसके माध्यम से जीवन की उदासी और श्रीहीनता की गहरी व्यजना विकासित की है। इसके बाद 'तुलसीदास' और 'कुकुरमुत्ता' जैसी दो प्रबन्धात्मक कृतियॉ प्रकाश मे आयी। एक मे कवि ने छन्द की मौलिक प्रकृति और दूसरे मे मुक्तक का प्रयोग किया है। 'तुलसीदास' मे निराला ने भाषागत् अभिजात्य का प्रयोग किया है। यहॉ कवि ने सस्कृति के कोशवाची शब्दो का भरपूर प्रयोग किया है। 'कुकुरमुत्ता' के माध्यम से कवि ने एकदम साधारण ग्रामीण और कठोर शब्दो का भरा–पूरा आत्म–विश्वासी व्यक्तित्व सिरजा है और इस परम्परित धारणा को निर्मूल कर दिया है कि कविता की रचना के लिए सस्कारशील शब्द ही उपयुक्त होते है। यहॉ कवि ने उर्दू शब्दो और एकदम ग्रामीण शब्दो की ठेठ मुहावरेदानी की सर्वथा नवीन क्षमता मुखरित की है। इन दोनो प्रबन्धात्मक कृतियो के बाद कवि का जो नया काव्य सग्रह प्रकाश मे आया वह 'अणिमा' था। इसके बाद 'बेला', 'नये पत्ते', 'अर्चना', 'आराधना', 'गीत–गुज' और 'सान्ध्यकाकली' जैसे काव्य–सग्रह प्रकाश मे आए। 'नये–पत्ते' को सपाट–बयानी के नाते, और 'बेला' को कवि के भाषिक प्रयोग के नाते विशिष्ट प्रसिद्धि मिली। 'बेला' मे कवि ने उर्दू गजलो से प्रभावित होकर उन्हे हिन्दी गीतो मे ढालने की साहसिक कोशिश की है ।

कुल मिलाकर हम कह सकते है कि निराला के काव्य मे क्या नही है। साहित्य और सगीत का पूर्ण–सगम, भाषा की ओजस्विता, वीरत्व की भावना मानवीयकरण, मानव मूल्यो का उदात्तीकरण अर्थात् सब कुछ तो है। निराला

जैसा महान कवि युग–युगान्तर मे ही पैदा होता है। जो धरती के दु ख दर्द को पहचानता है और अपने को स्थूल से सूक्ष्म बना लेता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय मे निराला के काव्य का लौजाइनस के उदात्त–सिद्धान्त के आधार पर आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है। लौजाइनस के औदात्य सिद्धान्त के पॉचो प्रतिमानो को निराला काव्य मे ढूँढने का सफल प्रयास किया गया है। यद्यपि इस शोध–प्रबन्ध मे निराला काव्य के केवल एक पक्ष अर्थात् निराला काव्य के औदात्य तत्व पर ही विचार किया गया है। किन्तु औदात्य की प्रकृति और निराला के काव्य विकास को भी इस शोध–प्रबन्ध मे निरूपित किया गया है। ताकि पूरे शोध प्रबन्ध का एक कम बना रहे और निराला का पूरा का पूरा काव्य औदात्य की दृष्टि से सामने आ जाय।

सन्दर्भ ग्रन्थ : सूची

1 पाश्चात्य काव्य–शास्त्र देवेन्द्र नाथ शर्मा–मयूर पेपर वैक्स, नोयडा, छॅठा सस्करण–2000

2 पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त डॉ0 शान्ति स्वरूप गुप्त– अशोक प्रकाशन दिल्ली–1994।

3 भारतीय एव पाश्चात्य काव्य–सिद्धान्त डॉ0 गणपति चन्द गुप्त– लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 1989।

4 भारतीय काव्य शास्त्र डॉ0 निशा अग्रवाल– लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद 1996।

5 काव्य शास्त्र डॉ0 भगीरथ मिश्र– विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी–1975

6 रस अलकार और छन्द– डॉ0 जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, प्रो0 हरेन्द्र प्रताप सिन्हा– कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद।

7 भारतीय एव पाश्चात्य काव्यशास्त्र–डॉ0 कृण्ण देव शर्मा– विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1990।

8 साधारणी करण और सौन्दर्यानुभूति डॉ0 प्रेम कान्त टण्डन– लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

9 काव्य मे उदात्त–तत्व डॉ0 नगेन्द्र

10. काव्य में सौन्दर्य और उदात्त तत्व शिव बालक राय

11 उदात्त भावना एक विशलेषण डॉ0 प्रेम–सागर

12 पाश्चात्य काव्य–शास्त्र की परम्परा डॉ0 नगेन्द्र

13 हिन्दी काव्य–शास्त्र का इतिहास डॉ0 भगीरथ मिश्र

14 नाम–पथ निराला जन्म शताव्दी अक 1996।

15 हिन्दी साहित्य का इतिहास· आर्चाय रामचन्द्र शुक्ल–नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सम्वत् 2049।

16 निराला परिसवाद स0 प्रो0 मीरा श्रीवास्तव–लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।

17 कवि निराला आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी–लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद– 1997।

18 निराला स डॉ विश्वनाथ तिवारी– लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।

19 निराला आत्महन्ता आस्था दूधनाथ सिह– लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

20 निराला की कविताएँ और काव्य भाषा रेखा खरे– लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

21 निराला का गीत काव्य डॉ0 सन्ध्या सिह– लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

22 काव्य का देवता निराला विश्वम्भर 'मानव' –लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

23 प्रसाद–निराला–अज्ञेयः प्रो0 रामस्वरूप चतुर्वेदी–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

24 निराला (मूल्यांकन)· डॉ0 इन्द्र नाथ मदान– लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

25 कान्तिकारी कवि निराला डॉ0 बच्चन सिह–विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी–1992

26 सम्मेलन पत्रिका, (निराला जन्मशताब्दी अक). हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग–भाग–82, शक् 1919

27 राम की शक्ति–पूजा (निराला की कालजयी कृति)·– डॉ0, नगेन्द्र–नेशनल पब्लिसिंग हाऊस नई–दिल्ली 1999

28 निराला रचनावली (भाग–एक) नन्द किशोर नवल

29 निराला रचनावली (भाग–दो) नन्द किशोर नवल

30 निराला डॉ0 रामविलास शर्मा–राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 1996

31 हिन्दी साहित्य और सवेदना का विकास प्रो0 रामस्वरूप चतुर्वेदी लोकभारती प्रकाशन–1993

32 निराला और अपरा डॉ0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, विनोद, पुस्तक मन्दिर, आगरा सम्बत्– 2028

33 आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ0 बच्चन सिह लोकभारती प्रकाशन–1999, इलाहाबाद।

34 अनामिका (प्रथम) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

35 परिमल सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

36 गीतिका सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

37 अनामिका (द्वितीय) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

38. तुलसीदास सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

39 कुकुरमुत्ता. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

40 अणिमा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

41 बेला सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

42 नये–पत्ते सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

43 अर्चना सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

44 आराधना सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

45 गीत–कुज सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।

46 सान्ध्य काकली 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला'